प्रकाशक :
उदयराज उज्ज्वल व सीताराम लाळस

मूल्य : तीन रुपया

प्रथमवार १०००
आसौज वद ४ संवत २०११
तारीख १६ सितम्बर, १९५४

राजस्थानी व्याकरण

[लेखक]

अध्यापक सीताराम लालस, नैरवा

संशोधक

पंडित नित्यानंदजी शास्त्री (जोधपुर)

विद्यावाचस्पति, कविचक्रवर्ती, भूतपूर्व संस्कृत प्रोफेसर महावीर कॉलेज, बम्बई;

संस्कृत महाकाव्य 'रामचरिताब्धिरत्नम्'

व हिन्दी [खड़ी बोली] महाकाव्य 'रामकथा कल्पलता' के रचयिता]

राजस्थांनी री पुरांणी मूळ लिपी

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ

ओ औ अं आं

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल व

स ष श ह

क़ ढ़ ध़ ल़ व़ स़

* श्री रामः सर्वमङ्गलम् *

चाँद बावड़ी,

१५-४-५३.

श्री सीताराम जी लालस (चारण) के रचे हुए राजस्थानी (डिंगल) व्याकरण को मैंने देखा। यह व्याकरण सांगोपांग रचा गया है। मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूँढाड़ी, हाडौती आदि राजस्थान की सब भाषाओं के स्थूल व सूक्ष्म अन्तर को जाँचते हुए लेखक ने अभूतपूर्व परिश्रम कर साहित्य सेवा की है। स्थान-स्थान का गद्य साहित्य न मिलते हुए भी उन-उन प्रान्तों की बोली के जानकार मित्र विद्वानों के विचार-विमर्श से पूरी छानबीन कर इस व्याकरण का निर्माण करते हुए लेखक ने अपने इस कार्य की तल्लीनता का पूरा परिचय दिया है।

आशा है इस व्याकरण के लालसी इसका सदुपयोग करते हुए लालस महानुभाव के परिश्रम को पूर्णतया सफल करेंगे।

नित्यानन्द शास्त्री

॥ श्री ॥

राजस्थानी भाषा (डिंगल) का साहित्य वीर, शृङ्गार व शान्ति आदि रसों की खान तथा नीति का भण्डार है। यह सारा ही साहित्य विशेषकर चारण जाति की ही देन है।

बहुधा लोगों का खयाल है कि इस साहित्य में गद्य, कोष व व्याकरण का अभाव है परन्तु यह ठीक प्रतीत नहीं होता; क्योंकि गद्य साहित्य में अनेक वार्तायें जैसे 'रत्ना हमीर की वात', 'ढोला मारू की वात' आदि कथायें; कोषों में 'हेमी-नाम माला', 'हमीर नाम माला' आदि अनेक कोष प्रकाशित और अप्रकाशित विद्यमान हैं। इनके अतिरिक्त कुछ काल पूर्व जोधपुर के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री पण्डित सर सुखदेवप्रसादजी काक ने अमित द्रव्य व्यय करके ६०,००० शब्द का डिंगल का एक बृहत् कोष बनवाया था, जो उनके सुपुत्र श्री धर्मनारायणजी काक ने बीकानेर के 'शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट' की प्रार्थना पर उसे प्रकाशनार्थ दे दिया है। इसके अतिरिक्त हाल ही मे मास्टर सीतारामजी लालस ने एक लाख से अधिक शब्द इकट्ठे करके एक डिंगल का कोष तैयार किया है परन्तु द्रव्याभाव से यह अब तक अपूर्ण अवस्था मे ही पड़ा है।

इसी प्रकार उपर्युक्त लालस महोदय ने यह राजस्थानी व्याकरण भी लिखा है। मेरी सम्मति में यह इस भाषा का बड़ा

ही विशद् व सर्वाङ्गपूर्ण व्याकरण है और शीघ्र ही मुद्रित होकर विद्वानों के कर कमलों में उपस्थित होने जा रहा है।

श्री लालस महोदय के उपर्युक्त कोष व व्याकरण हमारे मित्र व राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान श्री उदयराजजी 'उज्ज्वल' के तत्त्वावधान व सहयोग से प्रस्तुत किये जाने के कारण इनकी प्रामाणिकता में सन्देह का स्थान ही नहीं रह जाता। हमें आशा ही नहीं परन्तु पूर्ण विश्वास है कि राजस्थानी भाषा प्रेमी इस व्याकरण को अपना कर अपनी गुण ग्राहकता का परिचय अवश्य देंगे जिससे श्री लालस व श्री 'उज्ज्वल' महोदय आगे भी राजस्थानी भाषा के भण्डार को उपयोगी रत्नों से भरते रहें।

विश्वेश्वरनाथ रेउ
महामहोपाध्याय
भूतपूर्व सुपरिण्टेण्डेण्ट,
पुरातत्त्व विभाग व सुमेर पब्लिक लाइब्रेरी
प्रोफेसर,
संस्कृत कालेज, जोधपुर.

ता० २८-४-५३.

|| श्री ||

भूमिका

जनपदीय साहित्य के पठन-पाठन और विकास का मूल्य भारत की वर्तमान परिस्थितियों में विशेष महत्त्व रखता है। डिंगल राजस्थान की साहित्यिक भाषा है और यह तो निर्विवाद ही है कि राजस्थान की अनेक बोलियों ने उसके रूप को सर्वसम्पन्न बना कर उसे साहित्यिक रूप दिया। डिंगल को समझने के लिये विद्वानों और प्रेमियों को उसके व्याकरण के ज्ञान की बड़ी आवश्यकता रही है और अब भी है। श्री सीतारामजी लालस ने इस आवश्यकता को ध्यान में रख कर डिंगल का व्याकरण बनाना प्रारम्भ किया। यह सन्तोष की बात है कि उनके अथक परिश्रम से व्याकरण का वर्त्तमान रूप सम्पन्न हुआ। व्याकरण की प्रणाली वैज्ञानिक है। उसमें पाठक की सामान्य आवश्यकतायें प्रायः सभी आ गई हैं। डिंगल में विभिन्न प्रयोगों की जो प्रथा चली आ रही है उसकी ओर भी लेखक ने ध्यान आकर्षित किया है। सन्तोष की बात यह है कि लेखक ने अपने निर्णयों में स्टेण्डर्ड रचनायें ही ली हैं जिनके कारण मतभेद का स्थान कम रह जाता है।

लालसजी का प्रयास प्रशंसनीय है। उपयुक्त समय पर इस व्याकरण का प्रकाशन डिंगल के अध्ययन में बड़ा सहायक होगा और एक बड़े अभाव की पूर्ति कर सकेगा।

एक बात अवश्य है। यदि पुस्तक का मुद्रण अधिक अच्छा होता तो सुन्दर बात होती।

इस रचना पर लालसजी का सभी विद्वानों और डिंगल प्रेमियों को आभारी होना चाहिए।

सोमनाथ गुप्त

अध्यक्ष, हिन्दी-संस्कृत विभाग,
श्री महाराज कुमार कॉलेज,
जोधपुर.

ता० २६-७-५४.

॥ श्री ॥

दो शब्द

वरतमांन पोकरण ठाकुर श्री भवानीसिहजी री आरथिक सहायता व श्री उदैराजजी 'ऊजल' रै सहयोग सूं सन् १६५१-५२ में म्हैं राजस्थानी कोस बणाय रह्यो हो (जो १ लाख १२ हजार शब्द लिखियां रै बाद समय रा हेर-फेर सूं अपूरण रह्ग्यो है।) जदै म्हने राजस्थानी व्याकरण बणावण रो भी विचार आयो। मैं उदैराजजी 'ऊजल' रै आगे इण री बात की, जो वांने पसन्द आई नै वां मनें आ बात कही कै व्याकरण जल्दी बणावणो सरू कर दो उणरो ऊपरलो खरचो व प्रकासण रो इन्तजाम करलेसां।

ठीक उण समै अगस्त, सन् १६५२ में लन्दन विस्वविद्यालय रा लेक्चरार, भाषा-विज्ञान रा प्रसिद्ध विद्वान, संसार री करीब ४० भाषाआं रा जांणता डाक्टर श्री W. S. Allen महोदय राजस्थांनी भाषा री विसेसतावां रो अध्ययन करण सारू जोधपुर आयोडा हा नै राजस्थांनी भाषा री जानकारी रै बावत उदैराजजी सूं घणां मिलता हा। उदैराजजी-एलन साब नै भासा-विज्ञान रो मोटो विद्वान जांण नै उण सूं व्याकरण रै बारे में सलाह नै सहायता लेण सारू कही कै सीताराम व्याकरण बणाय लावै तो वो आप देख नै उचित राय देवो। आ डाक्टर साब मंजूर कर लीनी। मैं इण पर एक हफ्ते में व्याकरण रो मूल ढांचो बणाय नै

डाक्टर साब ने उदैराजजी रै रूबरू दिखायो। डाक्टर साब ध्यान सूं पढनै इण पर पूरो विचार कियो नै संका समाधान रै बाद मने व्याकरण रा मूल सिद्धान्तां वगेरा रे बारे में पूर्ण सहायता दी। नै इण रै अलावा आपरे कनै सूं क्रिया विसेसण सम्बन्धी हाड़ोती मेवाड़ी भाषावां री कुछ सामग्री भी म्हनै दी। इण कारण म्हारो उत्साह बधियो नै मैं विगतवार व्याकरण बणावणी सरू कर दीनो इण तरै इण व्याकरण री जड़ जमावण वाला डाक्टर साहिब इज है। व्याकरण ज्यां ज्यां तैयार होती गई, लिखियोड़ा प्रकरण श्रीमान उदैराजजी नै देखावतो रयौ। वां राजस्थांनी नै उणरां अंग ढूढाड़ी, मेवाड़ी नै पश्चिमी राजस्थानी आदि रै प्रयोगां रो संसोधन कियो। इण तरै जद व्यारकण पूरी बण नै तैयार हुई तो वा पं० नित्यानन्दजी शास्त्री (जोधपुर) नै दिखाई गई। वां कृपा कर ने आपरो अमूल्य समय घणां दिन तक देय ने सब व्याकरण देखी नै विसेसकर व्याकरण रा नियम व सूत्रों रो संसोधन कियौ। नै सम्मति लिख दीवी।

महामहोपाध्याय पं० विश्वेश्वरनाथजी रेऊ (जोधपुर) भी व्याकरण नैं देखी नै आपरी सम्मति लिख दीनी। डा० सोमनाथजी गुप्त, अध्यक्ष, हिन्दी-सस्कृत विभाग (श्री महाराज कुमार कॉलेज, जोधपुर) भी कृपा कर नै इण री भूमिका लीखी है। व्याकरण बणावण में प्रारम्भ सूं लेय ने अन्त तक उदैराजजी 'ऊजल' तो पूरी देख-रेख व सहायता कीनी है।

ठा० माधोसिंहजी खीची (सोहनगढ़, पंजाब) साहित्य-सेवा रे वास्तै रू० ४०१) री सहायता इण पुस्तक सारू दीवी है इण उदारता रै वास्ते मैं वानै हृदय सूं धन्यवाद देवूं हूं।

ऊपर लिखिया सारा विद्वानां रो मै आभारी हूं, उणां ने तन, मन सू धन्यवाद देवूं हूं।

ओ म्हारो पेलो प्रयास है नै राजस्थांनी भाषा बड़ी वस्जित नै गहन है इण सारू इण में जो कोई त्रुटि रह गई नै जो विद्वान कृपा कर ने मने लिखसी तो वा दूसरा संस्करण में ठीक कर दी जासी।

ता० २५-८-१९५४.

मास्टर सीताराम लालस
मथानियां (जोधपुर)

विषय – सूची

प्रस्ठ संख्या

चौथौ अध्याय

पाचमौ अध्याय

छठौ अध्याय

सातमौ अध्याय

—※—

राजस्थांनी व्याकरण*

भासा नै व्याकरण

वाक्य शब्द नै आखर :

मिनख समझदार तथा विचारवांन प्रांणी है। वो आपरै मन रा विचार बोल नै अथवा लिख नै दूजां रै सांमनै प्रगट किया करै है नै दूजां रा विचार आप खुद सुणिया करै है। इण विचारां नै खुलासा सूं ठीक प्रगट करण सारू साधन भासा है। आ भासा

---

* राजस्थांन में घणा न्यारा न्यारा प्रांत तथा परगना है। उणा सब प्रांतां में जुदी जुदी बोली तो नहीं है। पण बोलण में थोड़ो थोड़ो फरक जरूर पड़ै है नै अैड़ो फरक घणकरो सगला देसां में है नै इण री साखी में राजस्थांन में तो एक जूनो दूहो भी प्रचलत है :

> चारै कोसां बोली पलटै, वन फल पलटै पाकां।
> बती छतीसां जोबन पलटै, लखण न पलटै लाखां॥

इण व्याकरण सूं उण राजस्थांनी रो अरथ समजणो चाइजै जिणमें राजस्थांन रा वडा वडा कवियां ग्रंथ लिखिया है जिका साहित री नै सिधा री घणा आदमियां री चलू भासा है।

मिनख रै अनेक विचारां रै मेल सूं बणै है नै हरअेक पूरा विचारां रै मांय केई तरै री मन री भावनाआं होवै है। हरेक पूरै विचार रो नांम वाक्य नै हरेक भावना नै सब्द कैवै है।

वाक्य रै मांय थोड़ै सूं थोड़ा दोय सब्द जरूरी होणा चाइजै, नई तो वाक्य रो पूरो खुलासो नई होय सकै।

ज्यां : रांम आयो। मोवन जावैला। थूं जा।। अै दोय दोय सब्दां रा वाक्य है। इणां सूं एक एक पूरो विचार प्रगट होवै है। जठै एक ही सब्द सूं पूरो अरथ निकलै उण जागा दूजोड़ो सब्द छिपियोड़ो होवै है। ज्यां : जै माताजी री = जै माता जी री है। मुजरो सा = मुजरो है सा। रांम राम = राम राम है सा। कांई काई = काई काई है।

आपरै मन रा विचार प्रगट करतां समै कोई तो समाचार अथवा संदेसो सुणावै अथवा किणी प्रकार रो सवाल पूछ अथवा किणीसूं प्रारथना करै है। इण सवाय कदेर तो मन री इच्छा अथवा अचंभो भी प्रगट करणो पड़ै है। इण तरै सूं मिनख आपरै मन रा विचार केई प्रकार सूं प्रगट करै है जिण सूं विचार केई रूप धारण कर लेवै है, इण मुजब वाक्य में केई भेद होवै है। अरथ रै मुजब वाक्य खास तरै सूं पाच प्रकार रा होवै है :

क. विधानार्थक वाक्य : इण वाक्य सूं एक दूसरै नै किणी वातरी मंजूरी अथवा मनाई री सूचना देवै है। ज्यां : आंबो मीठो है। पिरसूं मे वूठो। म्हारो भाई लोहावट सूं आवैला। इस्कूल में कोई कोनी।

ख. प्रश्नार्थक वाक्य : इण वाक्य सूं सवाल अथवा प्रश्न पूछियो जावै है। ज्यां : परभू दांन कठै है ? कांई थूं म्हारै साथे हालैला ? थूं कद आयो ?

ग. आज्ञार्थक वाक्य : इण वाक्य सूं हुकम, राय, प्रारथना रो ग्यांन होवै है। ज्यां : पढो। विराजो। म्हनै जावण दो।

घ. इच्छा बोधक वाक्य : इण वाक्य सूं आसीस अथवा दुरासीस रो ग्यांन होवै है। ज्यां : हे भगवान मे बेगो वरसावै। ईसवर सगलां रो भलो करै। दुस्टां रो नास होवै।

ङ. विस्मयादि बोधक वाक्य : इण वाक्य सूं इचरज, अचूंबो हरस, दुख आद भाव प्रगट होवै है। ज्यां : आ सिवी कैड़ी फूटरी है। आंपे कितरा दिनां सूं मिल्या हां।

वाक्यां रा मतलब वाला खंड अथवा टुकड़ा करण सूं सब्द मिलै है। जो सब्दां रा भी खंड अथवा टुकड़ा करां तो आंपांने अेक नैनी सूं नैनी धुनी मिलैला। ज्यां : हालौ=ह+आ+ल+ओ। सोवन=स+ओ+व+न। हरेक=ह+र+ए+क। बारीक सूं बारीक अथवा नैनो सूं नैनो धुनी ने आखर वैवै है। अेक अथवा अेक सूं घणा सारथक आखर रा मेल सूं सब्द वणै है। ज्यां : फूठरो=फू+ठ+रो। इणी तरै सूं घर, मारग, वाट, आद। इण तरै सूं भासा वाक्यां सूं, वाक्य सब्दां सूं नै सब्द आखरां सूं वणै है।

किणी भी भासा री पढ़ाई अथवा बोध करण सारू मिनख ने उण भासा रा प्रतख सब्दां रो नै वाक्यां रै रूपां तथा अरथां रो ग्यांन करणो चाईजै।

अभ्यास

नीचे लखियोड़ा वाक्या रा सब्दां नै न्यारा न्यारा लिखो :

गाया चरै है। घोड़ो दौड़े है। थूं कद आयो? थारो भाई कठै है? पोथी पढो। सावल बैठो। भगवान थारो भलो करै।

नीचे लिखियोड़ा सब्दां रा वाक्या में प्रयोग करो नै सब्दां सूं आखरां नै न्यारा करो :

दूध । दई । बाजरी । जवार । बेकलू । वायरो ।

नीचे लिखियोड़ा आखरा सूं सब्द नै वाक्य बणावो .

क, न, प, व, ल़, इ, अ, ल़, म, ठ ।

व्याकरण नै उणरा भाग .

किणी देस री अथवा प्रांत री भासा समजण सारू उण देस तथा भासा रा आखर, सब्द नै वाक्यां रै रूपां रो तथा अरथां रो ग्यांन प्राप्त करणो घणो जरूरी होवै है। आ सारी वात उण देस अथवा प्रांत री व्याकरण सूं सोरी होय सकै है।

'व्याकरण' अेक प्रकार री विद्या है जिणसूं भासा, आखर, सब्द नै वाक्यां री सुध भासा रा नीयम सिखाया जावै है इण वास्ते हरेक देस अथवा प्रांत री भासा री व्याकरण होणी जरूरी है।

भासा रा खंड, आखर, सब्द नै वाक्य न्यारा न्यारा छांण वींण करण सारू व्याकरण रा तीन भाग होवै है।

१. वरण (वर्ण) विचार, २. शब्द साधन; ३. वाक्य विन्यास।

१. वरण विचार : व्याकरण रो वो भाग होवै है जिणमें आखरां री वणावट, डौल, उच्चारण नै उणां रै मिलण री रीत बताई जावै है।

२. सब्द साधन : व्यांकरण रै उण भाग रो नांम है जिण में सब्दां रा भेद हेर फेर [रूपान्तर] नै उणां री वणावट रा नीयम बताया जावै है।

३. वाक्य विन्यास व्याकरण रै उण भाग रो नांम है जिण में सब्दां रो आपस रो सम्बन्ध ने उण सूं वाक्य बणा-वण रा नीयम बताया जावै है ।

दूसरो अध्याय

वरण माला

किणी भासा रै आखरां रै समूह ने वरण माला कैवै है। राजस्थांनी वरण माला में पचास (५०) आखर होवै है। जिणां रा दोय भेद गिणीजै है। पैलै भेद नै बिलटी स्वर नै दूजै नै कक्को व्यंजन कैवै है।

बिलटी अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः। औ आखर बिलटी स्वर कहीजै है, क्यांके इणां रो उच्चारण सांस रै जरिये सुतंतर होवै है।

कक्को क ष ख ग घ ङ (ड़) च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ढ ध़ ल व़ स़। औ [३८] आखर कक्को कईजै है। इणां रा उच्चारण सुतंतरता सूं नईं हो सकै है। इणां रा उच्चारण में सांस रै साथै बिलटी रा किणी न किणी आखर री जरूरत रै मुजब मदद लेणी पड़ै है।

जद आंपां नै क ष [ख] अथवा स आद किणी आखर रो उच्चारण करणो पड़ै है तद सांस नै बारे निकालण रै पैला गलै नै दबावणो अथवा संकोड़नो पड़ै है नै बाद में सांस रै साथे अ उच्चारण करणो पड़ै है। इणी प्रकार म ञ ण न इणां में किणी

आखर रो उच्चारण करणो पड़ै है जद यां आखरां रै उच्चारण स्थांन रै साथै सांस नाक सूं निकालणो पड़ै है।

जद किणी विलटी रा आखर रो उच्चारण नाक सूं होवै है तद उणरै ऊपर मींडी [बिंदु], लागै है नै उण नै अनुसार कैवै है। राजस्थानी में अब चंद्र बिंदु रो प्रियोग भी होणो सरु हो गयो है। राज-स्थानी में हल चिन्ह रो भी प्रियोग होवै है।

कक्का रा नीचे लिखियोड़ा आखर सब्दां रै पैली नहीं आवै है : ङ [ड़] ञ, ण, ळ।

किणी आखर रै नांम रै साथै ओ, इयो, कार सब्द जोड़ण सूं उण आखर रो बोध समजियो जावै है। ज्यां : कक्को, ककियो, ककार। खखो, खखियो, खकार, आद।

नोट : ह आखर में ओ तथा इयो आद रो जोड़ नई लागै है परंत ह आखर नै सुतंतरता सूं हाबोलो नाम सूं उच्चारण कियो जावै है।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा सब्दां में बिलटी नै कक्का रा आखर बताओ :

आंबो, दाड़म, नींबू, ऊंठ, आंच।

बिलटी रा भेद : उत्पति रै मुजब बिलटी रै आखरां रा दोय भेद होवै है :

नोट : अ मात्रा रा आखर नै कवलौ [किवलौ] आखर बोलै है।

१. मूल बिलटी रा आखर : अ, इ, उ

२ दीरघ बिलटी रा आखर जो नं० १ रा आखरां रै मेल सूं

वणै है : अ+अ=आ, इ+इ=ई, उ+उ=ऊ। अं+अ=आ।

प्रथम भेद रा मूल बिलटी रा आखरां रै उच्चारण में थोड़ो समै लागै है इण कारण सूं अैड़ा बिलटी रा आखरां नै छोटा बिलटी रा आखर कैवै है नै छोटा बिलटी रा मेल सूं बणियोड़ा आखरां रै उच्चारण में छोटा बिलटी रा आखरां सूं दूणो समै लागै है इण कारण सू अैड़ा मेल वाला आखरां नै दीरघ बिलटी रा आखर कैवै है।

अै, अै, ओ, औ संयुक्त आखर कैवीजै है क्यांकै औ दोय भिन्न स्वरां रै मेल सूं बणिया है। इणां रो उच्चारण भी दीरघ बिलटी रा आखरां रै समान है। संयुक्त बिलटी रा आखरां रै मिलण रो ढंग इण मुजब होवै है :

अ+इ, ई=अे [ए], अ+अे [ए]=अै [ऐ], अ+उ, ऊ=ओ, अ+ओ=औ।

अ नै आ समान सुर सवर्ण कईजै है क्यांके इणां दोनां रा उच्चारण अेक इज तरै सूं होवै है। इणी प्रकार सूं इ नै ई उ नै ऊ समजणो चाईजै। अे नै अै, ओ औ औ समान सुर नईं है क्यांके इणां आखरां रो रूप न्यारा न्यारा बिलटी रा आखरां रा मेल सूं वणै है।

इणी प्रकार अ नै इ, ई, अ नै उ, ऊ, अथवा इ, ई नै उ, ऊ आपस मे भिन्न जात रा असवर्ण सुर है।

जिणां बिलटी रा आखरां रो उचारण नाक सूं होवै उणां नै सानुनासिक नै जिणां रो उच्चारण सांस रै जरिये होवै है उणां नै अणुनासिक कैवै है। ज्यां : आंख, इंडो, ऊंठ, आग, आडग, ऊतर।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा सब्दा में बिलटी रा आखरां रा भेद बतावो।

आंवौ , ईस , अंधारो , उजालो , अैड़ा, उतौ ।

नीचे लिखियोड़ा बिलटी रा आखरां में कुण कुण सा अेक जातरा अथवा भिन्न जातरा आखर है :

अ , आ , अे , इ , उ , ओ , ऊ , औ ।

कक्का रा भेद

ककिया सूं करनै ममातांई पचीस आखर कक्का रा अेड़ आखर है जिणां नै सपरस [स्पर्श] आखर कैवै है क्यांके उणां रै उच्चारण मे जीभ रो कोई न कोई भाग मूंढा रै दूसरै भाग नै सपरस करै है।

इणां सपरस आखरां रा पांच भाग किया गया है नै हरेक रो नांम पैला आखर रै नांम सूं बोली जै है जो वरग कैवीजै है। वे वरग नीचे मुजब है :

क , ख [ख] , ग , घ , ङ [ङ] क वरग च , छ , ज , झ , ञ, चवरग

ट , ठ , ड , ढ , ण ट वरग , त , थ , द , ध , न , त वरग ,

प , फ , ब , भ , म , प वरग

य , र , ल , व नै अन्तस्थ कक्का रा आखर व्यंजन कैवै है क्यांके इणां रो उच्चारण बिलटी ने कक्का रै आखरां रै बीचरो है।

श , ष , स , ह अै आखर ऊस्म कक्का रा आखर कैवीजै है क्यांके इणां रै उच्चारण में कंठ में अैक खास प्रकार री गुद गुदी अथवा खाजसी उत्पन्न होवै है।

हरेक वरग रो पैलो दूजो आखर श , ष , स , अघोष आखर कैवीजै है क्यांके इणां रा उच्चारण में अेक प्रकार री खरखराट मालुम पड़ै है नै इणां नै कठोर आखर भी बोलै है।

हरेक वरग रा लारला तीन आखर अंतस्थ नै ह घोष आखर कैवीजै है क्यांके इणां रै उच्चारण में अेक प्रकार री झणझणाट सुणीजै है नै इणां आखरां नै कोमल् आखर भी कैवै है :

अघोष : क , ष [ख], च, छ , ट , ठ , त, थ, प, फ , श, ष, स

घोष : ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व , ह।

हरेक वरग रा दूसरा आखर रै सिवाय सारा आखर नै अंतस्थ अल्पप्राण कैवीजे है। क्यांके इणां रै उच्चारण में सास रो परमांण साधारण रैवै है। बाकी रा सारा कक्का रा आखर महाप्रांण कैवीजै है। इणां रो उच्चारण में सास रो प्रमांण घणो निकल़ै है ।

नोट : बिलटी रा सारा आखर अल्पप्रांण नै घोष होवै है।

क वरग रै सिवाय हरेक वरग रो पांचमों आखर ञ , ण , न , म , अनुनासिक कक्का रा आखर कैवै है क्यांके इणां रो उच्चारण करती वेला सास नै नाक सूं निकाल़णो पड़ै है।

नोट : राजस्थांनी भासा रै मांय अनुस्वार री मींडीज लाग है।

ज्यां : गंगा , मगल़ , कंगल़ ।

ढ , घ़ , व़ , अे राजस्थांनी रा विसेस आखर घोष है।

स़ ओ आखर अघोष नै संसक्रत रै विसरग सूं भी मिल़तो जुल़तो होवै है।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा सब्दां में कक्का रा भेद बतावो :

लैर, तरंग, हिलोल, अमर, अचपलौ, छींया, नालौ, उदियास।

सयुक्त आखर

कक्का रा आखरां रो उच्चारण विलटी रा आखरां री मदत रै बिना हो नईं सकै है। इण कारण सूं विलटी रा आखर कक्का रा आखरां सूं मिलाया जावै है। कक्का रा आखरां मे विलटी रा आखर मिलण सूं उण रो रूप बदल जावै है। जिण नैं मात्रा अथवा बारखड़ी कैवै है। जिणां रो रूप नीचे मुजब होवै है :

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, आं

ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं ां

अ री अलग मात्रा नईं होवै है, इण बिना कक्का रा आखरां रो उच्चारण नईं हो सकै है। कक्का रा आखरां रै मांय विलटी रा आखरां नै मिलावण रो ढंग नीचे मुजब है :

क, का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ, कं, कां

कक्का रा आखरां री मिलावट रो ढंग : जद कद कक्का रा किणी आखर में विलटी रो आखर नईं रैवै तो वो आखर आप रै अगलै आखर में इण मुजब मिल जावै है। ज्यां: म + क् + की = मक्की। व + क् + क + र = वक्कर।

अगाड़ी सीधी लकीर वाला आखर रो दूसरा आखर सूं मेल होण सूं वा सीधी लकीर हटाणी पड़ै है। ज्यां :

ख् + या + ल = ख्याल। म् + यां + न = म्यांन, त् + या + र = त्यार।

ङ, ट, ठ, ड, ढ नै ह औ आखर दूजां आखरां सूं मिलै, जद पूरा लिखीजिया करै है। ज्यां :

प+ट+टी=पट्टी, गु+म्+मी=गुम्मी, ची+न्+हो = चीन्हो।

सीधी लकीर वाळा आखरां रै साथै र आखर रो मेळ :

म्+र=म्र, म्रग, न्+र=न्र, न्रप, ज्+र ज्र, वज्र।

राजस्थांनी में इण आखरां रै साथै र रो मेल नहीं होवै है : ङ [ड़] न, ट, ठ, ड, ढ, ण, य, र। नोटः—अब संसकत रै मुजब – ट, ठ, ड, ढ में [्] चिन्ह लगायो जावै है। ज्यां : महारास्ट्र।

राजस्थांनी भासा में रेफ नईं होवै है। जद कद रेफ रो कांम पड़ै तद र पूरो लिखियो जावै है अथवा रेफ आप सूं पैली रा आखर में मिलायो जाव है। ज्यां : करम [कर्म] अथवा क्रम, धरम [धर्म] अथवा ध्रम।

राजस्थांनी में र न य रो मेळ इण मुजब होवै है : मारयौ, धारयौ नै चारयौ।

य आखर रो मेळ दूजा आखरां सूं राजस्थानी में इण मुजब होवै है : क्य, ग्य, ल्य, त्य, म्य, नै इण नै बिलोवड़ी भी कैवै है।

कक्का रा केई संयुक्त आखर दोय दोय प्रकार सूं लिखीजै है। ज्यां : क्+क=क्क नै क्क। ल्+ल = ल्ल नै ल्ल।

जद कद भी कक्का रो कोई आखर ह में मिळै तो मिळण वाळो आखर हलंत होवै है नै ह कदेई हलंत ही होवै है। ज्यां : म्है=म्+है। दीन्हौ=दी+न्+हौ।

दोय महाप्रांण कक्का रा आखरां रो उच्चारण अेक साथै नईं होय सकै इण कारण सूं संयुक्त आखरां में पैलो आखर अल्पप्रांण ईज राखियो जावै है। ज्यां : गट्ठौ, रक्खौ।

संयुक्त आखरां में विलटी री मातरा लगाई जावै है। ज्यां : ग्ग, ग्गा, ग्गि, ग्गी, ग्गु, ग्गू, ग्गे, ग्गै, ग्गो, ग्गौ, ग्गं, ग्गां।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा सब्दां में विलटी नै कक्का रा आखर न्यारा न्यारा लिखो :

रींछ, किसन, कवि, भाठो, कुण।

नीचे लिखियोड़ा सब्दां में सयुक्त कक्का रा आखरां रा खंड करो :

वप्फू, वग्ग, तक्ख, त्रप्प, थप्पे, उथप्प।

आखरां रा उच्चारण स्थांन

आखरां रै उच्चारण रा खास पांच स्थांन है। जिणां रा नाम इण मुजब है :

१. कंठ २. तालवो ३. मुरधनी ४. दांत ५. होठ इणां रो नकसो नीचे मुजब है :

आखर	उच्चारण स्थांन	नांम
अ, आ, ह	कंठ	कंठाखर
इ, ई, चवरग	तालवौ	तालवी
य, श	तालवौ	तालवी
ट वरग	मुरधनी	मुरधन
र ष, ळ	मुरधनी	मुरधन

तवरग	जिव्हा मूल	जिव्हा मूलीय
तवरग	दंत	दंती
ल , स	दंत	दंती
उ , ऊ , पवरग	होठ	होठ
ञ , ण , न , म	नाक	नासिक
ऎ, ऐ	कंठ तालवौ	कंठ तालवी
ऒ, औ	कठ होठ	कठ होठ
व	दांत होठ	दांत होठ

अ , आ नै ह इणां नै कंठ आखर बोलै है क्यांके इणां रो उच्चारण कंठ सूं होवै है।

कवरग रा प्रथम च्यार आखर -- क ख [ख] ग नै घ इणां रो उच्चारण जीभ री जड़ सूं होवै है सो इणां नै जिभा मूल [जिह्वा-मूलीय] बोलै है।

चवरग इ, ई, य, श -- इणां आखरां रो उच्चारण तालवा सूं होवै है सो इणां नै तालवी [तालव्य] कैवै है।

टवरग र ल -- इणां आखरां नै मुरधनी [मूर्धन्य] कैवै है। क्यांके इणां रो उच्चारण मुरधा सूं होवै है ।

तवरग ल , स -- इणां आखरां नै दंती [दंत्य] कैवै है। क्यांके इणां रो उच्चारण दांतां सूं होवै है।

पवरग उ , ऊ -- होठ आखर कैवीजै है । क्यांके इणां रो उच्चारण होठां सूं होवै है।

ऐ, औ-आखरां नैं कंठ तालवी कैवै है। क्यांके इणां रो उच्चारण कंठ नै तालवा दोनां सूं होवै है।

व दांत होठ [दंतोष्ठ्य] कैवै है क्यांके इण रो उच्चारण दांत होठ दोनां सूं होवै है।

ऊपरला आखरां रै सवाय राजस्थानी में औ आखर विसेस होवै है: ड [ड़] ढ, ध, व, स।

ड [ड़] ढ इणां आखरां रो उच्चारण संसक्रत रै समान दाय सपरस [द्विस्पृष्ट] है, इणां आखरां रा उच्चारण में जीभ रा अगल भाग न मोड़नै तालवा रा ऊपरला भाग मे सपरस करणी पड़ै है।

ध़ औ आखर द न ध री वीचली आवाज सूं वोलीजै है। ज्य धा़व [पशु] धा़वौ।

व़ औ आखर म नै व री वीचरी आवाज सूं बोलीजै है। ज्यां: व़ात, व़गत।

स़ इण आखर रो उच्चारण कठेई तो संसक्रत रै विसरग रै समान धुनि रहित [अघोषवत] नै कठेई स तथा ह रै बीचरी धुनी सूं होवै है।

तीसरो अध्याय

सब्द भेद :

१ पीली गाय चारो खावै है।

२ थूं उण गाय नै झट पकड़।

३ गाय रै कनै अेक कुत्तो हमार आयो है।

४ कुत्तै उण नै देखी होवैला।

५ कांई थैं कुत्तै री तरफ देखियो।

६ भगवान गाय नै पापी कुत्ता सूं बचावै।

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां रै मांय दोय सूं जादा सब्दां रो मेल है अरथात अै वाक्य दोय सूं अधिक सब्दां रै मेल सूं बणिया है। इणां में गाय, चारो, कुत्तो, नै भगवान सब्द आया है। गाय एक जीवधारी रो नांम है, चारो अेक पदारथ रो नांम है, कुत्तो अेक जिनावर है, भगवान संसार रै करता रो नाम है। वुसत अथवा पदारथ नांम बतावण वाला सब्द नै संग्या [संज्ञा] कैवै है।

संग्या रै सिवाय अैड़ा सब्द भी वाक्यां रै मांय आया है जिके घणा जरूरी है। दूसरा वाक्य में थूं नै उण पांचमा वाक्य में थैं सब्द आया है। जिके सुणणै वाला मिनख रै नांम नै गाय संग्या रै बदलै आया है। अै सब्द संग्या रै बदलै आया है इण कारण सूं इणां नै सरवनांम कैवै है।

पैला वाक्य रै मांय गाय संग्या रै साथै पीली सब्द आयो है, अौ पीली सब्द गाय सब्द री कुछ विसेसता बतावै है, इणी प्रकार

कुत्ता रै साथ अेक सब्द आयो है, औ सब्द संग्या री विसेसता बतावै है इण कारण सूं पीली नै अेक सब्द विसेसण है।

संग्या, सरवनांम नै विसेसण रै सिवाय. औड़ा सब्द भी वाक्यां रै मांय आया है जिके घणा जरूरी है नै जिणां रै जरिये आंपे उणां चीजां रै बावत कुछ कैवां हां। ऊपरला वाक्यां रै मांय खावै है सब्द रै जरिये गाय रै बावत कुछ कैवां हां। आयो है, देखियो वैला इणां सब्दां रै जरिये कुत्ता रै बावत कुछ कैवां हां, इणीज तरै बचावै सब्द भगवांन रै बावत कैवां हां, किणी पदारथ अथवा वुसत रै बावत विधान करणै वालै सब्द नै क्रिया कैवै है, इण कारण सूं खावै है, आयो है, होवैला, बचावै आदि सब्द क्रिया है। देखियो नै देखी सब्द भी क्रिया है क्यांके औ सब्द सुणणवाला मिनख रै बावत विधांन करै है।

दूसरा वाक्य में पकड़ सब्द रै साथ झट सब्द आयो है, तीसरा वाक्य में आयो है सब्द रै साथै हमार सब्द आयो है। औ सब्द क्रिया रै अरथ में कुछ विसेसता बतावै है। क्रिया रै साथै विसेसता बतावण वालै सब्द नै क्रियाविसेसण कैवै है।

ऊपरला वाक्यां मे हमार नै झट क्रिया विसेसण है। जिण प्रकार रो संबंध विसेसण रो संग्या सूं है उणी प्रकार रो संबंध क्रियाविसेसण रो क्रिया सूं है।

तीसरै वाक्य रै मांय कनै सब्द आयो है जिको क्रिया री विसेसता बतावै है पण वो सब्द क्रिया रै साथ गाय सब्द रो संबंध भी है इण कारण सूं उण नै संबंध बोधक अव्यय कैवै है।

१. तेजो आयो नै भीखो गयो ।

२. तेजो आयो पण भीखो नईं आयो ।

३. जे तेजो आतो तो भीखो जातो ।

ऊपर लिखियोड़ा उदाहरण में दोय दोय वाक्य अेक साथ आया है नै उणां रै साथै उणां ने मिलावण वाला भी सब्द है। नै, पण, तो, जे, ऊपरे वाला सब्दां नै समुच्चय बोधक अव्यय कैवै है।

१. अजो ! औ कैड़ो फूटरो छोकरो है ।

२. अरे ! जीव दोरो घणो है ।

३. ऊं हूं ! कैडो सूगलो छोकरो है ।

ऊपरला वाक्यां रै मांय अजो, अरे, ऊं हूं सब्द केवल इचरज, दुख आद मन री भावना प्रगट करै है इण कारण सूं अैड़ा सब्दां नै विस्मयादि बोधक अव्यय कैवै है ।

संग्या [संज्ञा] रा भेद

१. जोधपुर मोटो सैर है ।

२. आडोवलो ऊँचो भाखर है ।

३. लूणी राजस्थांन री मसूर नदी है ।

४. वीर दुरगदास सांमधरमी राजपूत हो ।

५. भलाई नै बहादुरी रो किणी रो ठेको नईं है ।

१

ऊपरला वाक्यां रे मांय छोटे आखरां वाला सब्द संग्या है। क्यांके किणी जीवधारी पदारथ व गुण रो नांम है। इणां में

जोधपुर, आडोवलो, लूणी, राजस्थान, नै दुरगदास अैड़ा नाम है जिका कोई खास प्राणी, पदारथ नै स्थान रो नांम प्रगट करे है। जोधपुर अेक खास सैर रो नांम है। आडोवलो भाखर रो नांम है। इणी तरै लूणी अेक नदी रो नांम है। नै राजस्थान भी एक खास प्रांत रो नांम है। इणी तरै सूं दुरगदास भी अेक खास वीर रो नांम है। जिण संग्या सूं अेक ही खास डील, जीवधारी, पदारथ नै स्थांन रो नांम प्रगट होवै उण शब्द ने व्यक्ति वाचक संज्ञा कवे है।

२

ऊपर लिखियोड़ा छोटे आखरां वाला सब्द सैर, भाखर, नदी, रजपूत संग्या [संज्ञा] है। पण इण संग्याआं सूं किणी खास जीवधारी, पदारथ, ठौड़ नै डील रो वोध नईं हुवै है। ज्यूं सैर कैणे सूं जयपुर, जैसलमेर, उदैपुर, बीकानेर आदि आंम स्थांनां रो नांम प्रगट करै है। इणी तरै सूं नदी भी आंम सब्द है। जिकण संग्या सूं अेक जात रो सैंग पदारथां जीव धारियां, स्थांनां रो वोध हुवै उण ने जाति वाचक संज्ञा कैवै है।

३

ऊपर लिखियोड़े पांचमै वाक्य में भलाई नै 'बहादुरी किणी जीवधारी ने पदारथ रो नांम नईं है। पण गुण अथवा अवस्था रो नांम है। जीवधारी नै पदारथ रै समांन गुण ने अवस्था भी अेक प्रकार री वुसत है। जिका प्राणियां में नै पदारथां में पाई जावै है। इण रो वोध इंद्रियां नै मन दोनां सूं होवै है। गुण,

अवस्था नै काम रा नांम प्रगट करण वाळी संग्या ने भाववाचक संग्या कैवै है।

भाव वाचक संग्या बणावण रा नियम

भाव वाचक संग्या, जाति वाचक संग्या, विसेसण, क्रिया नै अव्यय सब्दां सूं बणै है।

जाति वाचक सूं भाववाचक संग्या

मिंतर	मिंतरता, मित्राई
टाबर	टाबरपणो
मिनख	मिनखपणो, मिनखाचारो

विसेसण सूं भाव वाचक संग्या

बड़ो	बड़ाई
फूटरो	फूटरापणो, फूटरापो
सुखी	सुख
कूड़्यो	कूड़

क्रिया सूं भाववाचक संग्या

हालणो	हाली
दोड़णो	दौड़
हसणो	हसी, हसो
चालणो	चाल

अव्यय सूं भाववाचक संग्या

विरथा	विरथापणो
मिथ्या	मिथ्यापणो

विसेसण सब्दां रे ओ रो लोप करने आई प्रत्यय लगावण सूं भाव वाचक संग्या बणै है।

विसेसण	भाव वाचक संग्या
मोटो	मोटाई
भलो	भलाई
बुरो	बुराई
खोटो	खोटाई

जातिवाचक संग्या, विसेसण सब्दां रे अगाड़ी पण, पणो लगावण सूं भाव वाचक संग्या बणै है।

जातिवाचक संग्या सूं भाव वाचक संग्या

बालक	बालकपणो , बालकपण
छोरो	छोरापणो , छोरापण
मिनख	मिनखपणो, मिनखपण
मीठो	मीठापणो , मीठापण
चोखो	चोखापणो , चोखापण
आछो	आछापणो , आछापण
खोटो	खोटापणो , खोटापण
झूठो	झूठापणो , झूठापण
भलो	भलापणो , भलपण

कठेई कठेई धातु सब्दां रे अगाड़ी आवट प्रत्यय लगावण सूं भाव वाचक संग्या बणै है।

क्रिया सब्द	धातु	भाव वाचक संग्या
वणाणो	वणा	वणावट
सजणो	सज	सजावट
लिखणो	लिख	लिखावट

कठेई कठेई धातु सब्दां रै अगाड़ी आई प्रत्यय लगावण सूं भाव वाचक संग्या वणै है।

क्रिया सब्द	धातु	भाव वाचक संग्या
घड़णो	घड़	घड़ाई
पढणो	पढ	पढाई
लड़णो	लड़	लड़ाई
तोड़णो	तोड़	तोड़ाई
जड़णो	जड़	जड़ाई

कठेई कठेई विसेसण सब्दां रे अगाड़ी पो प्रत्यय लगावण सूं भाव वाचक संग्या वणै है।

विसेसण सब्द	भाव वाचक संग्या
बूढो	बूढापो
गरढो	गरढापो
पूजा	पूजापो
गोली	गोलीपो
बेली	बेलीपो
राजी	राजीपो

कठेई कठेई विसेसण सब्दां रे अगाड़ी स प्रत्यय लगावण सूं भाव वाचक संग्या बणै है।

विसेसण	भाव वाचक संग्या
मीठो	मीठास
खारो	खारास
चरको	चरकास
फरको	फरकास

कठेई कठेई जाति वाचक रे अगाड़ी चारो प्रत्यय लग वण सूं भाव वाचक संग्या बणे है। ज्यां :

जाति वाचक संग्या	भाव वाचक संग्या
मिनख	मिनखाचारो
भाई	भाईचारो
गिनायत	गिनायतचारो

कठेई कठेई सब्दां रे अगाड़ी यप, याप ने प प्रत्यय लगावण सूं भाव वाचक संग्या बणे है :

सब्द	भाव वाचक संग्या
धणी	धणीयप , धणीयाप
मिलणो	मिलाप
भेलो	भेलप
भौल	भौलप

४

१. आज गाड़ी में भीड़ घणी है।
२. म्है आज हरीरांम री जांन जाऊँला।

३. सभा में बोलणो कठण है।

४. थांरे माईपै रा कितरा घर है।

ऊपर लिखियोड़ा छोटे आखरां वाला सब्द न्यारा न्यारा जीव धारयां नै पदारथां रो नांम नईं है पण उणांरै समूह रो नांम है। पदारथां नै जीवधारियां रै समूह रो नांम प्रगट करण वाला सब्द ने समुदाय वाचक सग्या कैवै है।

५

१. लोहे रो कांम घणी जागा पड़ै है।

२. पांणी रै विनां जीवणो कठण हो जावै है।

३ आज वायरो ठंडो वाजै है।

४. बाजरी ससतो धांन है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय लोह, पांणी, वायरो नै धांन अैड़ी चीजां है जो केवल ढिगलो अथवा ढेर रै रूप में पाई जावै है। इण तरै सूं रासि अथवा ढेर रूप में पाई जावण वाली चीजां ने द्रव्यवाचक संग्या कैवै है।

अभ्यास

संग्या कितरी तरै री होवै है? भाव वाचक संग्या किणने कैवै है? जाति वाचक संग्या सूं कांई समझो हो?

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां में संग्या रा भेद बताओ।

मथुरा अेक तीरथ स्थांन है। वातां में मसकरी दाल में लूण ज्यूं होवै है।

वाघ में इतरो बल होवै है के वो हाथी ने पंजे सूं मार नाखै है। लूणी, सूकड़ी चंबल नै बनास राजस्थान री प्रधान नदियां है।

लिंग :

१. छोरो हमार घर गयो है।
२. छोरी किताब पढ़ती ही।
३. मोवन घोड़ो मोल लेवेला नै घोड़ी बेच देवेला।
४. भाखर माथै मती जावो। भाखरी माथै जावो।
५. मोर फूटरो होवे है नै ढेलड़ी कोजी होवे है।
६. गाय दूध देवे है नै बलद हल खांचे है।

ऊपरला वाक्यां रे मांय नीचे लकीर वाला सब्द अैड़ा है जिणांरो रूप अरथ रे मुजब बदलियो है। प्रथम वाक्य रे मांय छोरो पुरुषवाची है। दूसरे वाक्य रे मांय छोरी स्त्रीवाची सब्द है। इणी तरे सूं वाक्य नंबर ३, ४, ५, ६ रे माय घोड़ा, भाखर, मोर नै बलद पुरसवाचा संग्या सब्द है। जिणां ने घोड़ी, भाखरी, ढेलड़ी नै गाय स्त्रीवाची सब्दां रे रूप में बदलिया गया है।

जिण संग्या सब्दां सूं पुरसजाति रो बोध होवै उणां ने पुल्लिंग नै जिण सूं स्त्रीवाची सब्दां रो बोध होवै उण नै स्त्रीलिंग कैवै है।

पुल्लिग सब्द	स्त्रीलिंग सब्द
आदमी, मिनख	आदमण, लुगाई
नर	नारी

छोरो : छोरी, बलद : गाय, घोड़ो : घोड़ी, चिड़ो : चिड़ी, ऊँदरो : ऊँदरी, साप : सपणी, मोर : ढेलड़ी, ऊँट : सांयढ, सांढ।

जीवधारी संग्या सब्दां रा लिंग उणां रा जोड़ा सूं समझ में आवै है। पण जिके सब्द जीवधारी नईं है उणांरा लिंग जांणणा थोड़ाक कठण है।

राजस्थानी पुल्लिग

१. अकारांत पुल्लिग सब्द : धांन, गांम, नांम, वस्त, घर, सिर, माथो, माखण, आक।

२. भाव वाचक संग्याआं रे पण, पणो, पो, आट, स, चारो नै प प्रत्यय वाला सब्द, ज्यां : भलपण, भलापणो, बूढ़ापो, गोलीपो, वेलीपौ, राजीपौ, चिकणाट, गड़बड़ाट, मीठास, खारास, मिनखचारो, भाईचारो, मिलाप, धणीयाप।

अपवाद : मौलप, सैणप सब्द स्त्रीलिंग है।

३. क्रिया वाचक संग्याआं : खाणो, पीणो, पढणो।

४. ईकारांत पुल्लिग : मोती, घी, दही, पांणी।

५. ऊकारांत पुल्लिग : ब्यालू, दारू, झाड़ू, गेरु, नींबू, आलू, आंसू।

तकारांत पुल्लिग : दांत, खेत, मूत, जूत, भूत।

राजस्थानी स्त्रीलिंग

१. अकारांत स्त्रीलिंग : धूड़, रेत, वात, रात, छत, भींत, वचत
अपवाद : खपत , मिलगत ।

२. ईकारांत स्त्रीलिंग : खेती, माटी, टोपी ।

३. जिके भाव वाचक संग्याआं जिणां रे अन्त मे आई प्रत्यय होवै ज्यां : भलाई, पढाई, ऊंचाई, लिखाई, पीसाई, बुराई

४. ऊकारांत स्त्रीलिंग : वेलू, वेकलू, फलगू

५. तकारांत स्त्रीलिंग : रात, वात, छत, लात, घात

६. क्रदंत री अकारांत स्त्रीलिंग संग्याआं : लूट, दौड़, रगड़, समज ।

किताक संग्या सब्द अेड़ा है जिणां रे लिंग भेद रो बोध उणां रो जोड़ा सूं इज होवै है ।

मिनख : लुगाई, घेटो : गाडर, भाई : बैन, मोर : ढेलड़ी, धलद : गाय, घड़ो : मटकी, ऊंट : सांयढ, सांढ । बकरो : छाली, बकरी, कोनर, घांनो, घांनी, टाट । बाप : मां, सूर : भूंडण, धणी : धण, धणियांणी । [गोवणीयो : गोणियो : गुणियो] : चरवी, चरी ।

संस्कृत रा स्त्रीलिंग सब्द जिके राजस्थांनी में प्रयोग आवे है : दया, माया ।

वे स्त्रीलिंग जिणा रे अंत में ति होवे : गति, मति, सगति फुरती, रति ।

वे स्त्रीलिंग सब्द जिणां रे अंत इ, ई होवे : छबि, रासि, मणि

वे अरबी फारसी रा तदभव सब्द जिका राजस्थांनी में पुल्लिंग में प्रयोग होवै है : गुलाब, हिसाब, असबाब, जबाब सराब।

अपवाद : किताब, शुलाब

वे पुल्लिंग सब्द जिणां रे अन्त में आर अथवा आल होवे सवार, इकरार, सवाल।

वे पुल्लिग सब्द जिणां रे अन्त में आंन होवै : मकांन, सामांन, सेमांन।

अपवाद : दुकान, कबान

अरबी, फारसी, तुरकी, स्त्रीलिंग :

१. अकारांत स्त्रीलिंग : हवा, दवा, सजा, जमा।

२. ईकारांत स्त्रीलिंग : गरीबी, अमीरी, रईसी, सरदी, बिमारी, जागीरी।

अरथ रे मुजब निरजीव सब्दां रा लिग जाणणरा निगम

पुल्लिग सब्द

१ परतवां रा नाम : आडोवलो, हेमालो, धूंवड़ो, आबू।

२ समुदरां रा नांम : अरबसागर, रतनागर।

३ ग्रहां रा नांम : सूरज, चांद, बुद, मंगल।

४ समै रा नांम : बरस, महीनो, सईणो, परव, दिन, हफतो।

अपवाद स्त्रीलिंग सब्द : पल, सांझ, रात, घड़ी।

५ रतनां रा नांम [पुल्लिग] : मोती, हीरो, पन्नो, माणक, मूंगो

अपवाद स्त्रीलिंग : नीलम, मणि, मिण ।

६ धातु रा नाम [पुल्लिग] : सोनो, तांबो, लोहो, पीतल, रूपो, रांगो, कथीर ।

अपवाद स्त्रीलिंग : चांदी, कांसी, जसद, गिलट ।

७ धांनां रा नांम [पुल्लिग] : गेहूँ, चावल, चिणा, मूंग, मौठ, गवार, बाजरो, जव, उड़द ।

अपवाद स्त्रीलिंग : बाजरी, जवार, सरसूं ।

८ द्रव पदारथां रा नांम [पुल्लिग] : पांणी, घी, तेल, दही, दई, दूध, अरक, सराब, सरबत, दारू ।

अपवाद स्त्रीलिंग : छाछ, छा, चाय ।

९ दरखतां रा नाम [पुल्लिग] : बड़लो, पींपल, बड़, आकड़ो, बावल, आंबो, खेजड़ो, कैर ।

अपवाद स्त्रीलिंग : बांवली, आंबली, खेजड़ी, बोरड़ी, भाड़बेरी, जाल, भीभणी, गूंदी ।

१० आखरां रा नांम [पुल्लिग] : क, ख आदि ।

अपवाद स्त्रीलिंग : इ, ई ।

११ फलां रा नांम [पुल्लिग] : आंबो, मतीरो, खरबूजो, बोर, अंगूर, तरबूज, नींबू, गूंदो, गुट्टो ।

अपवाद स्त्रीलिंग : काकड़ी, नारंगी, आमली, दाड़म, फली, नींबोली ।

स्त्रीलिंग:

१. नदियां रा नांम : गंगा , बनास , लूणी , चंबल , खारी , सूकड़ी ।

२. तिथियां रा नाम : अेकम , पड़वा , बीज , चौथ ।

३. नखतरां रा नाम : रोयणी , भरणी , अस्वणी ।

४. किरांणा रा नाम : इलायची , बिदांम , सोपारी , केसर , दालचीणी , सूंठ ।

५. भोजनां रा नाम : रोटी , बाटी , पुड़ी , कचोरी , दाल , खीर , लापसी , खीचड़ी , जलेबी , दईथड़ी, घाठ , राब , रावड़ी ।

भोजनां में पुल्लिग : खीच , रोटो , फुलको , फाफरो , सीरो , हलवो , लाडू , पैड़ो , सोगरो , बटियो , खाखरो ।

नीचे लिखियोड़ा सब्द दोनुई लिंगां में कांम आवै है : दुसमण , दुसमीं , माईत , मावीत , टाबर-टूबर , छोरु , खिरगोस , मांनखो ।

नीचे लिखियोड़ा सब्द केवल स्त्रीलिंग इज होवै है : मकड़ी , बतख , मैना , कोयल , जूं , चील , चमचेड़ , लट , लीख , चिरमटी , चमजूं , ईली , टीलोड़ी , उदेई , भींगी , सेह , बाटबड़ , बुलबुल , चुड़ेल , बागल , तिलोर ।

नीचे लिखियोड़ा सब्द केवल पुल्लिग इज होवै है : माछर , पपैयो , बाबइयो , आगियो , पतंगियो , ममोलियो ,

सारस , ढोलर , गूगू , कन्हैयो , तीतर , अलि़यो , अल़सियो पुटियो ।

मिनखावाची स्त्रीलिंग सब्द : सुवागण , सुहागण , सती , धाय [मा] , अपसरा , पातर ।

राजस्थांनी रे मांय घणकरा संस्क्रत , अपभ्रंस , फारसी नै अरबी रा सब्द आयोड़ा है । उणां मांय सूं केई तो तत्सम नै केई तदभव है जिणां रा मूल़ रूप राजस्थांनी रे मांय बदल़ गया है ।

असली सब्द	तत्सम, तदभव	राजस्थांनी
अग्नि	सं. पु. आग , अगन , अगनी	इ. लिं.
जय	सं. न. जीत	इ. लिं.
तारा	इ. लिं. तारो	पु. लिं.
देवता	इ. लिं. देवता	पु. लिं.
वस्तु	न. पु. लिं. वसतु	स्त्री. लिं.
औषध	सं. पु. औखद	पु.
औषधि	सं. स्त्री औखदी	स्त्री.

यौगिक नै समास सब्दां रा लिंग सब्द रे अंत रै सब्द मुजब होवै है ज्यां : मां – बाप । इण रो लिंग बाप सब्द रे माफक पुल्लिग होवै है । बाल़-बुध, धरमसाल़, पौसाल़, घुड़साल, गोमूत, अगझाल़ा ।

पुल्लिग सूं स्त्रीलिंग सब्द बणावण रा नियम :

घोड़ो : घोड़ी , लड़को · लड़की , गधो : गधी , बकरो : बकरी,

बेरो : बेरी, नींबड़ो : नींबड़ी, मांमो : मांमी, काको : काकी, भाभो : भाभी, बेटो : बेटी, छोरो : छोरी, खुटोड़ो : खुटोड़ी, जीजो : जीजी, खेजड़ो : खेजड़ी, नांनो : नांनी, दादो : दादी, सालो : साली, मासो : मासी। प्राणी वाचक नै संबंध सूचक ओकारांत सब्दां ने ओकारांत सूं ईकारांत करण सूं स्त्रीलिंग बणै है।

अपवाद : ओठो पुल्लिग इण सूं ईकारांत ओठी सब्द। पुल्लिग में इण रो अरथ ऊँट रो सवार होवै है।

भैंसो पुल्लिग सूं भैंस स्त्रीलिंग होवै है।

कुत्तियो : कुत्तकी, हिरणियो : हिरणकी, टोगड़ियो : टोगड़की, पाडियो : पाडकी। निरादर, लघुवाचक नै प्रेम सूचक सब्दां सूं कठेई कठेई यो अव्यय लगाय नै स्त्रीवाची सब्दां रै अगाड़ी की लगावै है।

संबंध वाची स्त्रीलिंग अकारांत सब्दां रे अगाड़ी ओइ प्रत्यय जोड़ण सूं पुल्लिंग सब्द बणै है। ज्यां : बैन सूं बैनोई, नणद सूं नणदोई।

माली : मालण, ढोली : ढोलण, घांची : घांचण, दरजी : दरजण, मोची : मोचण, चौधरी : चोधरण, कोली : कोलण, भंगी : भंगण, तेली : तेलण, जोसी : जोसण, धोबी : धोबण बिसनोई : बिसनोइण, बिनोई : बिनोयण, डाकी : डाकण। व्यवसाय नै जातिवाचक ईकारांत पुल्लिंग सब्दां रे आगे अण प्रत्यय लगावण सूं स्त्रीलिंग सब्द बणै है। पण ई रो लोप करणो

पड़े है। अपवाद—हाथी : हथणी।

मुसलमान : मुसलमाणी, मुसलमानी, जाट : जाटणी, जाटण, भाट : भाटणी, भाटण, वाघ : वाघणी, वाघण, साप : सापणी, सपणी, सांपण, नाग : नागणी, नागण, रींछ : रींछणी, रींछण, रींछणी, सेठ : सेठांणी, जेठ : जेठांणी, देवर, देवरांणी, देरांणी, नौकर : नौकरांणी, ठाकर : ठाकरांणी, ठकरांणी, मैतर : मैतरांणी, राजपूत : राजपूतांणी, सोनार : सोनारण, सोनारी; सुथार : सुथारण, साध : साधांणी, बांमण : बांमणी, गुर : गुरांणी, पिंडत : पिंडताणी, वींद : वींदणी, वीनणी, लवार : लवारण प्राणीवाचक नै जातिवाचक अकारांत सब्दां रै अंत में अण अथवा अणी, आंणी प्रत्यय लगावण सूं स्त्रीवाची सब्द वणै है। अपवाद : रींछ : रींछणी, भील : भीलणी, कठेई कठेई पुल्लिंग सूं स्त्रीलिंग बणावण सारू अकारांत सब्द ईकारांत हो जावै है। दास : दासी, लवार : लवारी, सोनार : सोनारी, सुथार : सुथारी।

निरादर नै लघुवाचक पुल्लिंग सब्दां रे अन्त रो यो प्रत्यय रो लोप करने सब्द रे अन्त में की प्रत्यय लगावण सूं निरादर नै लघुवाची स्त्रीलिंग सब्द वणै है। मिनकियो : मिनियो, मिनकी; टोगड़ियो : टोगड़की, कुत्तियो : कुतकी, छबोलियो, [छाबोलियो] छबोलकी, छावडकी; रावड़ियो : रावड़की।

राजपूत और चारणां में अप्रत्ययवाची सब्दां रे अंत में जी सब्द लगावण सूं घणकरा स्त्रीलिंग सब्द वणै है। पण इण स्त्रीलिंग सब्दां रो प्रयोग विवाहित अथवा विधवा स्त्री रे लिये

सुमराल में ही कियो जावै जो मान सूचक समझियो जावै है :
हाडो : हाडीजी, कछावा : कछावीजी, गैलोत : गैलोतजी
राठौड़ : राठौड़जी, चहुवांण : चहुवांणजी, सेखावत : सेखावतजी
अमरावत : अमरावतजी, चांपावत : चांपावतजी, देवड़ो : देवड़ीजी
चांदावत : चांदावतजी, राणावत : राणावतजी।

न्यारा-न्यारा अरथ वाला दो दो स्त्रीलिंग सब्द।

भाई = भोजाई, बैन¹ बेटो = बेटी, बू, वड, बहू।

देवतांआं रै नांम रै आगे आंनी अथवा आंणी प्रत्यय जोड़ण सूं स्त्रीलिंग सब्द बणै है। ज्यां : इन्द्र : इंद्रांणी, भव : भवांनी ब्रह्मा : ब्रह्मांणी, रुद्र : रुद्रांणी

अरबी फारसी पुल्लिंग सूं राजस्थांनी में तद्भव सब्द स्त्रीलिंग सब्द बणै है। ज्यां : साहजादो, [सायजादो] : साहजादी; [सायजादी] रायजादो : रायजादी. हरांमजादो : हरांमजादी, मालजादो : मालजादी

वचन

अेकवचन	बहुवचन
छोरो आयो	: छोरा आया
छोरी आई	: छोरियाँ आई
छोरे ने बुलावो	: छोरां ने बुलावो
छोरी ने बुलावो	: छोरियाँ ने बुलावो
नौकर ने बुलावो	: नौकराँ ने बुलावो

ऊपर लिखियोड़ा अेक बिन्दी वाला सब्दां सूं अेक रो बोध होवै नै दो बिन्दी वाला सब्दां सूं अेक सूं घणी संग्याअां रो बोध होवै है। एक चीज रो बोध करावण वाली संग्या ने अेकवचन नै दोय अथवा दोय सूं घणी चीजां रो बोध करावण वाली संग्या ने बहुवचन केवै है। घणकरी अेक वचन री संग्याअां रा रूप बदल ने बहुवचन बणाई जावै है। ज्यां : मिनख : मिनखां बलद : बलधां, गाय : गायां, पोथी : पोथियां।

आदर ने सनमांन रे सारू राजस्थांनी में बहुवचन रो भी प्रयोग कियो जावै है। ज्यां : आप पधारो। कंवरसा पधारिया है। आप अजे तांई छोटा हो। राजा रांम प्रजा रा घणा प्यारा हा।

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां में आप, कंवरसा, रांम अेक वचन संग्या सब्द है, आदर रे कारण सू क्रिया पधारो, पधारिया है प्यारा हा बहुवचन में प्रयोग हुई है।

घणकरी जातिवाचक संग्याअां ई अेकवचन सूं बहुवचन होवै है। पण कदेई कदेई व्यक्ति वाचक भाववाचक नै द्रव्यवाचक संग्याअां ई आपरे जुदा जुदा रूप सूं व्यक्ति गुण अथवा द्रव्य प्रगट करै तद वणां रो ई प्रयोग बहुवचन में हो जावै है। ज्यां :

१. संसार में तीन रांम विख्यात है।
२. हेमाले में केई प्रयाग है।
३. बालक री केई हालतां हुवै है।
४. भगवांन री लीलाअां अपार है।
५. बाजार में घणाई तेल बिकै है।

लारला वाक्यां रे मांय रांम, प्रयाग व्यक्ति वाचक अेकवचन होता हुआ ई बहुवचन में प्रयोग हुआ है। इणी तरै सूं हालत नै लीला सब्द भाव वाचक संग्या है पण इणां रो ई प्रयोग बहुवचन रे मांय हुओ है। तेल द्रव वाचक संग्या है इण रो ई प्रयोग बहु वचन रे मांय हुओ है।

केई संग्याआं अैड़ी होवै है जिणां रो संबंध मिनख री भावना सूं होवै है। इण कारण सूं घणकरी बहुवचन में प्रयोग होवै है:

हमार गांव रा समाचार नईं है।
उणांरा प्रांण निकल् गया।
इण कोट रा कांईं दांम लागा है।

इण ऊपरली संग्याआं समाचार, प्रांण नै दांम सब्द अेक वचन होता हुआ ई बहु वचन में प्रयोग हुआ है।

अेकवचन सूं बहुवचन बणावण रा नियम :

राजस्थांनी में एक वचन सूं बहुवचन बणावण रा दोय नियम है। अेक तो विभक्ति रहित नै दूजो विभक्ति सहित। विभक्ति सहित अथवा विभक्ति वाला बहुवचनां रो वरणन तो राजस्थांनी रा कारक प्रकरण में कियो जावेला अठे विना विभक्ति सूं बहुवचन बणावण रा नियम लिखिया जावै है:

घोड़ो : घोड़ा, गधो : गधा, छोरो : छोरा, बेटो : बेटा कपड़ो : कपड़ा, रासतो : रासता, रसतो : रसता।

राजस्थांनी ओकारांत पुल्लिंग संग्या सब्द विभक्ति रहित बहु वचन आकारांत अथवा वाकारांत करण सूं होवै है ।

देवता : देवताआं, देवतावां। पिता : पिताआं, पितावां। राजा : राजाआं, राजावां। संस्कृत रा आकारांत संग्या सब्द राजस्थांनी में वहुवचन में आंकारांत अथवा वांकारांत किया जावै है।

जाट : जाटां, घाट : घाटां, भाट : भाटां, टाट : टाटां, राजपूत : राजपूतां, खाट : खाटां, चारण : चारणां, माट : माटां, वात : वातां, रात : रातां। राजस्थांनी में आकारांत सब्दां ने आंकारांत करण सूं बहुवचन वणै है।

मुनि [मुनी] : मुनियां, रिसी : रिसियां, नदी : नदियां, लोटी : लोटियां। राजस्थांनी में दीरघ तथा लघु [ह्रस्व] ईकारांत सब्दां ने ह्रस्व इकारांत करने अन्त में या जोड़ण सूं वहुवचन वणै है पण आथूणी राजस्थांनी रे मांय अकारांत ने इकारांत स्रीलिंग सब्दां ने अैकारांत करने बहुवचन वणावै है। ज्यां : सती, [सति] : सतियां, सतै। बाजरी . वाजरियां, वाजरै। नदी : नदियां, नदै। घाटी : घाटियां, घाटै। ओल़ : ओलै।

जूं : जूंआं; गूगू : गूगुआ, गूगुवां। लू : लूआं, लूवां। रितु : रितुआं, रितुवां। वुसत : वुसतां, वसतुवां। राजस्थानी में उकारांत नै ऊकारांत सब्दां ने लघु उकारांत करने अंत में आ अथवा वां जोड़ण सूं वहुवचन वणै है।

कारक

१. छोरो पोथी वाचै है।

२. छोरा ने गुरांसा भणावै है।

३. छोरा सूं छोरा रो वाप लिखावै है।

४. छोरा सारू छोरा रो वाप टोपी लायो।

५. छोरा खना सूं कुत्तो रोटी खोसली।

६. छोरा में गुण घणा है।

७. छोरा! सावल् को रैनी?

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां रे मांय छोरो संग्या सब्द क्रिया सूं जुदा-जुदा संबंध राखै है। प्रथम वाक्य रे मांय छोरो सग्या सूं वाचै है क्रिया रे करता रो बोध होवै है। दूजा वाक्य रे मांय छोरा संग्या सब्द सूं भणावै है, क्रिया रो फल्, छोरो संग्या असली सब्द माथै पड़ै है। इण कारण सूं दूजा वाक्य रे मांय छोरो संग्या करम कारक कैवीजै है। तीजा वाक्य रे मांय छोरा सूं संग्या रा सब्द सूं लिखावै है, क्रिया री संगति रो बोध होवै है, इण कारण सूं छोरा सूं संग्या करण कारक है। चौथे वाक्य रे मांय लायो क्रिया रो फल् प्रथम तो टोपी संग्या माथै नै पछै छोरो संग्या माथ पड़ै है। इण कारण सूं छोरो संपरदान कारक है। इणी तरैसूं पांचमैं वाक्य रे मांय छोरो संग्या सूं रोटी संग्या री जुदाई खोसली क्रिया सूं है।

छठे वाक्य रे मांय छोरा संग्या सूं कपड़ा संग्या रो संवंध

पायो जाव है। इणी तरै सूं सातवां वाक्य रे मांय छोरो गुणा रो आधार है।

संग्या अथवा सरवनांम रे जिण रूप सूं उण रो संबंध क्रिया अथवा बीजा सब्दां रे साथै प्रगट कियो जावै है उण ने कारक केवै है।

संग्या अथवा सरवनांम रा संबंध क्रिया अथवा दूजा सब्दां सूं बतावण सारू उण रे साथै जिके आखर अथवा चिन्ह लगाया जावै है उणां ने विभक्ति केवै है। वे विभक्ति चिन्ह राजस्थांनी भासा रा नीचे मुजब है।

[संस्कृत रे सिवाय अन्यान्य भासाओं रे विद्वान संबंध ने ई कारक मानै है, इणी सूं वोही नियम अठे ई अनुसरण कियो गयो है]

कारक री विभक्तिया व विभक्ति चिन्ह

कारक	विभक्तियां	विभक्ति चिन्ह
करता	प्रथमा विभक्ति	×
करम	द्वितीया ,,	ने, नूं, नां, को, कूं।
करण	तृतीया ,,	सूं, ऊं, ती, सेती, सात, हूंत, हूतां, सां, सै, सं, थी।
संप्रदांन	चतुरथ. ,,	रै, कै, बैंई, वैई, लिये, आंटा माटै, आंटै, वासते, कारण, सारू, तांई।

अपादांन	पंचमी विभक्ति	तृतीया रे ज्यां होवै।
संबंध	षष्ठी ,,	रा, री, रै, रो, का, की, के, को, चो, चा, च, ची, तणो, तणी, तण।
अधिकरण	सप्तमी ,,	मैं, में, मांय, परे, पै, माथै, ऊपरै, तांई, तक, खनै, कनै, नखै, नकै, खडे, खूंडै, गोडै, दीहा, पां, दीसा, वल, वलाको पाहै, पास, पासै, पाराती पसवाड़े, पाड़े, पासड़े।
संबोधन	अष्टमी ,,	हे! हो! अरे! ओ!

कारकां रा लक्षण

करता कारक : संग्या अथवा सरवनांम रे उण रूप ने केवै है जिण सूं क्रिया रे कारण वाला रो बोध होव है। ज्यां : छोरो पोथी पढै है। छोरी कांम पूरो कर दीनो। ओ अजे आयो कोयनी। पोथी लिखी जावैला।

जिण करता कारक रा लिंग वचन पुरस रे मुजब होवें उणने प्रधान करता केवै है नै जिण करता कारक रा लिंग वचन पुरस रे मुजब नईं होवै उण ने अप्रधान करता केवै है। राजस्थांनी रे मांय करता कारक रो कोई चिन्ह नईं होवै है। पण सामान्य भूत काल रे मांय ओकारांत ने, औकारांत सब्द अेकारांत हो जावै है।

करम-कारक : जिण पदारथ ऊपर क्रिया रो फल पड़ै है उण प्रगट करण वाला संग्या अथवा सरवनांम रे रूप ने करम कार केवै है। ज्यां : छोरा ने गुरांसा भणावै है। छोरो रूंख सूं प तोड़तो हो। जद कद करम कारक वाक्य रे मांय उद्देश्य होय ने अ है तद वो करता कारक रे मांय रेवै है। राजस्थांनी रे मांय क कारक रो निसांण – ने, नां, नूं, को, कूं, होवै है, पण कदे कदेई करम कारक रो निसांण ने, नां, नूं, को, कूं छिपियोड़ो रेवै, परन्तु व्यक्तिवाचक संग्याआं रे अगाड़ी करम कारक निसांण जरूर ही रेवै है।

करण-कारक : संग्या रे उण रूप ने केवै है जिण सूं क्रिया साधन रो बोध होवै है। ज्यां : हाथ सूं रोटी खाऊ हूं। औ प सूं हालै कोयनी। करण कारक रा निसांण सूं, ऊ, ती, थी, से सां, सै, स है।

संप्रदान कारक : जिण पदारथ सारू क्रिया की जावै है उण प्रगट करण वाला संग्या सब्द ने अथवा सरवनाम रा रूप संप्रदा कारक केवीजै है। ज्यां : छोरा सारू आंबो लायो। थूं अठे म्हां आंटै आयो होवैला। संप्रदान कारक रा निसांण सारू आं आदि है।

अपादान कारक. संग्या नै सरवनांम रे उण रूप ने केवै है जि सूं क्रिया री जुदाई अथवा अलग होवण रो बोध पायो जावै है ज्यां : रूंखड़ा माथा सूं पांनड़ा नीचा पड़ै है। चंडीदान अठा गयो परो। करण ने अपादांन दोनूं ई कारकां री विभ

निसांण एक इज होवें है, पण करण कारक में क्रिया रे साधन रो बोध होवै है नै अपादांन कारक सूं क्रिया री जुदाई रो बोध होवै है।

सम्बन्ध कारक : संग्या नै सरवनांम रे उण रूप सूं उण रो सम्बन्ध दूजा सब्दां रे साथै प्रगट होवै उणने सम्बन्ध कारक केवै। ज्यां : चौधरी रो छोरो। म्हारी गाय। थांरा घर।

अधिकरण कारक : संग्या नै सरवनांम रे उण रूप ने केवै है जिण सूं क्रियारो आधार प्रगट होवै है। ज्यां : घर में आदमी। कलस में पांणी। मेज माथै पोथी किणरी है?

सम्बोधन कारक : संग्या नै सरवनांम रे उण रूप ने केवें है जिण सूं किणी दूसरां ने पुकारण रो अथवा चेतावण रो बोध होवै है। ज्यां : छोरा अटी डरो आ। भगवांन सैंगां ने बचाव। संबोधन कारक रो कोई विभक्ति निसांण नहीं होवै है। इण कारण सूं इण रे पेली [!] लगाय दियो जावै।

विभक्ति चिन्हां रे अेवज रे मांय किणी किणी कारक रे मांय सम्बन्ध बोधक सब्द आवै है। ज्यां : करण कारक : जरिये, कारण संप्रदांन : लिये, आंटै, वास्ते। अपादान : करतां, बिचै। अधिकरणः बीच, मांयने, भीतर, ऊपर।

विभक्ति चिन्ह नै सम्बन्ध बोधक सब्दां मे ओ फरक है के विभक्ति चिन्ह संग्या अथवा सरवनांमां रे साथै आवण सूं हीज अरथ वाल़ा वणै है नै सम्बन्ध बोधक खुद ईज आपरो अरथ राखै है।

किणी संग्या अथवा सरवनांम रो अरथ सपस्ट प्रगट करणसारू जिकै सब्द आवै है उणां सब्दां नै संग्या नै सरवनांम रा समांनाधिकरण सब्द कैवे है। ज्यां :

म्हारो भाई बालूदांन इमतियांन में पास हो गयो।

इण वाक्य रे मांय भाई सब्द बालूदांन संग्या रो अरथ सपस्ट करै है इण कारण सूं भाई संग्या सब्द बालूदांन संग्या सब्द रो समांनाधिकरण सब्द है। इणीज तरै सूं राजा हणूतसींघजी जोधपुर रा आखिरी राजा हा। इण वाक्य रे मांय हणूतसींघजी 'राजा' संग्या सब्द रा समांनाधिकरण है।

समांनाधिकरण संग्या सब्द उणी कारक में आवै है, जिण में प्रधान संग्या अथवा सरवनांम ही रेवै। ऊपरला उदाहरणां में बालूदान नै रांजा सग्याआं करता कारक रे मांय है क्यूं के मुख्य संग्याआं भाई नै हणूतसिंहजी करता कारक में आई है।

संग्याआं री कारक रचना रा रूप

१. छोकरो : छोकरे पोथी वाची। २. घड़ो : घड़े ने लाओ।
३. पांनड़ो : पांनड़े सूं पांणी पीवो। ४. राजा : राजा आयो।
५. पिता : पिता ने बुलावो

ऊपर लिखियोड़ा डावी बाजू रा राजस्थांनी रा ओकारांत संग्या सब्द है, जिणां रे अेक वचन रे मांय करता कारक में ओ री जागा अे हो जावै है पण संस्क्रत सुद्ध सब्दां में जिके जीमणी बाजू लिखियोड़ा है उणां रे मांय किणी तरै रो फरक नईं होवै

है। डावीकांनी रा संग्या सब्द विकारी नै जीमणी कांनी रा राजा ने पिता अधिकारी सब्द है। विकारी संग्यां सब्दां रो वदलियोड़ो रूप विक्रत [विकृत] कैवीजै है।

विभक्ति सहित बहुबचन बणावण रा नियम

घर : घरां ने। राजा : राजाआं, राजावां। खेत : खेतां में। मा [माता] माताआं, मातावां सूं। वात : वातां सूं। पिता : पिताआं, पितावां ने।

बहुवचन वणावण मे अकारांत विकारी आंकारांत नै आकारांत बिकारी आंकारांत अथवा वांकारात हो जावै है।

कवि : कवियां। टोपी : टोपियां रा। घांची : घांचियां ने नदी : नदियां में। हाथी : हाथियां सूं। घोड़ी : घोड़ियां माथै।

इकारांत नै ईकारांत सब्दां रा बहुवचन वणावण सारू अंत री इ, ई, ने छोटी इ रे मांय वदल ने या जोड़ियो जावै है।

साधु : साधुआं, साधुवां। ढालू : ढालुआं, ढालुवां। चरू : चरुआं चरुवा।

छोटा उकात नै दीरघ ऊकारांत सब्दां ने बहुबचन वणावण में छोटा उकारांत कर अंत में आं अथवा वा जोड़ियो जावै है।

एक वचन	बहु वचन
मे	मेहां, मेआं पु.
खे	खेआं, खेहां स्त्री.

ऐकारान्त पुल्लिंग नै स्त्रीलिंग संग्या सब्दां रा बहुवचन बणावण सारू ऐकारांत नै ऐंकारांत किया जावै है।

एक वचन	बहु वचन
रावळै	रावळैं पु०
कळै	कळैं स्त्री.

ऐकारांत पुल्लिंग नै स्त्रीलिंग सब्दां रा बहुवचन नईं बणै है, ऐड़ा सब्द दोनूंई वचनां में समान प्रयोग होवै है।

एक वचन	बहु वचन
दादो	दादा, दादां
छोकरो	छोकरा, छोकरां

ओकारांत संग्या सब्दां रा बहुवचन आकारांत तथा आंकारांत हो जावै है।

एक वचन	बहु वचन
गाभौ	गाभ, गाभां
पौ	पौआं, पौवां

ऐकारांत पुल्लिंग सब्दां रा बहुवचन आकारांत नै आंकारांत हो जावै है परंतु स्त्रीलिंग में वांकारांत ई होवै है।

आकारांत पुल्लिंग पांन संग्या सब्द

कारक	ऐक वचन	बहु वचन
करता कारक	पांन	पांन, पांनां।

करम	पांन ने	पांनां ने , नूं नां ।
करण	पांन सूं	पांनां सूं , ऊं , ती , सेती , थी , सां , आदि ।
संप्रदांन	पांन रे	पांनां रै , कै , वासते , सारू , तांई , आदि ।
अपादान	पांन सू	पांनां सूं , ऊं , ती , सेती , थी , सां , आदि ।
संबंध	पांन रो	पांनां रा , को , की , के , री रे आदि ।
अधिकरण	पांन में	पांनां में , मांय , पर , पै , माथै , ऊपरै आदि ।
संबोधन	ओ पांन !	ओ पांनां !

आकारात वात स्त्रीलिंग संग्या सब्द

कारक	ओक वचन	बहु वचन
करता	वात	वातां ।
करम	वात ने	वातां ने , नूं , नां ,
करण	वात सूं	वातां सूं , सां , सेती , ऊं , थी , ती , सैं , सै , स ।
संप्रदांन	वात रे	वातां रे , वासते , सारू , आंटै , माटै , कै , तांई , वैंई , वैई आदि ।

अपादान	वात सूं	वातां सूं, सां, सेती, ऊं, थी, ती, सैं, सै, स आदि
संबंध	वात री	वातां रा, रे, री, को, की, के, चो, चा, च, ची, तणो, तणी, तण आदि।
अधिकरण	वात में	वाता में, खनै, कनै, नखै, गोडे, पाहै, पास, मैं, मांय, वल, वलाको, पर, पासै, माथै, ऊपर, तांई तक आदि।

आकारांत राजा पुल्लिग संग्या सब्द

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	राजा	राजा, राजाआं, राजावां।
करम	राजा ने	राजाआं ने, नूं नां, राजावां, ने, नूं नां।
करण	राजा सूं	राजावां सूं, राजाआं सूं, ऊॅ, सां, सेती, थी, ती, सैं, सै, स आदि।
संप्रदान	राजा रे	राजाआं रे, राजावां रे, वासते, सारू, आटै, माटै, कैतांई, कै, तांई, वैंई, वेई, आदि।

अपादान	राजासूं	राजाआं सूं, राजावां सूं, ऊं, सां, सेती, थी, ती, सैं, सै, स आदि।
संबंध	राजा रा	राजाआं रा, राजावां रा, रे, री, रो, को, की, के, चो, चा, च, ची, तणो, तणी, तण आदि।
अधिकरण	राजा में	राजाआं में, राजावां में, खनै, कनै, नखै, गोडै, पाहैं, पास, मैं, मांय, वल़, वल़ाको, पर, पासै, माथै, ऊपरै, तांई, तक आदि।
संबोधन	ओ राजा	ओ राजाआं! ओ राजावां! हे! हो! अरे आदि।

आकारांत स्त्रीलिंग मा संग्या सब्द

कारक	एक वचन	बहु वचन
करता	मा	माआं, मावां।
करम	मा नै	माआं ने, मावां ने, नूं, नां
करण	मा सूं	माआं सूं, मावां सूं, ऊँ, सां, सेती, थी, ती, सैं, सै, स आदि।

संप्रदान	मा रे	माश्रां रे, मावां रे, वासते, सारू, आटै, माटै, कैतांई, कै, तांई, वैंई, वेई आदि।
अपादान	मा सूं	माश्रां सूं, मावां सूं, ऊॅ, सां, सेती, थी, ती, सैं, सै, स आदि।
संबंध	मा रा	माश्रां रा, मावां रां, रे, री, रो, को, की, के, चो, चा, च, चीं, तणो, तणी, तण आदि।
अधिकरण	मा में	माश्रां में, मांवां में, खनै, कनै, नखै, गोडै, पाहै, पास, मैं, मांय, वलु, वलुाको, पर, पासै, माथ, उपरै, तांई, तक आदि।
संबोधन	ओ मा	ओ माश्रां! ओ मावां! हे! हो! अे! अरे अई!

इकारांत पुल्लिग कवि सग्या सब्द

कारक	एक वचन	बहु वचन
करता	कवि	कवि, कवियां।
करम	कवि ने	कवियां ने, नूं नां।

करण	कवि सूं	कवियां सूं, ऊँ, सां, सेती तीं, थी, सैं, सै, स आदि।
संप्रदान	कवि रे	कवियां रे, वासतै, सारू, माटै, आटै, कैतांई, कै, तांई, वैंई, वैई आदि।
अपादान	कवि सूं	कवियां सूं, ऊँ, सां, सेती, तीं, थी, सैं, सै, स आदि।
संबंध	कवि रो	कवियां रा, री, रे, रो, को, की, के, चो, चो, च, चा, तणो, तणी, तण।
अधिकरण	कवि में	कवियां में, खनै, कनै, नखै, पास, पाहै, गोडै, मैं, मांय, वलु, वलाको, ऊपरै, पर, पासै, माथै, तांई, तक आदि।
संबोधन	ओ कवि	ओ कवियां! हे! हो! हरे! अई! आदि।

उकारांत पुल्लिग तरु संग्या सब्द :

कारक	अेक वचन	बहु वचन
कर्ता	तरु	तरुआं, तरवां।

कर्म	तरु ने	तरुआं ने , तरुवां ने , नूं , नां आदि ।
करण	तरु सूं	तरुआं सूं , तरुवां सूं , ऊँ , सां , सेती , ती , तीं , थी , स , सैं , सै आदि ।
संप्रदान	तरु रे	तरुआं रे , तरुवां रे , वासतै सारू . आंटै , माटै , कै , तांई , कैतांई , वैंई , वैई आदि ।
अपादान	तरु सूं	तरुआं सूं , तरुवां सूं , ऊँ , सां , सेती , ती , तीं , थी , स , सैं , सै आदि ।
संबंध	तरु रो	तरुआं रो , तरुवां रो , रे , रा , री , चो , चा , ची , तणो , च , को , की , कै , तणी , तण आदि ।
अधिकरण	तरु मैं	तरुआं मैं , तरुवां मैं , खनै , कनै , नखै , गोडै , पाहै , पास , मैं , मांय , ऊपरै , वलु , वलाकै , पर , पासे , माथे , तांई , तक आदि ।

संबोधन	ओ तरु !	ओ तरुआं ! ओ तरुवां ! अरे ! हे , हो , हाय आदि ।

उकारांत स्त्रीलिंग गउ संग्या सब्द

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	गउ	गउआं , गउवां ।
करम	गउ ने	गउआं ने , गउवां ने , नूं , नां आदि ।
करण	गउ सूं	गउआं सूं , गउवां सूं , ऊँ , सा , सेती , थी , स , ती , तीं , सैं , सै आदि ।
संप्रदान	गउ रे	गउआं रे , गउवां रे , वासते , सारू , आंटै , माटै , कै , तांई , कैतांई , वैंई , वैई आदि ।
अपादान	गउ सूं	गउआं सूं , गऊवां सूं , ऊँ , सा , सेती , थी , स , ती तीं , सैं , सै आदि ।
संबंध	गउ रो	गउआं रो , गउवां रो , रा , री , रे , चो , चा , ची , च , को , की , के , तणो , तणी , तणा आदि ।

अधिकरण	गउ में	गउआं में, गउवां में, खनै, कनै, नखै, गोडै, पाहै, पास, पासै, ऊपरै, वलै वलाकै, माथै, मैं, मांय, तांई, तक आदि।
संबोधन	ओ गउ!	ओ गउआं! ओ गउवां! हे! हो! अरे! ओ!

उकारांत पुल्लिग ढालू संग्या सब्द.

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	ढालू	ढालुआं, ढालुवां, ढालू।
करम	ढालू ने	ढालुआं ने, ढालुवां ने, नूं, नां आदि।
करण	ढालू सूं	ढालुआं सूं, ढालुवां सूं, ऊॅं, सा, सेती, थी, सती, तीं, सैं, सै आदि।
संप्रदान	ढालू रे	ढालुआं रे, ढालुवां रे, वासते, सारू, आटै, माटै, कै, तांई, कैतांई, बेंई, वैई आदि।
अपादान	ढालू सूं	ढालुआं सूं, ढालुवां सूं, ऊॅं, सा, सेती, थी, स,

		ती , तीं , सैं , सै आदि ।
संबंध	ढालू रो	ढालुआं रो , ढालुवां रो , रा , री , रे , चो , चा , ची , च , को , की के , तणो , तणी , तण आदि ।
अधिकरण	ढालू में	ढालुआं में , ढालुवां में , खनै , कनै , नखै , गोडै , पाहै , पास , पासै , ऊपरै , वल , वलाकै , माथै , मैं , मांय , तांई , तक आदि ।
संबोधन	ओ ढोलू !	ओ ढालुआं ! ओ ढालुवां ! हे ! हो ! अरे ! ओ ओदि !

इकारांत स्त्रीलिंग मति संग्या सब्द :

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	मति	मतियां , मतै ।
करम	मति ने	मतियां , ने , नूं , नां ।
करण	मति सूं	मतियां , सूं , ऊँ , सां , सेती , तीं , थी , सैं , सै , स आदि ।
संप्रदान	मति रे	मतियां रे , वासतै , सारू , माटै , आंटै , कैनांई , कै

		तांई , वई , वेई आदि ।
अपादान	मति सूं	मतियां , सूं , ऊं , सां , सेतो , तीं , ती , थी , सैं ,. स , स आदि ।
संबंध	मति रो	मतियां , रा , रे , रो , को , की , के, चो , ची , च , चा , तणो , तणी , तण , आदि ।
अधिकरण	मति में	मतियां में , खनै , कनै , नखै , गोडै , पाहै , पास , पासै , पर , मैं , मांय , माथ , तांई , तक , वल , वलाको आदि ।
संबोधन	ओ मती !	ओ मतियां ! हे ! हो ! अरे ! हाय आदि ।

ईकारांत पुल्लिग हाथी सग्या सब्द :

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	हाथी	हाथी , हाथियां ।
करम	हाथी ने	हाथियां , ने , नूं , नां , ।
करण	हाथी सूं	हाथियां , सूं , ऊँ , सां , सेती , तीं , ती , थी , सैं , सै , स आदि ।

संप्रदान	हाथी रे	हाथियां रे, वासते, सारू, आंटै, माटै, कै, तांई, बैंई, चैंई आदि।
अपादान	हाथी सूं	हाथियां सूं, ऊँ, सां, सेती, तीं, ती, थी, सैं, सै, स आदि,
संबंध	हाथी रो	हाथियां रा, री, रो, रे, की, को, के, चो, ची, च, चा, तणो, तण, तणी आदि।
अधिकरण	हाथी में	हाथियां में, खनै, नखै, कनै, गोडै, पाहै, पास, मैं, मांय, वल, वलाको, ऊपरै, पर, पासै, माथै, तांई, तक आदि।
संबोधन	ओ हाथी!	ओ हाथियां! ओ! अरे! अई! अइओ! हे! हरे! हाय आदि।

ईकारांत स्त्रीलिंग नदी संज्ञा सब्दः

कारक	ओक वचन	बहु वचन
करता	नदी	नदियां, नदे।
करम	नदी ने	नदियां, ने, नूं, नां, आदि

करण	नदी सूं	नदियां, सूं, ऊँ, सां, सेती, ती, थी, स, सैं, सै आदि।
संप्रदान	नदी रे	नदियां रे, वास्ते, सारू, आंटे, माटै, कै, तांई, कैतांई, वैंई, वैई, आदि।
अपादान	नदी सू	नदियां, सूं, ऊ, सां, सेती, थी, स, सैं, सै आदि।
संबंध	नदी रो	नदियां, रो, रे, रा, री, चो, चा, ची, तणो, च, को, की, कै, तणी, तण आदि।
अधिकरण	नदी में	नदियां में, खनै, कनै, नखै, गोडै, पाहै, पास, में, मांय, ऊपरै, वल, वलाको, पर, पासे, माथै, तांई, तक आदि।
संबोधन	ओ नदी!	ओ नदियां! अरे! हे! हो! हाय आदि

ऊकारांत स्त्रीलिंग संग्या सब्द वू :

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	वू	वूआं , वूवां ।
करम	वू ने	वूआं ने, वूवां ने, नूं , नां ।
करण	वू सूं	वूआं सूं , वूवां सूं , ऊं , सां , सेती , थी , ती ; तीं , स आदि ।
संप्रदान	वू रे	वूआं रे , वूवां रे , वासतै , सारू , आंटै , माटै , कै , तांई , कैतांई , वैई , वई , आदि ।
अपादान	वू सूं	वूआं सूं , वूवां सूं , ऊं , सां , सेती , थी , ती , तीं , स आदि ।
संबंध	वू रो	वूआं रो , वूवां रो , रा , री , रे , चो , चा , ची , च , को , की , का , कै , तणो , तणी , तण , आदि ।
अधिकरण	वू में	वूआं में , वूवां में , खनै , कनै , नवै , गोडै , पाहै ;

संप्रदान	खे रे	खेश्रां रे, खेहां रे, वासते, सारू, कै, जै, श्रांटै, माटै, कैतांई, श्रांटा, तांई, वैंई, वैई, तक श्रादि
अपादान	खे सूं	खेश्रां सूं, खेवां सूं, ऊ, सेती, ती, तीं, थी, स, सैं, सै, हूंत, हूता श्रादि।
संबंध	खे रो	खेश्रां रो, खेहां रो, रा, री, रे, चो, चा, ची, च, को, का, की, के, तणो, तणी, तण, वो, वा श्रादि।
अधिकरण	खे में	खेश्रां में, खेहां में, खनैं, कनै, नखै, गोडै, पाहे, पासै, पास, ऊपरै, वल, वलाको, वलाकै, माथै, मैं, मांय, तांई, तक, ऊपर श्रादि।
संबोधन	श्रो खे !	श्रो खेश्रां ! श्रो खेहां ! हे ! अरे ! हो ! श्रादि।

अैकारांत पुल्लिग संग्या सब्द रावळ :

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता		रावळै ।
करम		रावळै ने , नां , नुं ।
करण		रावळै सूं , ऊं , सां , से , ती , थी , स , सैं , सै , हूंत , हूँता , सेती आदि ।
संप्रदांन		रावळै रै , वासते , सारू , कै , जै , आंटा , आंटै , माटै , कैतांई , कै , तांई , वैई , वैई आदि ।
अपादांन		रावळै सूं , ऊं , सां, सेती , ती , थी , स , सै , सैं , हूँत , हूँता से आदि ।
संबंध		रावळै रौ , रा , री , रै , चो , चा , ची , च , को , का , की , के , तणां , तणी , आदि ।
अधिकरण		रावळै में , खनैं , नखै , कनै , गोडै , पाहै , पासै ,

		पास , ऊपर , वल़ , वल़ाको , वल़कै , माथै , मैं , मांय , तांई आदि ।
संबोधन		ओ रावल़ां ! हे ! हो ! अरे ! आदि ।

अैकारात स्त्री लिंग नेपै संग्या सब्दः

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता		नेपै
करम		नेपै नूं , ने , नां ।
करण		नेपै सूं , ऊं , सां , सेती , ती , थी , स , सैं , सै , हूंत , हूंता , आदि ।
संप्रदांन		नेपै रै , वासते , सारू , कै , जै , आंटा , आंटै , माटै , वैतांइ , कै , तांई , वैंई , वैंई , तक आदि ।
अपादांन		नेपै सूं , ऊं , सां , सेती , ती , थी , स , सैं , सै , हूंत , हूतां आदि ।
संबंध		नेपै रौ , रा , री , रै , चो , चा , ची , च , को , का , की , के , तणो , तणी , तण आदि

अधिकरण	नेपै में , खनै , नखै , कनै , गोडै , पाहै , पासै , पास , उपरै , वल , वलाको , वलाकै माथै , मैं , मांय , तांई ।

ओकारात पुल्लिग सग्या सब्द दादो :

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	दादो	दादा , दादा ।
करम	दादे ने	दादां ने , नूं , ना , आदि ।
करण	दादे सूं	दादां सूं , ऊं , सेती , ती , तीं , थी , स , सैं , सै , हूंत , हूंता , आदि ।
संप्रदांन	दादे रै	दादां रै , वासते , सारू , आंटा , आंटै , माटै , कैतांई , कै , तांई , वैंई , वंई आदि ।
अपादांन	दादे सूं	दादां सूं , ऊं , सेती , ती , तों , थी , स , सैं , से , हूंत , हूंता , आदि ।

संबंध	दादे रो , दादा रो	दादां रो , रा , री , रे , चा , ची , चो , च , को , का , की , कै , तणो , तणी , तण , वो , वा ।
अधिकरण	दादे में , दादा में	दादां में , खनै , कनै , नखै , गोडै , पाहै , पासै , पास , ऊपरै , वल़ , वल़ाको , वल़ाकै , माथै , मैं , मांय , तांई , तक , ऊपर आदि ।
संबोधन	ओ दादा	ओ दादां ! हे ! हो ! अरे ! आदि ।

ओकारांत स्त्रीलिंग संग्या सब्द गो.

कारक	अेक वचन	बहुवचन
करता	गो	गोआं , गोवां ।
करम	गो ने ,	गोआं ने , गोवां ने , नूं , नां , आदि ।
करण	गो सूं	गोआं सूं , गोवां सूं , ऊं , सेती , ती , तीं , थी , स , सें , सै , हूंत , हूंता आदि ।

संप्रदान	गा रे	गोआं रे, गोवां रे, वासते, सारू, आंटा, आंटै, माटै, कैतांई, कै, तांई। वैंई, वैई आदि।
अपादान	गो सूं	गोआं सूं, गोवां सूं, ऊं, सेती, ती, तीं थी, स, सै, सै, हूंत, हूता आदि।
संबंध	गो रो	गोआं रो, गोवां रो, रा, री, रे, चा, चो, ची, च, को, का, की, कै, तणो, तणी, तण, चो, वा आदि।
अधिकरण	गो मे	गोआं में, गोवां में, खनै, कनै, नखै, गोडै, पाहै, पासै, पास, ऊपरं, वल, वलाकै, वलाको, माथै, मैं, मांय, तांई, तक, ऊपर आदि।
संबोधन	ओ गो	ओ गोआं! ओ गोवां! ओ! हे! हो!

औकारात पुल्लिग संग्या सब्द गाभौः

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	गाभौ	गाभा, गाभां।
करम	गाभौ ने	गाभां ने, नूं, नां आदि।
करण	गाभौ सूं, गाभा सूं	गाभां सूं, ऊं सेती, ती, थी, स, सां, हूंता, हूंत, आदि।
सम्प्रदान	गाभै रे, गाभा रे	गाभां रे, वासते, सारू, आंटै, आंटा, माटै, कै, तांई, कैतांई, वैंई, वैई।
अपादान	गाभौ सूं, गाभा सूं	गाभां सूं, ऊं, सेती, ती, तीं, थी, स, मां, हूंता, हूंत आदि।
संबंध	गाभौ रो, गाभा रो	गाभां रो, रा, री, रे, चा, चो, ची, च, वा; का, को, की, के, तणो, तणी, तण, चो आदि।
अधिकरण	गाभौ में, गाभा में	गाभां में, खनै, नखै, कनै, गोडै, पाहै, पासै, पास, ऊपरे, वल, वलाके,

		रहाको , माथै , मैं , मांय , तांई , तक , ऊपर आदि ।
संबोधन	ओ गाभौ ! ओ गाभा ओ गाभा ! हे ! हो ! अे ! अरे आदि !	

औकारांत स्त्रीलिंग संग्या सब्द पौ:

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	पौ	पौआं , पौवां ।
करम	पौ नैं	पौआं ने , पौवां ने , नूं , नां आदि ।
करण	पौ सूं	पौआं सूं , पौवा सूं , ऊं , सेती , ती , तीं , थी , स , सां , हूंता , हूंत आदि ।
संप्रदान	पौ रे	पौआं रे , पौवां रे , वासते , सारू , आंटा , आंटै , माटै , कै , तांई , कैतांई , वैई , वैई आदि ।
अपादान	पौ सूं	पौआं सूं , पौवां सूं , ऊं , सेती , ती , तीं , थी , स , सां , हूंता , हूंत आदि ।

संबंध	पौ रो	पौआं रो , पौवां रो , रा , री , रे , चा , चो , ची , च , वा , का , को , की , कै , तणो , तणी , तण , वा , वो
अधिकरण	पौ में	पौआं में , पौवा में , खनैं , नखै , कनै , गोडै , पाहै , पासै , पास , ऊपरे , ऊपर , वळ , वळाकै , वळाको , माथै , मैं , मांय , तांय , तक
संबोधन	ओ पौ !	ओ पौआं ! ओ पौवां ! अे ! हे ! हो ! आदि ।

चौथो अध्याय

सरव नांम [सर्वनाम]

१. सांवळ कयो के हूं काले नईं आऊला ।
२. भगदांन चंडीदान ने पूछियो थूं कद आवैला ।
३. बाप बेटै ने कयो थूं [तूं] कठै जावै है ?
४. बेटै बाप ने पूछियो के आप कदे पधारिया ?

५. म्हैं साराई मिलने मोवन रे घरे गया पण वो म्हांरे साथे को हालियोनीं ?

६. औ कुण ऊभो है ?

७. अै कदे आया ?

८. थे साराई कांई करो हो ?

९. वा छोरी सिध जावै है ?

१०. आ कन्या किण री वेटी है ?

ऊपरला वारीक आखर वाला सव्द सरवनांम है क्यां के अै साराई सव्द संग्या रे वदलै कांम आया है। सरवनांम रे प्रयोग सूं संग्या सव्दां ने वार वार दोरावण री जरूरत नईं पड़ै है। पैलै वाक्य रे मांय हूं रो प्रयोग नईं कियो होतो तो वाक्य इण मुजव वणतो—सांवल कयो के कालै सांवल नईं आवैला। इणी तरै सूं दूजोड़ो वाक्य इण मुजव लिखियो जावतो—मगदांन चंडीदांन ने पूछियो के चंडीदांन कद आवैला। इण तरै सूं लिखियोड़ा वाक्य चोखा मालम नईं होवे है नै कांनां ने भी चोखा नईं लागै, इणीज वास्तै सरवनांम रो प्रयोग होवै है।

ऊपरला वाक्यां रे मांय हूं, म्हैं, म्हारे वोलणवाले आसामी रे वदलै आया है नै थूं, तूं, थे सुणणवाले आसामी रे नांम रे वदलै आया है, इण ने पुरस वाची [पुरुष वाचक] सरवनाम केवै है। वोलण वाला रे नांम रे वदलै आवण वाला सव्द म्हैं, हूं, म्हारे सरवनांम है नै इणां ने उत्तम पुरस सरवनांम केवै है;

तथा सुणण वाला रे नांम रे बदलै आवण वाला तूं , थूं , थे ने मध्यम पुरस सरवनांम केवै है। इण सरवनांमां ने छोड बाकीरा सारा सरवनांम अन्य पुरस वाची [पुरुष वाचक] सरवनाम है।

उतम पुरस नै मध्यम पुरस वाची सरवनांम दोनों हि लिंगा मे काम आवै है।

जद कदेई बोलणवालो आसामी आप रे खुद रे बाबत नरमी रे साथ कैणो चावै तद हूं , मूं , म्हें , म्हू , मैं सरवनांम सब्दां रो उपयोग करै। ज्यां :

१. आपरै सांमने हूं काई चीज हूं।

२ हूं काल आप कने हाजर होऊंला।

म्हे नैं , म्हा , रो उपयोग बहुवचन में होवै है पण आपरै कणूंबा , मिनखजात , आपरे देस रै बाबत नै राजा तथा वडा आदमी खुद रे वास्तै इणां रो उपयोग करै है।

सुणणवाला रे वास्तै हमेसां तूं , थूं सरवनांम रो प्रयोग कियो जावे है पण तूं ने थूं निरादर सूचक सरवनांम है सो इणां रो उपयोग वचन में साधारण व रिस्ते में छोटा रे बाबत कियो जावै है परंतु ईसवर रे नै गाढा मित्र रे बासतै ई तूं , थ रो प्रयोग कियो जावै है।

इणी तरै सूं आप , राज रावलै पिंडां , सरदार , डीला , पोते सब्दां रो प्रयोग सतकार व सनमांन रे वासतै कियो जावै है।

राजा, महाराजा, नै दूजा बड़ा आदमियां रे सारू हजूर श्रीमांन, साब रो उपयोग कियो जावै है। ज्यां : हजूर रो पधारणो कद हुवो ?

पुलिंग	स्त्रिलिंग
१ औ गांम म्हारो है।	४ आ भैंस किणरी है ?
२ औ बलध म्हारो है।	५ आ किणरी बेटी है ?
३ वो कुण जावै है ?	वा किणरी बेटी है ?
७ अै आंबा म्हारा है।	६ वा कुण जावै है ?
८ अै गायां म्हारी है।	
९ वे कुण जावै है ?	

१० बुधा वीरेश्वरजी माराज आया. आप म्हारा गुरु है।

ऊपरला वाक्यां रे मांय औ ओ वा अै आ वे आ वा आप [राजा रावलै, पिडा, डीलां, सरदार, पोते] अैड़ा सरवनाम है जिणां सूं कोई दूसरी अथवा नजीकरी बुसत री तथा प्राणी व गिनख री कांनी संकेत करै है। अैड़ा सरवनांमां ने निश्चैवाची [निश्चय-वाचक] सरवनांम केवै है।

औ, यौ, ई, ईं, ओ, वो, ऊ, वो, वीं, वी, वै, अै, अैड़ा सरवनांम है जिके एक बुसत, प्राणी व आसामी रे वास्तै कांम आवै है नै अै, वै, वै, ई, सरवनांम बहुवचन में कांम आवै है। आ घणकरो आगलै ने पाछलै वाक्य रे बदलै कांम में आवै है। ज्यां

१ हूं आ चाऊं हूं के कवता थे पढो।
२ वे अठै कद आया, आ म्हने खबर नईं।

आप, राज, रावलै, सरदार, पिंडां, डीलां, पोते, हजूर, सरवनांम सब्दां रो उपयोग आदर नै सतकार सारू होवै है इण कारण सूं इणां सरवनांमां ने आदर सूचक सरवनांम केवै है।

मध्यम पुरस में आप, राज, रावलै आदि थे और थांरै, बदलै उपयोग होवै है। अन्य पुरस में वे, ने, श्रे, इणां सब्दां री जागा उणीज अरथ में कांम आवै है नै उण वगत हाजर आसामी री तरफ इसारो कियो जावै है।

१ खेत में कोई गयो होवैला।
२ कोई कोई मांस खावणो चोखो नईं समझै है।
३ थांरी मूठी में कांईं [की, कईं] है?
४ म्हारी मूठी में कीं [कईं] कोयनी।

ऊपर लिखियोड़ा बारीक आखर वाला श्रैड़ा सरवनांम सब्द है-जिके किणी निश्चित जीवधारी अथवा वुसत रे बदलै नईं आया है। श्रैड़ा सरवनांमां ने अनिश्चयवाची [अनिश्चय वाचक] सरवनांम केवै है।

कोई रो प्रियोग सगस अथवा मोटा-जीवधारी रे सारू होवै है नै की, कंई, रो प्रियोग चीज रे सारू होवै है, घणाकरो कंई सरवनांम सब्द दो बार साथै प्रियोग कियो जावै है, जिणरो अरथ

कदेई कम सूं नै कदेई आदर सारू होवै है। ज्यां: कोई कोई तीरथ जात्रा करणी चोखी समझै है। कोई कोई रात रो भोजन करणो ठीक नहीं समझै है।

कोई रे साथे जद जद हर अथवा सब सब्दां रो प्रियोग कियो जावै है। ज्यां: हर कोई, सब कोई। वणी पकावट सारू कदेई कदेई कोई रै साथे सो, सी सब्द रो प्रियोग कियो जावै है। ज्यां: कोई सो कांम आप करो। इणां मांय सूं कोई सी पोथी उठा लो।

अनिश्चय रे मांय निश्चय अथवा पकावट प्रगट करण सारू कोई न कोई रो उपयोग कियो जावै है।

ज्यां: कोई न कोई ओ कांम करेला।

कुछ सरवनांम रो प्रियोग राजस्थानी में हिन्दी रे मुजब ई होवै है।

थे खुद ओ कांम कियो है।

मैं खुद घरै हुतो।

हूं आप उठै इज हुतो।

दरबार पिंडां उठै पधारिया होवैला।

ऊपरला बारीक आखर वाला सब्द संग्या अथवा सरवनांम री चरचा करण सारू उणाइज वाक्य रै मांय आप, खुद ने पिंडां सरवनांम सब्द प्रियोग में आया है। पैला वाक्य रे मांय खुद, थे सरवनांम री चरचा सारू आयो है। दूजा वाक्य रे मांय खुद म्हैं

सरवनांम री चरचा रे सारू नै तीजा वाक्य रे मांय आप, हूं सरव, नांम री चरचा सारू आया है। इण इज तरै सूं चौथोड़े वाक्य रे मांय पिंडां सरवनांम दरबार संग्या री चरचा रे सारू आयो है। वाक्यां रे मांय पैला आयोड़ी संग्या अथवा सरवनांम री चरचा सारू आवण वाला सरवनांम ने निजवाची सरवनांम केवै है। ऊपरला वाक्यां रे मांय खुद, आप, पिंडां निजवाची सरवनांम है। अै सरवनांम आदर सूचक सरवनांम सूं जुदा सरवनांम है। आदर सूचक आप, राज, पिंडां आदि केवल मधम पुरस में आवै है, नै निजवाची आप खुद, पिंडां आदि तीनूं ई पुरसां रे प्रियोग में आवै है। आदर सूचक सरवनांम वाक्यां रे मांय अेकलोइज आवै है पण निजवाची आप, पिंडां, खुद आदि सरवनांम संग्या रे समंद सूं आवै है। ज्यां . आप पधारो हूं खुद आऊंला।

निजवाची आप, राज पिंडां खुद आदि सरवनांमां रे साथे इज ईज, हिज, ई, ही जोड़ण सूं इण रो प्रियोग क्रिया विसेसण रे ज्यां हो जावै है। ज्यां : हूं आप इज आऊंला। थूं खुद इज गयो हो।

जिको भणीज सी वो सुख पाई। जकी चावो वा पोथी ले लो!

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां रे मांय पैली रा छोटा वाक्य रे मांय जिको सरवनांम सब्द आयो है नै दूजोड़ा वाक्य रे मांय अेक संग्या सब्द अथवा सरवनांम सब्द आयो है। जिण रे साथे जिको रो समंद है। पैला छोटा वाक्य रा दूजा छोटा वाक्य जिको सरवनांम पैला छोटा वाक्य री पोथी संग्या सूं समंद राखे है

दूजोड़े वाक्य रे मांय प्रथम छोटे वाक्य रे मांय जिको सरवनांम रो सबंध दूजोड़े वाक्य रे ऊ सरवनांम सूं है। इणी तरे सूं तीजोड़े वाक्य रे मांय वो सरवनांम सूं है। इणी तरे सूं तीजोडे वाक्य रे मांय प्रथम छोटै वाक्य जकी सरवनांम रो सबंध इणी वाक्य वा सरवनांम सूं है इणां जको, जिका, जका, जिकी सरवनांमां ने नांम सू है। इण, जको, जका, जिको, जिकी सरवनांमां ने सबंध वाची सरवनांम केवै है क्यांके औ सरवनांम आगला अथवा लारला छोटा वाक्यां रे मांय आय बीजोड़े छोटा वाक्यां री संग्या या सरवनांमां सूं सबंध राखे है ने दोनूं ई छोटा वाक्यां ने समुच्चय बोधक अव्यय रे समांन जोड़ै है। सबंधवाची सरवनांम नीचे मुजब है:

पुल्लिंग	स्त्री लिंग
जको, जिको, जका, जिका	जकी, जिकी

इणां रे सिवाय जिण, जीं सरवनांम रो उपयोग दोनूं ई लिंगां में होवै है।

सबंधवाची सरवनांम जिण संग्या सूं सबंध राखे है, वा घणकरी उण रे साथ जुड़ियोड़ी रेवै है। जिण सूं सबंधवाची सरवनांम रो उपयोग विसेसण रे समांन होवै है। ज्यां:

जका बात होणी ही वा होय गई। जिको आदमी कूड़ बोलै वो भरोसै लायक नईं होवै है।

कदेई कदेई जिण रो उपयोग अेक वाक्य रे वदलै ई होवै है। ज्यां :

उण आपरा भाई ने बारै काड दियो जका वौत खोटो कोनी।
मिनख ने साच बोलणो चाइजे जिण सूं उण रो भरोसो होवैं।

जद कद अनिस्चय वाची सरवनांमां रो उपयोग जको, जका, जिण, जीं, समंदवाची सरवनांमां रे साथे होवै है तद, जिको, जका, जिण रो रूप जी आखर में आय जावे है। ज्यां :

जिकोई आई तिकोई खाई।

घणी वात अथवा जुदाई बतावण सारू जिको, जका, सरवनांमां री पुनरुक्ती होवै है। ज्यां : जके जके आई वे वे पढी।

१. चौंतरी माथै कुण ऊबो [भो] है ?
२. उठै कुण आयो हो ?
३. ताव कांई चीज है ?
४. थूं कांई करे है ? ?
५. ओ की करें है ?
६. उठे कांई पड़ियो है ?

ऊपरला वाक्यां रे मांय कुण, की, कांई, कई सरवनांम अग्यात पदारथ ने जीवधारी बावत सवाल पूछण ने आया है। इण कारण सूं अैड़ा सरवनांमां नें प्रस्नवाची सरवनांम केव है। इण सरवनांमां रे प्रियोग में उतरो ईज फेर है जितरो कोई ने की

कुछ सरवनांम रे प्रियोग में है। ज्यां : कुण गयो ? कोई गयो ? कांई पड़ियो ? कीं पड़ियो ?

कुण जीवधारी नै घणकरो मिनख रे सारू प्रियोग मे आवै है। काई छोटा जीवधारो अथवा अपमान रे सारू आवे है।

निरधारण रे अरथ कुण कियो, किसो, कयो सरवनांमां रो उपयोग [प्राणी, पदार्थ, धर्म] होवे है। जद कद कियो, किसो कयो रो उपयोग नईं रे जेड़ो होवै है तद अेई सरवनांम क्रिया विसेसण रे समांन उपयोग में आवै है। ज्यां : ओ कांम किसो दोरो है ? आप रे सारू ओ कांम किसो [कियो, कयो] मोटो कांम है ?

कुण रो प्रियोग बहुवचन नै आदर सारू ई कियो जावे है। ज्यां : हमार अठे कुण आया हा ? थांरे उठे कुण है ?

विध विध रे अरथ में कुण, किसो [कियो, कयो] सरवनांमां री पुनरुक्ती होवै है। ज्यां : हमार कुण कुण पंचायती में है ? आपरा किसा [किया, किया, कया, कया] किसा लड़का पढियोड़ा है ?

लत्तण ने गुण पहिचांणण सारू की, कांई, कईं रो प्रियोग जीवधारी पदारथ ने धरम तीनां रे वासते होवा करे है। ज्यां : मिनख कांई [की, कईं] है ? वृदल काई [की, कईं] है ?

न्पत्तूं भो ने जरूरत रे अरथ रे मांय कांई. की नै कंईं रो

प्रियोग क्रिया विसेम्मण ज्यूं होवै है। ज्यां : ओ मनै कांई [की , कंईं] पढाई [पढ़ायै]।

पूरे वाक्य रै समंद में सवाल करण सारू कांई [की , कंईं] रो प्रियोग विस्मयादि बोधक जैड़ो होवै है। ओ मंदर थने दिसे कोयनी कांई। कांई [की , कंईं] रो प्रियोग कदेई कदेई समुच्चय बोधक अव्वय रै ज्यां होवै है। कांई राजा ने कांई रंक [की , कंईं] सबां ने अेक दिन मरणो है। कांई छोटा ने कांई मोटा सैंग आ गया।

कांई कईं री पुनरुक्ति सूं विवधता रो बोध होवै है। ज्यां : थूं जोधपुर सूं कांई कांई [की की, कईं कंईं] लायौ है ?

हालत अथवा अवस्था प्रगट करण में कांईं [कंईं, की] रो प्रियोग होवै है। ज्यां: अेक घड़ी रै मांय कांईं रो कांईं होय गयो।

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां रे मांय सरवनांमां रा भेद बतावौ।

औ सांवल रो भाई है।

वौ राधाकिसन रो काको है।

आ म्हारी पोथी है।

भिखारी खनै की कोयनी।

म्है थनै कांईं केवां।

थूं गुरुजी रो केणां क्यां नी मांनौ ?

अपां कांई हा नै कांई होय गया।

सरवनांमां री कारक रचना ।

विना विभक्ति रा बहु वचन ।

उत्तम पुरस

अेक वचन	बहु वचन
म्हैं	म्हे
हूं	म्हां
मूं	

मध्यम पुरस

अेक वचन	बहु वचन
तूं	थे
थूं	थां
	तमै

अन्य पुरस

अेक वचन	बहु वचन
वो	वे
ओ	ओ, वे
बो	वै
वैं	व्यां

वीं	व्यां
वीं	व्यां
ऊ	अै
औ	अै

अन्य पुरस

अेक वचन	बहु वचन
कुण	कुण
आप	आप
जको	जकै
कांई, कंई, की	कांई, कंई, की
कोई	कोई
कीं	कीं
कुछ	कुछ

पुरस वाचक, निस्चय वाचक नै संबंध वाचक सरवनांमां नै छोड़ बाकी रा सारा सरवनांम बिना बिभक्ति अेक वचन नै बहु-वचन में बराबर इज होवै है।

सरवनांमां री कारक रचना रा रुप

उत्तम पुरस हूं अथवा म्हैं सब्द :

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	हूं, मूं, म्हैं,	म्हे, म्हां, अमे, अमां।
करम	म्हनैं, मी, मोनूं, मोकूं, मोको म्हनां, मनां।	म्हानैं, म्हांनैं।

करण	म्हासूं, म्हारा सूं	म्हांसू, म्हांरा सूं
	म्हारै सूं, म्हैं सूं	म्हांरै सूं, म्हांरा ऊं
	म्हाराऊं, म्हैंऊं	म्हांणैऊं, म्हांऊं
	म्हारैऊं, म्हाऊं	म्हांतीं
	म्हैती. मोसूं	
संप्रदान	म्हारै [सारू]	म्हांरै [सारू] म्हांणै
	म्हांजै, असांजै	असांजै, म्हांजै, म्हांनै
	म्हाकै	म्हांकै
	सारू, आंटै, माटै, वासतै, काज. वा, छतै, वाअतै तांईं।	
अपादान	म्हासूं, म्हारासूं	म्हांसूं, म्हांरा सूं
	म्हारै सूं, म्हैं सूं	म्हांरैसूं, म्हांराऊं
	म्हाराऊं, म्हैंऊं	म्हांणेउं, म्हांऊं
	म्हारेऊं, म्हाऊं	म्हांती, अमीणा।
	म्हैती, मोसूं, अमीणो।	
संबंध	म्हारी, म्हाकी,	म्हांरो, म्हांरी, म्हांको
	म्हाआली,	
	म्हांअली।	

	म्हारो, म्हाको, म्हाअलो, म्हैंआलो।	म्हांकी, म्हांअलो,
	मांणो, म्हाअजो, म्हाअजी।	म्हांअली, म्हांअजो।
	रा, री, रै, रो, का, की, कै, को ज, जा, जी, जो।	म्हांणो, म्हांणी।
अधिकरण	म्हारे मांय, म्हासें म्हारा मांय	म्हांसें, म्हांरे मांय, म्हांरामें, म्हांरे में

खनै, कनै, नलै, नकै, गोडै, गडै, माथ, ऊपर, ऊपरे, तीरे, में, मांय, तांई, तक, पास, पाहड़ै, पाहै, पसवाड़ै नजीक।

मध्यम पुरस सरवनांम तूं अथवा थूं सब्द :

	अेक वचन	बहु वचन
करता	तूं, थूं, तैं, थैं,	त्यां, थे, थां, तमैं, तमां
करम	थनैं, तूनै, तनैं, तेनैं, थनां, तनां	थांनैं, थांना, थांकूं
करण	थारा सूं, थारे सूं, थारेऊं, थैंती	थांरासूं, थांरेसूं

	थाराऊं, थासूं, थाऊं,	थांरेऊं, थांराऊं, थांसूं
	थैंसूं, थैऊं, थैंहूंत	थांऊ, थांहूंत
संप्रदांन	थारै [सारू] थांणै, तांजै,	थांरै, थांणै, थां वासते
	सारू, आंटै, माटै, वासतै, काज, वाडतै, वाअतै, तांई	
अपादांन	थारा सूं, थारैसूं, थारैऊं, थैंती	थांरासू, थांरैसूं
	थाराऊं, थासूं, थाऊं	थांरैऊं, थांराऊं, थांसू
	थैंसू, थैंऊं, थैंहूंत।	थांऊं, थांहूंत
संबंध	थारो, तेरो, थारी, तेरी	थांरो, थांणै, थांआलै
	थाआलो, थावालो	थांआला, थांअली
	तिहारो, ताहरो, तोहारो	
	तोहालो, तिहालो	
	तमीणो. थैं वालो	
	तोआलो, थावालो।	
अधिकरण	थारा में, थामें, थारे मांय	थांमें, थांरै मांय
	तोमें, तेरे मां,	थांरा में, थांरा मांय

उतम पुरस सरवनांम नै मध्यम पुरस सरवनांम स्त्री लिंग ने पुल्लिग दोनां ही लिंगां में उपयोग होवै है। सरवनांम में संबोधन कारक नहीं होवै है

निस्चय वाची सरवनांमां री कारक रचना :

पुल्लिग सब्दः वो पैलो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
कर्ता	वो , उण , वण	वे , उणां , वणां
करम	उण नैं , वण नै , नां , नूं [चिह्न]	उणां नै , वणां नै [नां, नूं]
करण	उण सूं , वण सूं उण ऊं , वण ऊं ,	उणां सूं , वणां सूं । उणां ऊं , वणां ऊं ।
संप्रदान	उण रे , वण रे [वास्ते , सारू]	उणां रे , वणां रे [वास्ते , सारू]
अपादान	उण सूं , वण सूं । उण ऊं , वण ऊं ।	उणां सूं , वणां सूं उणां ऊं , वणां ऊं ।
संबंध	उण रो , वण रो	उणां रा , वणां रा । रा , री , रे , रो , का , की , के , को ।
अधिकरण	उण में , वण में ,	उणां में , वणां में ,

खनै , नखै , गोडै आदि अधिकरण कारक रा चिह्न ।

दूजौ रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	ओ	ओ
करम	उअैनां, उवैनां	उआंनां, उवांनां।
करण	उवै सूं, उवै ऊं, उअै सूं, उअै ऊं,	उआं ऊं, उआं सू, उवां सूं, उवां ऊं।
संप्रदान	उवै रे, उअै रे [आंटे]	उवां रे, उआं रे [आंटे]
अपादान	उवै सूं, उवै ऊं, उअै सूं, उअै ऊं	उवां सूं, उवां ऊं, उआं रो, उवां रो।
संबंध	उवै रो, उअै रो	उआं रो, उवां रो।
अधिकरण	उवै में, उअै में	उवां में, उआं में।

तीजौ रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	वो वणी	वे
करम	वणी ने	वणां नै।
करण	वणी ऊं, वणी सूं	वणां ऊं, वणां सूं
संप्रदान	वणी रे [वास्ते, सारू]	वणां रे [वास्ते, सारू]

अपादांन	वणी ऊं, वणी सूं	वणां ऊं, वणां सूं।
संबंध	वणी रो	वणां रो।
अधिकरण	वणी में	वणां मे

चौथो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	वीं, बीं	वियां, बियां, वां, बां।
करम	वींनै, बींनै, वींको, बींको	वांनै, बांनै, वांको, बांको।
करण	वीं सूं, बीं सूं वी ऊं, बी ऊं	वां सूं, बां सूं। वां ऊं, बां ऊं।
संप्रदांन	वीं रे, बीं रे [वास्ते, सारू]	वां रे, बां रे [वास्ते, सारू]
अपादांन	वीं सूं, बीं सूं। वीं ऊं, बीं ऊं।	वां सूं, बां सूं, वां ऊं, बां ऊं।
संबंध	वीं रो, बीं रो, बीं को, वीं को।	वांरो, बांरो, वांको, बां को।
अधिकरण	वीं में, बीं में	वां में, बां में।

पांचमो रूप

कारक	अेक वचन	बहुवचन
करता	वैं, वैं, वै	वे, वे,
करम	वै, वै, नैं, वैंनैं	वां नैं, वां नै।
करण	वैंती. वैं सूं, वै ऊं वै सूं, वे ऊं,	वां सूं, वांऊं, वांसूं वां ती, वां ऊं।
संप्रदांन	वै, वैं रे, वैंरे [वास्ते]	वां रे [सारू] वां रे, वां
अपादान	वै, वैं सूं, वैं ऊं, वै ऊं, वं सूं।	वां सूं, वां ऊं। वां ऊं, वां सूं।
संबंध	वै, वैं रो, वै रो	वां रो, वां रो।
अधिकरण	वैं, वैं में, वै में	वां में, वां में।

छट्टौ रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	ऊ	वे

बाकी रा रूप प्रथम नंबर सूं मिलता जुलता होवै है।

सातमौ रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	वीं, वीं	व्यां, वियां, वियां, व्यां।

कर्म	वीं नैं, वीं नें	व्यां नैं, वियां नैं, व्यां नैं वियां नैं।
करण	वीं सूं, वीं सूं	व्यां सूं, वियां सूं, व्यां सूं, वियां सूं।
	वीं ऊं, वीं ऊं	व्यां ऊं, विया ऊं, व्यां ऊं वियां ऊं।
संप्रदान	वीं रे, वीं रे	व्यां रे वियां रे, व्यां रे, वियां रे।
अपादान	वीं सूं, वीं सूं	व्यां सूं, वियां सूं, व्यां सूं, वियां सूं।
	वीं ऊं, वीं ऊं	व्यां ऊं, बिया ऊं, व्यां ऊं, वियां ऊं।
संबंध	वीं रो, वीं रो	व्यां रो, वियां रो, व्यां रो, वियां रो।
अधिकरण	वीं में, वीं में,	व्यां में, वियां में, व्यां में, वियां में।

स्त्री लिंग

कारक	अेक वचन	बहु वचन
कर्त्ता	वा, बा, ओ।	वे, वे, ओ।

बाकी रा कारक रूप ऊपर मुजब होवै है।

आठमौ रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	बो , बीं	बा
करम	बिये नै	बां नैं , बियां नैं ।
करण	बिये सूं , बिये ऊं	बां सूं , बां ऊं , बियां सूं , बियां ऊं ।
संप्रदान	बिये रे [सारू]	बां रे [सारू]
अपादान	बिये सूं , बिये ऊं	बां सूं , बां ऊं , बियां सूं , बियां ऊं ।
संबंध	बिये रो	बां रो , बियां रो ,
अधिकरण	बिये में	बां में , बियां में ।

निकटवर्ती निस्चय वाची सरवनांम

पैलो रूप : औ

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	औ, इण	अै , आ , इणां
करम	इण नैं	इणां न ।
करण	इण सूं , इण ऊं	इणां सूं , इणां ऊं ।

संप्रदान	इण [सारू]	इणां [सारू]
अपादान	इण सूं, इण ऊं,	इणां सूं, इणां ऊं।
संबंध	इण रो	इणां रो।
अधिकरण	इण में	इणां में।

दूजौ रूप : यो

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	ये, यो, अणी,	ये, यो, अणां।
करम	अणी नैं	अणां नैं।
करण	अणी सूं, अणाऊं, अणीती, अणीहूंत।	अणां सूं, अणां ऊ अणांती, अणांहूंत।
संप्रदान	अणी [सारू]	अणां [सारू]
अपादान	अणीसूं, अणीऊं, अणीती।	अणांसूं, अणांऊं, अणांती।
संबंध	अणी रो	अणां रो।
अधिकरण	अणी में	अणां में।

तीजौ रूप :

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	ईं, ई	यां

करम	ईं नैं, ई नैं	यां नैं, यां को।
करण	ईं सूं, ई सूं, ईं ऊं, ई ऊं।	यां सूं, यां ऊं
संप्रदान	ईं रे, ई रे	यांरे, यांकै
अपादान	ईंसूं, ईसूं, ईंऊं, ईऊं	यांसूं, यांऊं
संबंध	ईंरो, ईरो, ईंको, ईको	यांरो, यांको
अधिकरण	ईं में, ई में,	यां में।

चौथौ रूप :

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	औ	अै
करम	इयै नां	इयां नां
करण	इयै सूं, इयै ऊं, इयै सां	इयां सूं, इयां ऊ, इयां सां।
संप्रदान	इयै रै, ईयै रै [आंटा]	इयां रै, ईयां रै, [आंटा]
अपादान	इयै सूं, ईयै ऊं ईयै सूं, इयै ऊं	इयां सूं, ईयां सूं। इयां ऊं, ईयां ऊं।
संबंध	इयै रो, ईयै रो	इयां रो, ईयां रो।

अधिकरण	इयै में, ईयै में	इयां में, ईयां में।

पांचमौं रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	औ	अै
करम	अै नैं	आं नै,
करण	अै सूं, अै ऊं,	आं सूं, आं ऊं।
संप्रदांन	अै रै [सारू]	आं रै [सारू]
अपादांन	अै सूं, अैं ऊं,	आं सूं, आं ऊं,
संबंध	अैं रो,	आं रो
अधिकरण	अैं में।	आं में।

छट्ठौ रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	ये, यो	यां, ये
करम	या नैं, याको	यां नैं, यांको।
करण	या सूं, या ऊं	यां सूं, यां ऊं।
संप्रदांन	या रै	यां रै

अपादान	या सूं, या ऊं	यां सूं, यां ऊं,
संबंध	या को, या रो	यां को, यां रो,
अधिकरण	या में	या में,

स्त्रीलिंग

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	आ, ओ या	अै, ये।

बाकी री कारक रचना पुल्लिंग रै मुजब होवै है।

संबंध वाची सरवनांम री कारक रचना

पैलो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	जिको, जको	जिकै, जकै, जिकां
करम	जिकण नैं, जकण नै	जिकां नां, जकां नां
करण	जिकण सूं, जकण सूं	जकां सूं, जिकां सूं,
संप्रदान	जकण रे [सारू] जिकण रै	जकां रै, जिकां रै [सारू]
अपादान	जकण सूं, जिकण सूं, जकण ऊं, जिकण ऊं,	जकां सूं, जिकां सूं जकां ऊं, जिकां ऊं

संबंध	जकण रो, जिकण रो,	जकां रो, जिकां रो
अधिकरण	जकण में, जिकण में	जकां में, जिकां में।

दूजौ रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	जको, जिको, जणी	जकां, जिकां
करम	जणी नैं	जणां नैं
करण	जणी सूं, जणी ऊं	जणां सूं, जणां ऊ
संप्रदान	जणी [सारू]	जणां [सारू]
अपादान	जणी सूं, जणी ऊं,	जणां सूं, जणां ऊं
संबंध	जणी रो	जणां रो
अधिकरण	जणी में	जणां में

तीजौ रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	जको, जिको, जीं	ज्यां, जिंयां
करम	जीं नैं	ज्यां नैं, जिंयां नैं
करण	जीं सूं	ज्यां सूं, जिंयां सूं

संप्रदान	जीं [सारू]	ज्यां [सारू] जियां [सारू]
अपादान	जीं सूं , जीं ऊं ,	ज्यां सूं , ज्या ऊं
संबंध	जीं को , जीं रो ,	ज्यां रो , जियां रो
अधिकरण	जीं में	ज्यां में , जियां में

चौथो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	जिण	जिणां
करम	जिण नैं	जिणां नैं
करण	जिण सूं , जिण ऊं ,	जिणां सूं , जिणां ऊं
संप्रदान	जिण [सारू]	जिणां [सारू]
अपादान	जिण सूं , जिण ऊं	जिणां सूं , जिणां ऊं
संबंध	जिण रो	जिणां रो
अधिकरण	जिण में	जिणां में ।

पांचमो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	जै , जै	जां

करम	जैं नैं, जै नैं	जां नैं
करण	जं सूं, जै सूं	जां सूं
संप्रदान	जैं रै [सारू] जै रै	जां रैं
अपादान	जैं सूं, जै सूं	जां सूं
संबंध	जैं रो, जै रो	जां रो
अधिकरण	जं में, जै में	जां में

छट्ठौ रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	ज्यो	ज्यां
करम	ज्यो नैं	ज्यां नैं
करण	ज्यो सूं	ज्यां सूं
संप्रदान	ज्यो रै [सारू]	ज्यां रै [सारू]
अपादान	ज्यो सूं	ज्यां सूं
संबंध	ज्यो रो	ज्यां रो
अधिकरण	ज्यो में	ज्यां में।

सातमौ रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	जिकै	जिकां
करम	जिकै नें	जिकां नां
करण	जिकै सूं , जिकै ऊं,	जिकां सूं , जिकां ऊं,
संप्रदान	जिकै [सारू]	जिकां रै [सारू]
अपादान	जिकै सूं , जिकै ऊं,	जिकां सूं , जिकां ऊं
संबंध	जिकै रो	जिकां रो
अधिकरण	जिकै में	जिकां में

स्त्रीलिंग में करता कारक एक वचन में जिका नै बहु वचन में जिकै होवै है। बाकी रा कारकां में पुल्लिंग रै जैड़ा ही रूप होवै है।

पुल्लिंग सब्द तिको

पैलो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	तिको , तिण	तिकां , तिणां

करम	तिण नैं	तिणां नैं
करण	तिण सूं , तिण ऊं,	तिणां सूं , तिणां ऊं,
संप्रदान	तिण रै	तिणां रै
अपादान	तिण सूं , तिण ऊं	तिणां सूं , तिणां ऊं
संबंध	तिण रो	तिणां रो
अधिकरण	तिण में	तिणां में,

दूसरो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	तिको , तिकण	तिकां
करम	तिकण नैं	तिकां नै
करण	तिकण सूं , तिकण ऊं,	तिकां सूं , तिकां ऊं
संप्रदान	तिकण रै [सारू]	तिकां रै [सारू]
अपादान	तिकण सूं , तिकण ऊं	तिकां सूं , तिकां ऊं
संबंध	तिकण रो	तिकां रो
अधिकरण	तिकण में	तिकां में

तीजो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	ती	तियां , तीयां , त्यां

करम	तीं नैं	तियां नैं, तीयां नैं, त्यां नैं
करण	तीं सूं, तीं ऊं	तियां सूं, तीयां सूं, त्या सूं तियां रै, तीयां रै, त्यां रो
संप्रदान	तीं रै [सारू]	तियां रै, तीयां रै, त्यां रै [सारू]
अपादान	तीं सूं, तीं ऊं,	तियां सूं, तियां ऊं, त्यां ऊं तियां रो, तीयां ऊं, त्यां सूं
संबंध	तीं रो	तियां रो, तीयां रो, त्यां रो
अधिकरण	तीं में	तियां में, तीयां में, त्यां में

चौथो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	तिको	तिकां
करम	तिकैं नैं, तिकैं नां,	तिकां नें, तिकां नां,
करण	तिकैं सूं, तिकैं ऊं,	तिकां सूं, तिकां ऊं,
संप्रदान	तिकैं [सारू]	तिकां रैं [सारू]
अपादान	तिकैं सूं, तिकैं ऊं	तिकां सूं, तिकां ऊं
संबंध	तिकैं रो	तिकां रो
अधिकरण	तिकैं में	तिकां में।

तीजो रूप

कारक	एकवचन	बहु वचन
करता	कै	कै
करम	कै नां	कै नां
करण	कैऊं, कैस	कैऊं, कैसूं
संप्रदान	कै रो	कै रो
अपादान	कैऊं, कैसूं,	कैऊं, कैसूं
संबंध	कैरो	कैरों
अधिकरण	कै में	कै में

चौथो रूप

कारक	एक वचन	बहु वचन
करता	कुण, कणी	कणां
करम	कणी नैं	कणां नैं
करण	कणी सूं, कणी ऊं,	कणां सूं, कणां ऊ
संप्रदान	कणी रे [सारू]	कणां [सारू]
अपादान	कणी सूं, कणी ऊं,	कणां सूं, कणी ऊं

संबंध	कणी रो	कणां रो
अधिकरण	कणी में	कणां में

पांचमो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	कुण, कीं	कुण, कीं
करम	कि नैं, कीं नैं	क्यां नैं
करण	कि सूं, कि ऊं, कीं सूं, कींऊं,	क्यां सूं, क्यां ऊं
संप्रदान	कि रै, कीं रै [सारू]	क्यां रै, क्यां कै [सारू]
अपादान	कि सूं, कि ऊं, कीं सूं, कीं ऊं,	क्यां सूं, क्यां ऊं ।
संबंध	कि रो, कि को, कीं रो, कीं को,	क्यां रो, क्यां को ।
अधिकरण	कि में, कीं में	क्यां में ।

छट्टो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	कुण, कियो	कुण, कियां, किया
करम	कियै नैं	कियां नै ।
करण	कियै सूं, कियै ऊं,	कियां सूं, कियां ऊं ।
संप्रदान	कियै रै [सारू]	कियां रै [सारू]

अपादान	किये सूं, किये ऊं,	कियां सूं, कियां ऊं।
संबंध	कियै रो	कियां रो।
अधिकरण	कियै में	कियां में।

सातमं रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	कयो, कयै	कया, कयां।
करम	कयै नै, कयै नां	कयां नां।
करण	कयै सूं	कयां सूं।
संप्रदान	कयै [सारू]	कयां रै [सारू]
अपादान	कयै ऊं	कयां ऊं।
संबंध	कयै रो	कयां रो।
अधिकरण	कयै में, कयै मां	कयां मां।

पांचमो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	तियो, तीयो, त्यो	तियां, तीयां, त्यां
करम	तियै नैं, तीयै नैं, तियां नैं, तीयां नैं, त्यां नैं त्यो नैं।	

करण	तियै सूं, तीयै सूं त्यो सूं, तियै ऊं, तीयै ऊं, त्यो ऊं।	तियां सं, तीयां सूं, त्यां स, तियां ऊं, तीया ऊं, त्यां ऊं
संप्रदान	तियै रै, तीयै रै, त्यै रै [सारू]	तियां रै, तीयां रै, त्यां रै, [सारू]
अपादान	तियै सूं, तीयै सूं त्यै सूं, तीयै ऊ तियै ऊं, त्यै ऊं	तियां सूं, तीयां सूं, त्या सूं, तियां ऊं, तीयां ऊं, त्या ऊं
संबंध	तियै रै, तीयै रौ, त्यै रौ।	तियां रौ, तीयां रौ, त्यां रौ
अधिकरण	तियै में, तीयै में, त्यै में	तियां में, तीयां में, त्यां में

नोट: हिन्दी रै सो रै वासते राजस्थानी रै मांय तिको नै तिकण रो प्रियोग है। इण तिकण रा रूप केई वो, ओ, उं, ऊ रै रूपां सूं मिलता-जुलता होवै है इण कारण सूं तिकण रा वे रूप नईं लिखिया गया है। जिकै, वो, उ, ऊ, नै ओ रे रूपां सूं मिलता जुलता है।

प्रस्नवाची सरवंनाम सब्दां री कारक रचना

पैली रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	कुण	कुण
करम	कुण नैं	कुण नैं, नां।
करण	कुण सूं, कुण ऊं	कुण सूं, कुण ऊं
संप्रदान	कुण रै [सारू]	कुण रै [सारू]
अपादान	कुण सूं, कुण ऊं [सां]	कुण सूं, कुण ऊं,
संबंध	कुण रो	कुण रो
अधिकरण	कुण में	कुण में

दूजो रूप

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	कुण, किण	कुण, किणां
करम	किण नैं	किणां नैं
करण	किण सूं, किण ऊं	किणां सूं, किणां ऊं

संप्रदांन	किण रै [सारू]	किणां रै [सारू]
अपादांन	किण सूं , किण ऊं ,	किणां सूं , किणां ऊं
संबंध	किण रो	किणां रो
अधिकरण	किण में	किणां में

आदर सूचक सरवनांम राज सब्द

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	राज	राज
करम	राज नैं , राजनां	राज नैं , राज नां
करण	राज सूं , राज ऊं	राज सूं , राज ऊं
संप्रदांन	राज रै [सारू]	राज रै [सारू]
अपादांन	राज सूं , राज ऊं	राज सूं , राज ऊं
संबंध	राज रो , राज को	राज रो , राज को
अधिकरण	राज में	राज में ।

आदर सूचक सरवनांमः रावलै सब्द

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	रावलो	रावलै

करम	रावलां नै	रावलां नै
करण	रावलां सूं , रावलां ऊं	रावलां सूं , रावलां ऊं
संप्रदान	रावलां रे [सारू]	रावलां [सारू]
अपादान	रावलां सूं , रावलां ऊं	रावलां सूं , रावलां ऊं
संबंध	रावलां रो	रावलां रो
अधिकरण	रावलां में	रावलां में

आदर सूचक सरवनांम आप सब्द

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	आप	आप
करम	आप नै	आप नै
करण	आप सूं , आप ऊं ,	आप सूं , आप ऊं
संप्रदान	आप रै [सारू]	आप रै [सारू]
अपादान	आप सूं , आप ऊं ,	आप सूं , आप ऊं
संबंध	आप रो	आप रो
अधिकरण	आप में	आप में

नोट : कदेई कदेई आदर वाची सरवनांम आप रै अगाड़ी बहु वचन में लोग सब्द रो ई प्रियग किया जावै है । इण

तारला आदर वाची सरवनांमां रै सिवाय सरदार, ि
नैं डीलां आदर वाची सरवनांम है नैं इणां रा रूप
राज, रावलै, नैं आप रै समान दोनूं वचनां में होवै है

निजवाची खुद नै आप सरवनांम सब्द

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	आप खुद	आप खुद
करम	आप नैं, खुद नै	आप नै, खुद नै
करण	आप सूं, खुद सूं,	आप सूं, खुद सूं
संप्रदान	आप रै [सारू] खुद रै [सारू]	आप र [सारू] खुद रै [सारू]
अपादान	आप सूं, खुद सूं	आप सूं, खुद सूं
संबंध	आप रो, खुद रो,	आप रो, खुद रो
अधिकरण	आप में, खुद में	आप में, खुद में।

अनिस्चय वाची सरवनांम कोई सब्द

कारक	अेक वचन	बहु वचन
करता	कोई	कोई

करम	कोई नै	कोई नै
करण	कोई सूं , कोई ऊं	कोई सूं , कोई ऊं
संप्रदांन	कोई रै [सारू]	कोई रै [सारू]
अपादांन	कोई सूं , कोई ऊं ,	कोई सूं , कोई ऊं ।
संबंध	कोई रो , कोई को	कोई रो , कोई को
अधिकरण	कोई में ,	कोई में ।

नोट : अनिस्चय वाची कीं , कंईं सब्दां री राजस्थांनी में कारक रचना नईं होवै है अै सरवनांम सब्द केवल करता कारक में अेक वचन में इज रेवै है ।

प्रस्नवाची सरवनांम कांई , की , कऊं री कारक रचना राजस्थांनी में नईं होवै है अे सरवनांम ई केवल अेक वचन में ही विभक्ति रहित प्रियोग होवै है ।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा सरवनांम सब्दां री व्याख्या करो :

१. अेड़ो कयोड़ो आपने छोको नईं दीखे ।

२. ईसवर रे सिवाय आपांणे कोई नईं है ।

३. वो इज चोखो है जिको किणी सूं वैर नहीं राखै ।

४. संसार में एक आवै ने एक जावै है ।

५. जिको आदमी जिण सूं राजी रेवै वो जरूर उण नै मिलै है।

६. रीस री वेला म्हारे सूं कई कईजै कोयनी।

७. सेंग आपो आप रो कांम करै है।

८. आप म्हनैं वा चीज उण रै खनैं सूं दिराय देजो।

९. थें कोई रै आगे झूठ नहीं बोलो हो।

१०. वो उण नै बुलावे है।

पांचमों अध्याय

विसेसण नै विसेसण रा भेद

१ : गुण वाची विसेसण

१ खाटो आंबो कठा सूं लायो।

२ आ नवी पोथी किण री है।

३ मोवन सीधो छोरो है।

४ औ कालो आदमी है ।

ऊपर बारीक आखरां वाला वाक्यां रे मांय विसेसण संग्याआं सूं संबंध राखतो थको उण रा अरथ रे मांय अेक तरं री नवी बात बतावे है। आंबौ संग्या रे साथे खाटो विसेसण है। पोथी संग्या रे साथे नवी विसेसण है। छोरो संग्या रे साथे सीधो विसेसण नैं आदमी संग्या रे साथे कालो विसेसण है। औ विसेसण संग्याआं रा जुदा जुदा गुण बतावे है। अैड़ा विसेसणां नै गुण वाची विसेसण कैवे है। नीचे लिखियोड़ा सब्द गुण वाची विसेसण हैं :

नैनो, छोटो, मोटो, बड़ो, बुरो, भूंडो, खोटो, ऊंचो, नीचो, चोखो, फीरो, खाटो, मीठो. कड़वो, कसैलो, कालो पीलो, रातो, धोलो, समझणो, मूरख, भणियो, ढोठ, चौड़ौ, लम्बौ, पुराणो, नवो, नयो, जूनो, ताजो, सीधो, साधो, भोलौ आदि ।

२ : संख्या-वाची विसेसण

१ म्हारे खनै पांच रुपिया है ।

२ इठै केई आदमी आवैला ।

३ ख रोल साढ़ पत्रा ग ग कपड़ो लावो ।

४ जोधपुर में हजारां आदमी भणियोड़ा है ।

५ उम्मेद नगर रे मेलां में सैकड़ां दुकानां खुली है ।

६ उठै बीसेक आदमी भेला हुया हा ।

७ चौंपासणी गांम अठा सूं दोयेक मील है ।

८ अठा सूं पांचमौं घर रामदयाल दरजी रो है ।

ऊपरला वाक्यां रे मांय बारीक आखरां वाला सब्द विसेसण संग्याआं री संख्या प्रगट करै है । अैड़ा विसेसण संख्या वाची विसेसण कैवीजै है । संख्या वाची विसेसण रा भाग नीचे मुजब है :

१. निस्चयवाची : अेक, दोय, तीन, च्यार ।

२. अनिस्चयवाची : केई, घणा, थोड़ा, वौत, सैंग ।

निस्चय वाची संख्या वाची विसेसण रा भेद :

१. पूरणांक वाची : अेक, दोय, सौ, हजार' लाख ।

२ अपूरणांक वाची : पाव , आधो , पूण , सवा , ढाई

अेक प्रत्यय वाला सब्द : दसेक, पांचेक, सातेक आदि ।

क्रमवाची : पैलो , दूजौ , तीजौ , चौथौ , पांचमौं आदि ।

आव्रतिवाची : इकेवड़ा , दोवड़ा , तेवड़ा , चौवड़ा आदि ।

समूहवाची : दोनां, तीनां, च्यारां, सातां आदि ।

दुनांई , तीनांई , च्यारांई , पांचांई आदि ।

हरवाची : हरेक , प्रतेक , अेक-अेक ।

क्रमवाची : आव्रतिवाची समूमवाची विसेसण पूरणांकवाची ।
विसेसण सूं वणै है ।

पूरणांकवाची , क्रमवाची , आव्रतिवाची , समूहवाची ,

अेक, पैलोड़ो, पैलो, प्रथम, अेक गुणो, अेकलो, पैलड़ो

दोय, बे , बीजोड़ो , बीजौ , दूजौ , दुगणौ बिमणौ , दुनांई ,
दुनां , दोनांई ।

तीन, तीजोड़ौ , तीजो , तिगणौ , तीनोई , तीनां ।

च्यार, चौथोड़ो, चौथ , चौगणौ, च्यारां ।

पांच, पांचमोड़ो, पांचमौं, पांच गुणो, पचगुणौं, पांचांई, पांचां ।

छ, छठौड़ो, छठौ, छगुणो, छऊंई, छवां ।

सात, सातमौड़ो, सातमौं, सातगुणो, सातांई, सातां ।

आठ, आठमौड़ो, आठमौं, आठगुणो, अठगुणो, आठांई, आठ

नव, नवमौड़ो, नवमौं, नवगुणो, नवांई, नवां

दस, दसमौड़ो. दसमौं, दसगुणो, दसांई, दसोई, दसां

अनिश्चयवाची संख्यावाची :

विसेसण घणकरा हिंदी रै ज्यां इज घणां रो बोध करावण में है । ज्यां : संग आदमी, केई फल, घणा घर, अनेक नगर ।

अेक पूरणांकवाची संख्यावाची विसेसण है पण हिंदी रै ज्यां इण रो प्रियोग कोई रै समांन होवै है जिणरो अरथ अनिस्चय-वाची रै ज्यां हो जावै है। ज्यां : अेक दिन ओ गांमई मोटो नगर हो।

कदेई कदेई अेक अेक रो प्रियोग होवै तो इण रो अरथ निस्चय वाची सरवनाम रै ज्यां हो जावै है।

ज्यां : इण आदमी रै दो बेटा है। अेक मास्टर नै अेक वकील। फलांणो [अमुक] ढोंकड़ो रो प्रियोग अनिस्चयवाची रै अरथ में हुवै है। घणकरो कोई रै ज्यां ई प्रियोग होवै है।

ज्यां : थनै आ वात जांणणी चाइजै के फलांणो कैड़ो है। कोई दोय पूरणांक वाची विसेसण साथै साथै प्रियोग में आवण सूं अनिस्चय रो बोध होवै है। ज्यां :- दोय-चार, पांच-दस, दस-वीस, साठ-सितर। संख्या वाची सब्दां रै आगे अेक प्रत्यय लागण सूं घणकरों अनिस्चय वाची विसेसण हो जावै है। ज्यां : पांचेक, सातेक, दसेक आदि।

वीस, पचास, सौ, सैंकड़ा, हजार, लाख नै किरोड़ रै आगे आं प्रत्यय जोड़ण सूं अनिस्चय वाची विसेसण हो जावै है। ज्यां : वीसां, पचासां, सैकड़ां, हजारां, लाखां आदि।

३: परिमांण बोधक विसेसण

१. जो धन दीसै जावतो, तो आधो लीजै बांट।

२. उण रै घर रा सैंग जणा आयगिया।

३. इण रो तो सगोई धन चोर लेगियो।

४. उण घणा मैंनत करी जणां कांम पूरो हुवो।

५. इण में कीं लाभ नईं है।

ऊपरला वाक्यां रे मांय वारीक आखर वाला सब्द सख्या रो बोध नईं करावै है। पण संख्या रै परिमाण रो ग्यांन करावै है! इण कारण सूं अेड़ा विसेसण सब्दां नै परिमांण बोधक विसेसण कैवै है। अेड़ा विसेसण सब्द हिंदी रै ज्यां राजस्थांनी में भाव वाचक, द्रव्य वाचक नै समुदाय वाची संग्यावां रै साथै आवै है।

परिमाण बोधक विसेसण घणकरा अेक वचन संग्या रे साथै परिमांण रो नै बहु वचन संग्या रे साथै अनिस्चय वाची सख्या प्रगट करै है।

परिमांण बोधक	अनिस्चय संख्या वाची
घणो धांन	घणा छोरा
कीं कांम	कीं आदमी

सैंग जंगल — सैंग आदमी

पूरो ढूंबो — पूरो भाग [हिस्सा, वंट]

परिमांण बोधक विसेसण में सा प्रत्यय जोड़ण सूं अनिश्चय प्रगट होवै है। ज्यां : थोड़ो सो धांन, थोड़ी सी बात, जरा सो कांम, बौत सो धन।

परिमांण बोधक विसेसण रो उपयोग क्रिया विसेसणां रे मुजब ई होवै है। ज्यां : घणो हालै है। विसेसण रै मुजब ई होवै है। ज्यां घणो हालै है। वाकीं कमजोर है। हूं अंड़ा झांमला में थोड़ोई पड़ूं हूं।

संकेतवाची विसेसण

१. आ पोथी किण री है।

२. बो आदमी कांई करै है।

३. उठै कुण ऊभो है।

४. जिको आदमी साच बोलै है उण ने लोग बंद कैवे है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय वारीक आखर वाला सब्द साचांणी [वास्तव में] सरवनांम है पण अठै औ सरवनांम आपरी आपरी

संग्या रै साथै आया है नै संग्या री कांनी इसारो पण करै है।
इण सूं अैड़ा सरवनांमां नै संकेतवाची विसेसण कैवे है।

नीचे लिखियोड़ा सब्द संकेत वाची विसेसण है :

वो, औ, आ, ओ, ऊ, अैडो, वैड़ो, कैड़ौ, जैड़ौ, तैड़ौ, जिको, तिको, अेहड़ा, तेहड़ो, जहड़ो, जेहड़ो।

जद कद इण ऊपरला सब्दां रो प्रियोग संग्या रै बदलै होवै ऊद अै सब्द निस्चय वाची सरवनांम कैवीजै है।

पुरस वाची नै निजवाची सरवनांमां नै छोड़ बाकी रा साराई सरवनांम संग्या रै साथ आवण सूं विसेसण रै ज्यां कांम आवै है।

निस्चयवाची : आ पोथी, औ घोड़ो, वो आदमी, वे मिनख।
अनिस्चयवाची : कोई छोरो, कीं कांम।

प्रस्नवाची : कुण मिनख, किसो आदमी, कीं कांम,
काई कांम ?

संबंधवाची : जको छोरो, जिका लुगाई, जिके बातां, निज, आपरो नै परायो, सरवनांम ई संकेत वाची विसेसण इज होवै है। क्यांकै इणां रो प्रियोग घणकरो विसेसणां र ज्यां होवै है। ज्यां : परायो घर, परायो मुलक, आपरो-घर, आपरी बोली, निज रो देस।

विसेसणां रै रूप में काई नै कुण जीव धारी वस्तु रो धरम प्रगट करण आली संग्याओं र साथै आवै है। ज्यां : कोई मिनख, कोई जिनावर, कोई कांम। कोई कीं ताजुब रा अरथ रै मांय घणकरो कैश अथवा धरम रै नांम रै साथै आवै है। ज्यां : कांई आदमी है! की मिनख है! की बात है! की धरम है!

कीं अनिस्चय सख्या नै परिमांण तीनां रो बोध होवै है। ज्यां : कीं आदमी, कीं धांन, कीं दूध।

पुरस वाची नै निजवाची सरवनांम [हूं, मूं, म्हैं, थूं, तूं, राज, रावळा, आप, पिंडा] संग्या री विसेसता तो कोई बतावै नीं पण सग्या रै साथै समानाधिकरण सूं प्रियोग में आवै है। ज्यां : हूं, माधो, इकरार करूं हू।

औ, यौ, ओ, ऊ, अवौ, वोवो, तिको, जिको, कुण रा, इ, इ, अणी, इणी, इयै, यै, इण, वण, वणी, उण, उणी, विणी, विणो, बीं, वीं, ऊवै, तिण, जिण, जीं, किण कै रै रूपां रै आद रै आखर नै इ न अ रै मांय बदलण सूं नै ओ, ऊ न वै रूप करण सूं अंत रै मांय ड़ौ, सौ जोड़ण सूं गुणवाचक विसेसण नै डो री जागा तो, तरो, तरोई सब्द अथवा डो सब्द करण सूं परिमांणवाचक विसेसण वणै है।

सरवनांम	रूप	गुणवाचक विसेसण	परिमांणवाचक विसेसण
औ यौ	अण, अणी, इ, इं, इण, इयै	अैड़ो , इसौ [इस्यौ] अैसो	इतो,इतरो, इतरोई, इडौ
ओ ऊ बो वो अवो	उण, उणी, वण वणी, विणी,बण बिण, बिणी, बीं वीं, उवै	वैड़ौ , ऊड़ौ , विसौ [विस्यौ] वैसौ , विसौ	उतो, उतरो, उतरोई, वतो वतरो, वतरोई, वितो, वितरो, वितरोई, बितो बितो, बितरोई, उड़ौ
तिको	तण, तिण	तैड़ौ , तिसौ, तैसो	तितो, तितरो, तितरोई तिडौ
जिको	जण, जिण, जीं	जैड़ो , जिसौ [जिस्यो]	जितो, जितरो, जितरोई जिडौ
कुण	कण, किण	कैड़ो	कितो, कितरो, कितरोई किडौ

कदेई कदेई अैड़ा नै तैड़ा रो प्रियोग समांन रै अरथ में संवंध सूचक रै जैड़ो होवै है। ज्यां : आप जैड़ो सज्जन भोज जैड़ो राजा , करण अैड़ो राजा दांनी फेर कठै।

बीजा परिमांण वाचक विसेसणां रै समांन संकेत वाचक परिमांण वाचक विसेसण बहु वचन रै मांय संख्या वाची होवै है। ज्यां : इतरा मिनख क्यूं आया ? राज इण रा कितरा दांम लेवो। वो जितरा दिन जीवियो उतरा दिन सुखी रयो। कितराई रो उपयोग कदेई कदेई केई र अरथ में होवै है।

ज्यां : कितराई लोग ईस्वर ने मांनै है। कितराई दिनां रै पछै हिन्दुस्तांन आजाद होयो।

कैड़ो नै कितरा रो अरथ कदेई कदेई ताजुब रै मांय ई होवै है। ज्यां : साथियां रै मिलण सूं कैड़ो आणंद होवै है। दरबार रै मरण सूं कितरै दुख री वात हुई।

कदेई २ विसेसणां रै विसेस्य [संग्या] रै लोप होवण सू विसेसणां रो प्रियोग संग्या रै ज्यां होवै है। ज्यां : मोटा मोटाई को छोड़ै नी। गरीब सैंगां ने देखै। जैड़ो करो वैड़ो मिलसी।

विसेसणां रो उपयोग राजस्थांनी में दो प्रकार सूं होवै है। एक तो विसेस्य [संग्या] रै साथे नै बीजो क्रिया रै साथै। ज्यां : छोटो छोरो आयो। हूं मोटी पोथी पढूं हूं। छोरो छोटो है। पोथी मोटी है। पैलड़ा दोनोई वाक्यां रे मांय विसेसण विसेस्य [संग्या] रै विसेसण अपूरण क्रिया रै साथै पूरती रै रूप में आयो है।

कीं खास खास अरथां रै मांय विसेसणां री पुनरुक्ती ई होया करै है। ज्यां : थोड़ी थोड़ी वात में कांई चिड़ै है। मोटा मोटा सरदार आया हा।

कई तरै रा गुण वाचक विसेसण संग्याओं नै क्रियाओं सूं बणाया जावै है। जिणमें क्रिया सूं बणण वाला विसेसणां रो विसेस वरणन क्रिया रै क्रदंत प्रकरण में कियो जावेला। इण जागा तो केवल थोड़ो रूप दियो जावे है।

संग्या सूं बणियोड़ा विसेसण :

संग्या	विसेसण
जंगल़	जंगल़ी
मारवाड़	मारवाड़ी
ढूंढाड़	ढूंढाड़ी
आल़स	आल़सी, आल़सू
क्रपा	क्रपालू

क्रिया सूं बणियोड़ा विसेसण :

क्रिया	विसेसण
पढणो	पढाक, पढणहार, पढणियो
बेचणो	बिकाऊ, बिकणहार बेचणियो।
मरणो	मरणीक, मरणियो,

केई केई क्रिया संबंधक विसेसरण राजस्थांनी में विसेस रूप सूं होवे है। ज्यां :

क्रिया	विसेसरण	वाक्य उपयोग	अरथ
हालणो	हालणो	बलद हालणो है।	तेज गति से चलने वाला।
खावणो	खावणो	ऊंट खावणो है।	ऊंट काटने की आदत वाला है।
भूसणो	भूसणो	कुत्तो भूसणो है।	कुत्ता भौंकने की आदत वाला है।

अेक दूजी तरै रा क्रिया संबंध विसेसरण ई जिकां रो प्रयोग राजस्थांनी [डिंगल गीत] छंदां, दूहां में विसेस रूप सूं इण भांत मिलै है। ज्यां :

क्रिया	विसेसरण	प्रयोग
भांजणो	भांजण	नाहर चोर डाकणी निसचर थलरांणी भांजण अरिथाट [कविराजा बांकी दास]
छेदणो	छेदण	छेदण दैत भूत छल छैहां
बांधणो	बांधण	पूजारां बांधण भ्रम पाल
वहणो	वहण	वहण अवाटक सूंक वस, चाटक दांम चहीर। खाटक रूगटां खेलणो, पाटक कवियो 'पीर'।

विसेसण रो रूपांतर

छोटो छोरो	मोटा घर
छोटी छोरी	मोटी पौल , खोटा दरसण
छोटा छोरा	मोटा घर

[ओकारांत नै अकारांत] राजस्थांनी रे मांय विसेसण विसेस्य [संग्या] रा जुदा जुदा वचन ने कारकां रे मुजब बदलै है। पण उणां रै मांय कारकां री विभग्तियां नई होवे है। ओकारांत विसेसणां नै छोड़ बीजा विसेसणां में किणी तरै रो रूप नई बदलै है। ज्यां : गोल मूंडो , गोल टापी , लाल मूंडो , लाल साफो , लाल टोपी . भारी पाट , भारी कांबल , भारी मेज , भारी लकड़ी , सुंदर लुगाई , सुंदर मिनख।

ओकारांत विसेसण रो रूप बदलण रो नियम

छोटो छोरो आयो। छोटा छोरा आया। थूं किसै गांम रैवै है। थे किसे घर में रो हो। वो ऊँचे रूख माथे चढियो , वे ऊँचें रूखां माथे चढिया।

१. पुल्लिंग विसेस्य [संग्या] बहुवचन में होवै तथा उणां रै विभग्ती [विभक्ति] अथवा संबंध सूचक आवै तो विसेसण रै अंत रै ओ रै बदलै आ हो जावे।

छोटी छोरी आई। परसूं चौथी तारीख होवेला। वो ऊँची आमली माथै चढियो। थे किसी श्रेणी में हो। सूखी पत्तिय

नीची गिरी।

२ स्त्रीलिंग विसेस्य रै साथै विसेसण रै अंत रै ओ रै बदलै ई हो जावै है।

ओकारांत संबंध सूचक [जकै अरथ में विसेसण रै समान होवै है] ओकारांत विसेसणां रै समान विसेस्य रै मुताबिक बदलै है। ज्यां : प्रताप सरीखो वीर। दुरगदास जेड़ो स्वामी भगत। जसमादे हाडी जैड़ी रांणी।

म्हनै गरीब नै	किणी देस रो
था मूरख सूं	जिणां गांवां सूं
थें मूरख सूं	जिणां लागां सूं
उण घर में	

सरवनांम सूं संबंध रखण वाला [सार्वनामिक विशेषण] विभगती अथवा संबंध सूचक विसेस्य रै साथै आपरा विक्रत रूप में आवै है।

नोट : कोई सरवनांम सूं संबंध रखण वालो [सार्वनामिक विशेषण] विसेसण काल वाचक संग्या रै अधिकरण कारक में घणकरो अविक्रत रूप में आवै है। ज्यां :

कोई घड़ी में। कोई दम में।

जद विसेसणां रो उपयोग संग्या रै जैड़ो होवै तद संग्या रै समान उणां री कारक रचना होवै है। ज्यां : मोटा नै। मोटां नै।

नीचां ।।। गरीबां ऊपर ।

गुणवाची विसेसणां री तुलना

राजस्थांनी रै मांय विसेसणां री तुलना करण सारू उणां रो रूप नहीं बदलै है। तुलना रो अरथ नीचे लिखियोड़ा नियमां र मुजब प्रगट कियो जावे है।

१. जिण पदारथ रै साथे इधकाई अथवा कमी री तुलना की जावै है उण रो नांम पंचमी विभग्तो में लायो जावै है। ने जिण पदारथ री तुलना की जावै है उण रो नांम विसेसण र साथे लायो जावं है। ज्यूं : चडोदान सावलदांन सूं हुसियार है। रूपे सूं सोनो मूंगो हुवै है।

कठेई कठेई पंचमी विभग्त रै बदलै घणकरो संग्या अथवा सरवनांम र साथे , विचै , करतां, पाहै, पा, बा संबंध सूचक आवै है। अथवा सग्या में संबंध कारक रै पैला अरथ र मुजब इधक , जादा अथवा कम विसेसण रो प्रयोग कियो जावै है ज्यां :

सांवलदान करतां मगो घणो समझणो है। रुपिया रै विचै ईमांनदारी घणी चोखी हुवै है। सैंगाऊं इधकता प्रकट करण सारू विसेसण रै पैली सबऊं , सबसूं , सैंगांऊं सब्द लगाया जावै है नें जिण पदारथ सूं तुलना की जावै है उणरो प्रयोग सप्तमी विभग्ती में राखियो जावै है। ज्यां : मातमा गांधी नेताओं में सैंगांऊं सूं बड़ा हुया है।

सवसूं इधकता दिखावण सारू कदेई कदेई विसेसण ने वेरायो जावे है। ज्यां : मोटा मोटा विद्वांन ईसवर री लीला नईं समझ सकै है।

संस्कृत रै मुजब गुण वाचक विसेसणां री तुलना द्रिस्टी सू राजस्थांनी में भी तीन अवस्था होवै है १. मूलवस्था २. उतरावस्था ३. उत्तमावस्था

१. विसेसण रै जिण रूप सूं कोई तुलना प्रकट नईं होवै उणन मूलावस्था कैवै है। ज्यां : ऊंचो, मोटो, घोर, खाटो, मीठो, चोखो, फूठरो।

२. विसेसण रै जिण रूप सूं दो वुसतवां में किणी अेक रै गुण री अधिकता या कमी बताई जावै है उण नै उतरावस्था कैवै है। ओ रूप मूल विसेसण सब्द रै आगै अेरो, करतां, थका, पाहे, विचै, सूं प्रत्यय जोड़ण सूं वणै है ज्यां : मोवन सूं सोवन भलेरो है। इण वैरा रो पांणी उण सूं घणेरो है। मोटे रो, घणे रो, वडे रो, छोटो रो आदि।

३. उत्तमावस्था विसेसण रै उण रूप नै कैवै है जिण सूं दोय सूं घणा पदारथां में किणी एक री अधिकता व कमी प्रगट की जावै है। इण रूप री रचना में ई ऐरो और थको प्रत्यय जोड़िया जावै है। पर सैंग या सब सब्द पैली लायो जावै है। ज्यां : सैंगां सूं भलेरो। सबां सूं वडेरो।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां मे विसेसण री पूरण वाख्या करो :

१. सीम में म्हैं अेक मोटे रोंछ नै देखियो ।
२. म्हनैं अेक चोखो आंबो लादो ।
३. दोय जणा रमता रमता बाग में ग्या ।
४. बोरड़ी रो पत्तो गोल होवै है ।
५. कागद रंग बिरंगा होवै है ।
६. घोड़े रा कान छोटा होवै है ।
७. लो सैठो [मजबूत] होवै है ।
८. काली स्याही कठे सूं लाया ।
९. ओ फूटरो घर किण रो है ।
१०. ओ आदमी कोजो है ।

छठो अध्याय

क्रिया रा भेद

१. छोरो आयो है ।
२. भाई आवेला ।

३. गाय आई ही।

४. घोड़ो हींसै है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय आयो है, जावैला आई ही, नै हींसै है सब्द क्रियाआं है। क्यांके इणां सब्दां रै जरिये कुछ पदारथां रै बाबत विधांन कियो गियो है। इणां क्रियाआं रै करणै वाले रो बोध करावण वाला सब्द इण प्रकार है। छोरो, भाई, गाय नें घोड़ो जिणां नै व्याकरण में करता केवै है। क्रिया रो करता घणकरो संग्या होवै है पण कदे कदे सरवनांम नै विसेसण ई करता होवै है। ज्यां :

संग्या : टाबर रमै है। चाकर पांणी ने गयो।
सरवनांम : वो आयो। म्हे जावां हां। थूं कांई करैला।
विसेसण : आंधा ने दीसै कोयनी। बोले ने सुणीजै कोयनी।
गूंगो बोल नहीं सकै।

१. छोरो नावै है।	छोरा चौपड़ रमै है।
२. घोड़ो हींसै है।	घोड़ो धान खावै है।
३. भाई आयो।	भाई आंबा लायो।

ऊपरला वाक्यां रै मांय डावी कांनी रा वाक्य नावै है, हींसै है, आयो है अेड़ी क्रियाआं है जिणां रो कांम उणां रा करता मे ई खतम हो जावै है। उणां रो फल किणी दूजा पदारथ ऊपर नईं पड़ै है। इण कारण सूं अै क्रियाआं बिना करम री है। बिना करम री क्रियाआं नै अकरमक क्रिया केवै है।

जीवणी कांनी रा वाक्यां में रमण क्रिया रो फल चौपड़ माथै पडे है। इणी प्रकार खाणा क्रिया रो फल घोड़ा सूं निकल नै घांन माथै पड़ै है। इण प्रकार री क्रियाआं जिण रे कांम रो फल करता सूं निकल नै किणी दूजे पदारथ माथै पड़ै उण क्रियाआं ने सकरमक क्रिया कैवै है। जिण पदारथ माथै सकरमक क्रिया रो फल पड़ै है उण सब्द ने करम कैवै है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय रमै है सकरमक क्रिया रो करम चौपड़ है, नै खावे है क्रिया रो करम घांन है।

अकरमक क्रिया रै साथे करम नहीं होवै है। सकरमक क्रिया रो करम, करता रै समांन संग्या सरवनांम अथवा विसेसण होवै है। ज्यां :

छोरी वरतन मांजे है।
मैं थांने आछीतरै जांणू हूं।
परमातमा गरीब री रुखाली करै है।
मास्टर छोकरे नै पोथी पढावै है।
बाप बेटा नै दूध पायो।
बैन भाई नै मतीरो खवाड़ैला।
चेलो गुरू नै पाठ सुणातो हो।

उपरला वाक्यां रै मांय पढावै है, पायो, खवाड़ैला, सुणातो हो सकरमक क्रियाआं है। जिणांरै दो दो करम है। पोथी, दूध, मतीरो नै पाठ। इणां रै सिवाय हरेक क्रिया रो अेक अेक करम भलै है

जिण ऊपर उण क्रिया रो फल गिरै हैं। पढावै क्रिया रो दूजो करम छोरो, पागो क्रिया रो बीजो करम बेटा नै लवाडै क्रिया रो बीजो करम माई नै सणातो हो क्रिया रो बीजो करम गुरू नै है। औडी क्रियाआं नै दोय करम वाली क्रिया अथवा [मतलब के] द्विकर्म क्रिया कैवै है।

इण दोय करमां रै मांय सूं अेक करम क्रिया रो अरथ पूरो करण वास्तै घणो जरूरी है ने किणी पदारथ री चीज रो बोध करावै है अैडा करम नैं प्रधान कैवै है। बीजो करम किणी जीवधारी रो बोध करावै है ने अप्रधांन कहीजै है। अप्रधांन रै साथे सदाई नै निसांण रैवै है।

अकरमक	सकरमक
म्हैं हाथ खुजवालूं हूं	म्हैं म्हारे बलद नै खुजवालूं हूं।
घड़ो पांणी सूं भरीजे है	चपड़ासी पांणी सूं घड़ो भरै है।
मोवन रो मन लुभावै है	मोवन म्हनै तसवीर सूं लुभावै है।

राजस्थांनी रै मांय की क्रियाआं अैड़ी होवै है जिके आपरै अरथ रै मुजब कदेई अकरमक नै कदेई सकरमक हो जावै है। उण क्रियाआं नै उभयविध क्रियाआं कैवै है।

अपूरण अकरमक क्रिया

१. चंद्रू पोसालियो है।
२. सांवल लेखणियो वणैला।

३. चाकर आलसी निकलियो।

४. जुजुठल धरमराज कईजतो हो।

ऊपरला वाक्यां रै मांय 'है', 'वणैला', 'निकलियो' 'नै' 'कईजतोहो' अैड़ी क्रियाआं है जिणां रो अरथ कदेई अेकलो विना करता रै पूरो नईं होवै इणां रा अरथ पूरा करण सारू इणां रै साथै करता सूं मेल खावण वाली कोई संग्या अथवा विसेसण लगावणो पड़ै है जिण सूं अरथ री पूरती हो सकै है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय 'है' क्रिया ने पूरण करण सारू 'पोसालियो' संग्या है। इणी तरै सूं 'वणैला' क्रिया ने पूरण करण सारू 'लेखणियो' संग्या है। इणींज तरै सूं तीजा और चौथा वाक्यां रै मांय "निकलियो' नै 'कैईजतो हो' क्रियाआं रा अरथ पूरा करण सारू 'आलसी' नै 'धरमराज' सब्द है जिणमें पैलो विसेसण नै दूजो संग्या है। अैड़ी क्रियाआं ने अपूरण अकरमक क्रिया कैवै है।

अपूरण सकरमक क्रिया

१. फतैराम जी प्रयागदास जी नै गुरू मानै है।

२. कांगरेस व्यास जी नै राजस्थांन रा मंत्री वणाया।

३. थनै हूं घणौ चुतर जांणूं हूं।

४. चंदू भणाई पूरी करैला।

'मानणो' 'बणणा' 'जाणणो' नै 'करणो' अैड़ी सकरमक क्रियाआं है जिणारो अरथ अेकला करम सूं पूरो नहीं होवै है। इण क्रियाआं रो ठीक अरथ पूरो करण सारू करम सूं मेल राखण वालो सब्द संग्या अथवा विसेसण लगावणो पड़ै है। जिण ने करम पूर्ति कैवै है। अैड़ी क्रियाआं ने अपूरण सकरमक क्रिया कैवै है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय 'मानै है' अपूरण सकरमक क्रिया री पूरति 'गुरू' संग्या है नै बीजै वाक्य में 'बणायो' [अप]ूरण सकरमक क्रिया री पूरति 'मंत्री' संग्या करम पूरति है। [इण]ी तरै सूं अपूरण सकरमक क्रिया 'जाणूं हूं' नै 'चुतर' [वि]सेसण करम पूरति करै है। इणीज तरै सूं चौथे वाक्य रै [मां]य विसेसण 'पूरी' करम पूरति करै है।

कठेई कठेई अकरमक नै सकरमक क्रियाआं रे साथे उणी [क्रि]याआं सूं बणियोड़ा भाव वाचक संग्या करम रे रूप मे आवै [है]। ज्यां:

मणो पढाई री पोथी पढै है।
लड़ाई लड़णी चोखो कांम कोयनी।
छोकरा रमत रमै है।

अैड़ी क्रियाआं नै सजातीय क्रिया नै उणां रै करमां नै सजातीय काम है।

नाम धातु नै अनुकरण क्रिया :

राजस्थानी रै मांय नांम धातु नै अनुकरण धातु रा सब्द वणै है। नांम धातु संग्या नै विसेसण सूं जिका क्रिया वणै है उणनै कैवै है। नै किणी पदारथ रै आवाज रै अनुकण गाथै जिका क्रिया वणाई जावै है उणनै अनुकरण धातु कैवै है।

नाम धातु

संग्या	धातु	क्रिया
अरथ	अरथाव	अरथावणो
काट	काटीज	काटीजणो
बाप	बापकार	बापूकारणो
धिरकार	धिरकार	धिकारणो
उधार	उधारण	उधारणो
दुख	दुख , दुखण	दुखाणो
फटकार	फटकार	फटकारणो
पीड़	पीड़ीज	पीड़ीजणो
विसेसण	धातु	क्रिया
सूको	सूकीज , सूकणो	सूकीजणो
गरम	गरमीज	गरमीजणो
सरद	सरदीज	सरदीजणो
हिड़कियो	हिड़कीज	हिड़कीजणो

धोलो	धोलीज	धोलीजणो
लीलो	लीलीज	लीलीजणो
ओछो	ओछीज	ओछीजणो
सरवनाम	धातु	क्रिया
अपणो	अपणो	अपणाणो

अनुकरण धातु

धातु	क्रिया
खटखट	खटखटाणो
बड़बड़	बड़बड़ाणो
झणझण	झणझणाणो
खणखण	खणखणाणो
हलहल	हलहलावणो
भलहल	भलहलावणो
भकभक	भकभकावणो

सातमो अध्याय

क्रिया रा वाच्य

चाकर पांणी लावै है।	पांणी चाकर सूं लायो जावै है।
माली गोढ लायो।	गोढ माली सूं लायो गयो।
छोरो पोथी पढला।	पोथी छोरा सूं पढी जावेला।
ओ कागद लावै।	कागद उण सूं लायो जावै।

डावी कांनी रा वाक्यां रै मांय करता सूं उणां रै करम रै बाबत कयो गयो है। नै जीवणी बाजू रा वाक्यां रै मांय क्रिया आपरा करमां रै बाबत कीं कैवे है। डावी बाजू री क्रियाआं राजस्थानी रै मुजब करत्री वाच्य [कर्त्तृ वाच्य] नै जीवणी कांनी री क्रिया करम वाच्य [कर्मवाच्य] केईजे है। दोनोई तरै री क्रियाआं रै अरथ में किणी प्रकार रो फरक नईं है। पण उणां रा रूपां में फरक जरूर है। जिण सूं प्रगट है कै करत्री वाच्य रै मांय करता री नै करम वाच्य में करम री प्रधानता रेवै है। अकरमक क्रियाआं में करम वाच्य नईं हुवै है क्यांके उणां रै मांय करम नईं हौवें है।

करत्री वाच्य क्रिया रो करम वाच्य क्रिया में उदेस अरथात करता रै रूप मांय आवै है नै उण रे मांय प्रधांन करता ने प्रगट

करण री जरूरत पड़ै है। तद संसक्रत रे मुजब त्रितीया विभगती में रखणो पड़ै है जिणनैं हिन्दी रै मांय 'करण कारक' केवै है। ज्यां :

१. सिलावटो भाटो घड़ै है [करत्रीवाच्य]
२. भाटो सिलावट सूं घड़ियो जावै है [करमवाच्य]
१. छोरो पोथी पढैला [करत्री वाच्य]
२. पोथी छोरे सूं पढी जावैला [करम वाच्य]

राजस्थानी रै मांय नीचे लिखियोड़ा अरथ प्रगट करण में करम वाचक क्रिया आवै है। जद किणी क्रिया रे करता रो ठा नईं होवै तो उणने प्रगट करण री जरूरत नईं होवै है। ज्यां :

१. चोर पकड़ियौ गयौ है।
चोर पकड़ाणौ।
आज पौसाल खोली जावेला।

कठेई कठेई आतंक प्रगट करण सारू इण तरै हुवै है। ज्यां :
थांनै हुकम सुणायो जावैला।

इण मामला री जांच की जावैला।
कठेई कठेई कमजोरी बतावण सारू इण तरै होवै है। ज्यां :

मांदा सूं अन्न खायो जावैला।
म्हां सूं थारी वात नईं सईजैला।

दोय करम [द्विकर्म] वाली क्रियाआं रै मांय परधांन करम तो उदेस हुवै है नै गौण करम ज्यां रो त्यां रैवै है।

करत्री वाचक	करम वाचक
चौधरी बलधां नै धांन खवाड़ै है।	बलधां नै धांन खवाड़ियो जावै है।
गुरांसा चेलै ने लीलावती भणावता हा।	चेलै नै लीलावती भणाई जावै है।
हूं काले भाई नै कागद लिखूंला।	काले भाई ने कागद लिखियो जावैला।

भाव वाच्य

छोरो नावै है।	छोरा सूं नायो जावै है।
मांदो आदमी बैठो है।	मांदा सूं बैठीजै है।
छोकरी हमैं जावैला।	छोकरी सूं हमैं जाइजैला।
बूढौ ऊठ नईं सकतौ हो।	बूढा सूं उठीजतौ कोयनो हो।

इण ऊपरला वाक्यां रै मांय डावी कांनी रा वाक्य अकरमक क्रिया करत्री वाच्य में है। पण वे आपरा करताआं रै बाबत में कथन करै है। पण जीवणी बाजू री क्रियाआं करता रै बाबत कीं कोयनी कैवै है। इण क्रिया रै भाव रो ग्यांन हुवै है। इण कारण सूं अैड़ा वाक्यां नै भाव वाच्य [भाव वाच्य] कैवे है।

भाव वाच्य क्रियाआं घणकरी कमजोरी अथवा सगती रै अरथ में आवै है।

करत्री वाच्य अकरमक नै सकरमक दोनोई प्रकार री क्रियाआं में होवै है। नै करम वाच्य [कर्म वाच्य] सिरफ सकरमक क्रिया में ही होवै है। पण भाव वाच्य [भाव वाच्य] सिरफ अकरमक क्रिया मे ईं होवै है।

करत्री वाच्य	करम वाच्य	भाव वाच्य
बांमण गीता पढ़ै है।	गीता बांमण सूं पढी जावै है।	काले सुं हंसियो जावै है। काले सूं हंसीजै है।

वाच्य क्रिया रै उण रूप नै कैवे है जिण सूं आ वात जांणी जावै है कै क्रिया सूं करता रै बाबत कीं कियो जावै है। अथवा करम रै बावत में अथवा सिरफ भाव रै बावत में।

राजस्थांनी रै मांय वाच्य तीन तरै रा होवै है।

१. करत्री वाच्य २. करम वाच्य ३. भाव वाच्य।

१. करत्री वाच्य [कर्त्तृ वाच्य]

क्रिया रै उण रूप नै कैवै है जिण सूं जांणियो जावै है कै जिण क्रिया रो उद्देस्य उण रो करता होवै है। ज्यां:

बूढो हालै है। बांमण गीता बांचै है। छोरो पांणी लावै है।

२. करम वाच्य [कर्म वाच्य]

क्रिया रै उण रूप नै कैवै है जिण सूं जांणियो जावै है कै क्रिया रो उद्देस उण रो करम होवै है। ज्यां :

गीता बांमण सूं वांचीजै है। पांणी छोरा सूं लायो जावै है। म्हां सूं खेत में पूंख नईं तोड़ीजैला।

३. भाव वाच्य

क्रिया रै उण रूप नै केवै है जिण सूं औ जांणियो जावै है कै क्रिया रो उद्देस उण रो करता अथवा करम नईं होवै है। केवल उण रो भाव इज होवै है। ज्यां :

बूढै सूं हालीजै है। अथवा हालीजियो जावैला। छोरा सूं दौड़ीजैला।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ी क्रियाओं रा वाच्य कारण सहित बताओ।

१. थूं घणो हुसियार है।
२. छोरै पूंख घणा खाया।
३. गोड़ींदै मुकदमे रो भेद खोल दियो।
४. बोलियां बिणा किण सूं रैवीजै कोयनी।
५. राड़ी सूं बलध बांधियो गयो।
६. गरमी में मांय कीकर सोईजै।

आठमों अध्याय

क्रिया रो अरथ

१. छोरो पोथी वाचै है।

२. सायद छोरो पोथी वाचै।

३. छोरा पोथी वाच।

४. छोरो पोथी वाचैला।

५. छोरो पोथी वाचतो तौ ठीक रैवतो।

ऊपरला वाक्यां रै मांय 'वाचणो' क्रिया जुदा जुदा रूपां में नै जुदा जुदा अरथां में प्रियोग हुई है। पैला वाक्या रै मांय 'वाचै है' क्रिया रै जरिये अेक पक्को विधांन अथवा कथन कियो गयो है। दूजोड़ा वाक्य रै मांय 'वाचै' क्रिया सूं संभावना प्रगट होवै है। तीजोड़ा वाक्य रै मांय 'वाच' क्रिया सूं हुकम अथवा आग्या प्रगट होवै है। इणी तरै सूं चोथोड़ा वाक्य रै मांय 'वाचैला' क्रिया सूं सदेह अथवा सक प्रगट होवै है। नै पांचमा वाक्या रै मांय वाचतो क्रिया सूं पायो जावै है के अेक काम रै होवण में सरत पाई जावै है इण तरै सूं हर अेक क्रिया अेक जुदी तरै रो विधांन करै है। क्रिया रै विधांन करण रा ढंग नै क्रिया रो अरथ कैवै है।

क्रिया रा प्रधांन पांच अरथ होवै है।

१. क्रिया री पक्कावट।

२. क्रियां री संभावना।

३. क्रिया सूं हुकम अथवा आग्या।

४. क्रिया सूं संदेह अथवा सक।

५. क्रिया सूं सरत या संकेत।

१. जिण क्रिया सूं क्रिया रै होवण री पक्कावट रो विधांन अथवा सवाल कियो जावै है उण नै निश्चयार्थ क्रिया कैवै है। ज्यां: छोरो जावै है। कांई मोवन आयो ? ग्वालो गाय नहीं लायो।

२. जिण क्रिया सूं अनुमांन, इच्छा, करतब [कर्त्तव्य] आद रो बोध होवै है उण नै संभावनार्थ क्रिया कैवे है। ज्यां: कदास डाकियो आवै। [अनुमान] राज री जै हो। [इच्छा] मालक रो फरज है कै नोकरां रो पालण पोसण करै। [कर्त्तव्य] वो आवै तो म्हैं जाऊं। [संभावना]

३. जिण क्रिया सूं आसा, प्रारथना, विनै, उपदेस आद रो बोध होवे है उण नै आग्यार्थ क्रिया कैवै है। ज्यां: थूं जा। [आज्ञा] अठै बिराजो [प्रार्थना] चोरी मत करो [उपदेश]।

४. जिण क्रिया सूं विधान में सक अथवा संदेह पायो जावै उण नै संदेहार्थ क्रिया कैवै है। ज्यां: छोरो पाठसाला गयो होवैला।

५. जिण क्रिया सूं सरत अथवा संकेत पायो जाव उण नैं संकेतार्थ क्रिया कैवै है। ज्यां : वो आवतो तो म्हैं जावतौ। जको कांम करतौ वो सुखी होवतौ।

नवमौं अध्याय

क्रिया रा काल

१. भगवांन पोथी पढै है।	२. भगवांन पोथी पढै छै।
२. चंदू पोथी पढी ही।	२. चंदू पोथी पढी ती।
४. चंदू पोथी पढी हुती।	५. चंदू पोथी पढी छी।
३. जेठू पोथी पढेला।	२. जेठू पोथी पढस्यै।
३. जेठू पोथी पढसी।	४. जेठू पोथी पढैगो।
५. जेठू पोथी पढैगा।	जेठू पोथी पढैलौ।

ऊपरला वाक्यॉ रै मांय 'पढणो' क्रिया जुदा जुदा रूपां रै मांय आई है। पढै है, पढै छै, पढी ही, पढी ती, पढी हुती, पढी हुती, पढी छी, पढैला, पढस्यै, पढसी, पढैगो, पढगा, पढैलौ। इण रूपां सूं 'पढणो' क्रिया रो जुदो जुदो

समै मालम होवै है। 'पढै है', पढै छै', क्रिया सूं चालू समै रो ग्यांन होवै है। 'पढी ही', 'पढी हती' 'पढी हुती' 'पढी छी', क्रिया सूं बीतियोड़ै समै रो ग्यांन होवै है। नै 'पढैला', 'पढस्ये', 'पढसी', 'पढैगो' 'पढैगा' 'पढेलो' क्रिया सूं आवण वाला समै रो ग्यांन होवै है। क्रिया रै जिण रूप सूं उण रै होवण रो बोध होवै है उण नै क्रिया रो काल कैवै है। काल तीन परकार रा होवै है।

१. वरतमांन २. भूत ३. भविसत।

वरतमान काल : क्रिया रै चालू समै रो बोध करावै है। ज्यां : ऊंट जावै है।

भूत काल : क्रिया रै बीतियोड़ै समै ने प्रगट करै है। ज्यां : गाडी आई।

भविसत काल : क्रिया रै आणै वालै समै रो बोध करावै है। ज्यां : ऊंट आवैला। ऊंट आवसी।

'होणो' क्रिया रा रूप तीनोई कालां में तीनोई पुरखां में, दोनोई लिंगां में नै दोनोई वचनां में आगे मुजब लिखिया जावै है।

वरत मांन काल

पुल्लिंग

	ऐकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरख :	म्हैं हूं, म्हैं हां, म्हैं छूं, हूं हूं, म्हैं सां।	म्हे हां, म्हे छां, म्हे सां।
मध्यम पुरख :	थूं है, तूं है, थूं छै, तूं छे, तूं [थूं] सै।	थे हो, थे छो, थे सो।
अन्य पुरख :	ओ है, वो है, ऊ है आदि।	ओ है, वे है, अै है आदि।

स्त्री लिंग

उत्तम पुरख :	म्हैं हूं, म्हैं हां म्हे छूं, हूं हूं, म्हैं सां।	म्हे हां, म्हे छां, म्हे सां।
मध्यम पुरख :	थूं [तूं] है थू [तूं] छै थूं [तूं] सै।	थे हो, थे छो, थे सो।
अन्य पुरख :	आ है, वा है वा छै, वा सै।	वे है, वे छै, वे सै।

भूत काल

	ऐकवचन	बहु वचन
उत्तम पुरख :	म्हैं हो, म्हैं हुतो म्है हंतो, म्हैं तो, हूं हो,	म्हे हा, म्हे हुता, म्हे हंता म्हे हता, म्हे छा।

म्हैं छौ।

मध्यम पुरख : थूं हौ, तूं हौ, थूं [तूं] हंतो, थूं [तूं] हुतो, थूं छो — थे हा, थे हुता, थे हंता, थे छा।

अन्य पुरख : ओ हौ, वो हौ, ऊ हौ, वो छौ, वो हतौ, वे छा, वो हतौ, वो हुतौ। वो तौ। — वे हा, वे हता, वे हंता वे छा।

स्त्री लिंग

उत्तम पुरख : म्हैं ही, म्हैं हुती, म्हैं हू हंती, म्हैं छी, हूं हती। — म्हे ही, म्हे हुती, म्हे हती, म्हे हतो, म्हे छी।

मध्यम पुरख : थूं हो, थूं हती, थूं हुती, थूं हंती, थूं छी — थे हो, थे हती, थे हुती, थे हती, थे छी।

अन्य पुरख : ओ ही, वा ही, ओ ती, ओ हुती, ओ हती, ओ हती, वा छी। वा छी — वे ही, ओ हती, ओ हती वे छी। वे छी

भविसत काल

एक वचन — पुल्लिंग — बहु वचन

उत्तम पुरख : म्हैं हूंला, म्हैं होऊंला म्हैं होवांला, हूं होइस — म्हे होवांला, म्हे होवांगा, म्हे होस्यां, म्हे

म्हैं होऊंगो, म्हैं होसू	वाला, म्हे होसां
मध्यम पुरुष: थूं [तूं] होला,	थे होवौला, थे होसौ,
थूं [तूं] होवैला, थूं [तूं]	थे होवसौ, थे होवौगा।
होसी। थूं हुईस,	थे हुय्यो।
अन्य पुरुष: वो होवैला, वो	वे होवेला, वे होसी
होसी, वो होवगो, वो हुस्यै।	वे हुस्य, वे होवेगा।

स्त्री लिंग

एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष: म्हैं होऊंला, म्हैं	म्हे होसां, म्हे होवांला,
होसूं, म्हैं होऊंगी, होऊंली,	म्हे होवांगी, म्हे होवांली,
हूं हुईस।	म्हे हुयस्यां।
मध्यम पुरुष: थूं [तूं] होसी,	थे होसो, थे [थां]
थूं [तूं] होवैली,	होवोगी, थे [थां] होगी,
थूं [तूं] होवैगी,	थे [थां] होवोली,
थूं [तूं] होवोगी,	थे [थां] होली, थे
थूं [तूं] होगी,	[थां] हुस्यौ, थे होवोला,
तूं होवेली, थूं हुईस।	थे होस्यो।
अन्य पुरुष: वा होवेगी, वा होगी,	वे होवेगी, वा होगी,
वा होसी, वा होवेली,	वे होसी, वे होस्यै,
वो हुस्यै।	वे होवेली, वो हुस्यै।

बरतमान काल	सामान्य	अपूरण	पूरण
	म्हैं जाऊं हूं [छूं]	म्हैं जाऊं	म्हैं गयो हूं
	हूं जावां हां	म्हैं जाऊं हूं	हूं गयो हां

भविसत काल	सामान्य	अपूरण	पूरण
	म्हैं गयो हूं [छूं]	म्हैं जावतो	म्हैं गयो हूं
	हूं गयो हां ।	हूं जावतो	हूं गयो हां

भविसत काल	सामान्य	अपूरण	पूरण
	म्हैं जाऊंला [गो]	म्हैं जावतो होऊंला	म्हैं गयो होऊंला
	हूं जाईस	हूं जावतो हुईस	हूं गयो हुईस

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां सूं 'जाणो' क्रिया रै प्रियोग सूं आ बात मालम होवै है के हरेक काल री सामांन्य अवस्था रै सिवाय अपूरण, पूरण अवस्थाआं ई होवै है। अपूरण अवस्था सूं जांणियो जावै के कांम रो आरभ हो गयो पण पूरो नईं हुवो। नै पूरण अवस्था सूं आ बात प्रगट होवै है के कांम पूरो हो गयो। इण तर सूं क्रियाआं रै कालां सूं केवल समै रो ईज ग्यांन नहीं होवै है पण उण रै अपूरण नै पूरण होवण री बात ई प्रगट होवै है।

इण तरै सूं तीनां कालां री तीनोई अवस्थाआं री विचार करण सूं नव भेद होणा चाइजै पण ऊपर दियोड़ा तीनोई-रूप सयुक्त क्रियाआं रा है। इण कारण सूं राजस्थानी में कालां री अवस्था रै मुजब उणां रा छ भेद होवै है। ज्यां :

१. सांमांन्य वरतमांन २. पूरण वरतमांन [आसण भूत] ३. सांमांन्य भूत ४. अपूरण भूत ५. पूरण भूत ६. सांमांन्य भविसत।

१. सामान्य वरतमान काल सूं आ बात पाई जावै है के कांम री सरुआत बोलणे रै समै में हुई है। ज्यां : बायरो बजै है। छोरो पोथी पढै है। नौकर सूं पांणी लायो जावै है।

२. पूरण वरतमान काल [आसण भूत] सूं आ बात प्रगट होवै है के कांम सरू तो भूत काल में हुवो नै पूरो वरतमान काल में हुवो। ज्यां : सांवल आयो है। म्हैं कागद लिख लियो है।

३. सांमान्य भूत काल री क्रिया सूं आ बात प्रगट होवै है के कांम बोलणे सूं पैली पूरो हुवो है। ज्यां : मे वूठो। छोरो आयो। रुपिया दीधा [दिया]।

४. अपूरण भूत काल सूं आ बात प्रगट होवै है के कांम भूत-काल मे होवतो हो। ज्यां : म्हैं कागद लिखतो हो। नौकर पांणी लावतो हो। थूं कांई करतो हो।

५. पूरण भूत कालं सूं आ वात प्रगट होवै है के कांम भूत-काल में घणो पैली पूरो हुवौ हो। ज्यां : हाकम साब आया हा। पाठसाला देखी ही। कांम री घणी तारीफ कीवी ही।

अभ्यास

नीचै लिखियोड़ा वाक्यां रै मांय क्रियाआं रा अरथ नै काल बतावो :

१. मोवन जोदड़ो सैर रै मांय मिनख रैता हा।
२. म्हे हमार कठेई न कठेई जावांला।
३. राजा कह्यो कै चोरां नै पकड़ नै म्हारै खनै लावौ।
४. म्हारै गांम में पचास घर है।
५. तीड नईं आवतो तौ बारै महीना खावण जोगो धांन हो जावतो।
६. छोरो आपरै भाई री केणो मांनतौ तौ आ हालत नईं होवती।
७. हमैं गाडी आई ह्वैला।
८. जे तीड नईं आवतौ तौ अणूतो धांन ह्वैतो।
९. आपां नै किण सूं ई बैर नईं राखणौ चाइजै।
१०. म्हैं घणी सारी मेंनत करनै खेती करी।
११. कोरिये री लड़ाई में घणाई मिनख मरिया।
१२ थोड़ीक जेज सूं थूं वेरै माथै जाजै।
१३ थारौ भाई थनैं लड़ै जणै थूं नौकरी कर लीजै।

१४ सायत म्हैं काले जोधपुर जाऊंला।
१५ जे भगदांन म्हारै घरै आवैला तौ म्हैं उण रै साथै जाऊंला।
१६ जे करनो आवतो तौ म्हैं उण ने देखतौ।
१७ जे चडू म्हारै घरै आयो होतो तौ म्हैं उण रै घरं जातो।
१८ भीम सींघ काले जोधपुर गयौ हौ।

६. सामांन्य भविसत कालरी क्रिया सूं आ वात प्रगट होवै है कांम आरंभ हमै होवैला। ज्यां: म्हैं रांमायण पढूंला। थूं कांई करैला।

सब अरथां नै अवस्थाआं रै मुजब कालां रा अठारै [१८] भेद होवै है जिणां रा नांम उदाहरण सहित नीचै दिया जावै है।

काल	सामान्य	संभावना	आग्या	संदेह	संकेत [हेतुहेतुमद]
वरतमांन	सामान्य वरतमान जावै है। पूरण वरतमांन गयो है।	समान्य वरतमान सायद जावे है।	प्रतद्द विधि थूं जा।	संदिग्ध वरतमान जावतो होवैला	हेतु हेतु मद वरतमान जावतो है तो जावण दो।

भूत	सामान्य भूत वो गयो । अपूरण भूत वो जावतो हौ । पूरण भूत वो गयो हो ।	संभाव्य भूत सायद गयो हौ ।		संदिग्ध भूत गयो होवैला	सामान्य हेतु हेतु मद् भूत सांवल आवतौ तौ म्हैं जातो । अंतरित हेतु हेतु मद् भूत सांवल आयो होतौ तो म्हैं गयो होतो । अपूरण हेतु हेतु मद् भूत सांवल आवतौ तो म्हैं उण नै देखतौ ।
भविसत	सामान्य भविसत जावैला	संभाव्य भविसत सायद वो जावै	परोक्ष विधि जाजै [जायें]		हेतु हेतु मद भविसत आवैला तो म्हैं जाऊंला।

दसमौं अध्याय

क्रिया रा पुरख लिंग नै वचन

पुल्लिग

वरतमांन काल

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं जाऊं हूं। हूं जावां हां म्हैं जाऊं छूं।	म्हे जावां हां, म्हे जावां छां
मध्यम	थूं [तूं] जावै है, थू [तू] जावै छै।	थे जावो हो, थे जावो छो।
अन्य	वो जावै है, वो जावै छै ओ जावै है, बो जावै है।	वे जावै है, वे जावै छै। बे जावै है, औ जावै है।

स्त्रीलिग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं जाऊं हूं, हूं जावां हां। म्हैं जाऊं छूं	म्हे जावां हां। म्हे जावां छां

मध्यम	थूं [तूं] जावै है। थूं [तूं] जावै छै।	थे जावो हो। थे जावो छो। थां जावो हो। थां जावो छो
अन्य	वा जावै है। वा जावै छै। ओ जावै है, वा जावै,	वे जावै है। वे जावे छै। ओ जावै है, वो जावै है।

राजस्थांनी मे क्रियाओं में पुरख वाचक सरवनांमां र समांन तीन पुरख [उत्तम, मध्यम, अन्य] नै संग्याआं रै समांन दोय लिंग [पुल्लिग स्त्रीलिंग] नै दोय वचन [अेक वचन, बहुवचन] होवै है। जिके हमेसां क्रिया रै करता रै मुजब होवै है। पण राजस्थांनी में वरतमांन नै विधि काल में स्त्री लिंग नै पुल्लिग में क्रिया री बणावट में कोई तरै रो फरक नईं पड़ै है। दोनोंई लिंगां में क्रिया समांन ही रैवै है।

भूत काल

पुल्लिग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं गयो, हूं गयो	म्हे गया।
मध्यम	थूं [तूं] गयो	थे गया।
अन्य	वो गयो, ओ गयो	वे गया, ओ गया।
	अेवो गयो, वो गयो	अेवे गया, वे गया।

स्त्रीलिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं गई , हूं गई ।	म्हे गई , म्हे गयै ।
मध्यम	थूं , [तूं] गई , ओ गई ।	थे गई , थे गयै ।
		ओ गई , ओ गयै ।
अन्य	वा गई , अेवा गई ।	वे गई , अेवे गई ।

भूत काल री क्रियाओं में राजस्थांनी रै मांय पुल्लिंग में ओकारांत सब्दां रै समांन अेक वचन मे 'ओ' नै वहुवचन में आ इणी प्रकार सूं स्त्री लिंग मे अेक वचन नै वहु वचन ई होवै है । परन्तु पश्चिम राजस्थांनी रै मांय अे ही क्रियाआ वहु वचन मे अैकारात ह ।

भविसत काल

पुल्लिंग

पुरख	एक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं जाऊला, म्हैं जाऊलो , म्हैं जाऊ ।	म्हैं जावाला , म्हे जावां ।
मध्यम	थूं [तूं] जावैला , थूं [तूं] जावैलो ।	थूं जाई [जाईह] , थे जावोला , थे जावो ।
अन्य	वो जावैला, वो जावैलो , वो जाई [जाईह]	वे जावैला , वे जाई [जाईह]

स्त्रीलिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं जाऊंला , म्हैं जाऊंली	म्हे जावांला, म्हे जावांली
मध्यम	थूं [तूं] जावैला । थूं [तूं] जावैली ।	थे जावोला, थे जावोली
अन्य	वा जावैला , वा जावैली	व जावैला , ने जावैली ।

भविसत काल़ री क्रियाओं में राजस्थांनी में मुख्य तीन प्रियोग मिल़ै है। जिणां में प्रथम प्रियोग री क्रिया में पुल्लिंग में उत्तम पुरख में अेक वचन में " ऊँला ", " ऊँलो ", " ऊँ " प्रत्यय क्रिया रै आगै लगाया जावै है नै बहुवचन में " वांल़ा " नै " वां " प्रत्यय लगाया जावै है। नै मध्यम पुरख अेक वचन में " वैला ", " वैलो ", " ई " प्रत्यय नै बहुवचन में " वोला " नै " वो " प्रत्यय लगाया जावै है। नै अन्य पुरख अेक वचन में मध्यम पुरख अेक वचन वाल़ा प्रत्यय लगाया जावै है नै बहु वचन में "वैला", "ई" नै "ईह" प्रत्यय लगाया जावै है। स्त्री लिंग में घणकरा अैइज प्रत्यय होव है। पण कठेई कठेई उत्तम पुरख एक वचन में "ऊंली" बहु वचन में "वांली" । मध्यम पुरख एक वचन में "वैली" नै बहु वचन में "वोली" नै अन्य पुरख एक वचन में नै बहुवचन में "वैली" प्रत्यय ई लागू होवै है।

भविसत काल़

पुल्लिग

	अेक वचन	बहु वचन
पुरख	हूं जाईह , म्हैं जासू , म्हैं जास्यूं ।	म्हे जासां , म्हे जास्यां

उत्तम	म्हैं जाऊं , म्हैं जा हूं हूं जाईस , जाईह ।	म्हे जास्यां ।
मध्यम	थूं (तूं) जाईह, थूं (तूं) जासी , थूं जाईस ।	थे जाहो , थे जास्यो , थे जार.यो , थे जासौ ।
अन्य	वो जासी , वो जाई , ओ जास्यै ।	वे जाही , वे जासी , वे जाई , ओ जास्यै ।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	वहु वचन
उत्तम	हूं जाईह , हूं जाईस , म्हैं जासूं , म्है जाहूं , म्हैं जाऊ ।	म्हे जाहां , म्हे जासां , म्हे जास्या, म्हे जार.या ।
मध्यम	थूं (तूं) जाईह, थूं (तूं) जाईस, थूं (तूं) जासी	थे जाहो , थे जार.यो । थे जास्यो , थे जासो ।
अन्य	वा जासी , ओ जास्यै ।	वे जासी , ओ जास्यै

भविसत काल री क्रियाओं रै दूजै प्रियोग में नीचे मुजब प्रत्यय लगाया जावै है। उत्तम पुरख, पुल्लिंग, अक वचन में " ईह ", " ईस ", " ऊँ ", " हूं ", " सूं " नै वहुवचन में " हां ", "सां", "स्यां", "र.यां" प्रत्यय लगाया जावै है। मध्यम पुरख अेक वचन में " ईह ", " ईस ", " सी " नै वहुवचन में " हो ", " स्यो ", " र.यो ", " सौ " प्रत्यय लगाया जावै है। नै अन्य पुरख अेक वचन में " सी ", " स्ये ", " ही ", " ई ", " र.यै " नै वहुवचन में " सी ", " स्यै ", " र.यै ", " ई ", " ही " प्रत्यय लगाया जावै है। नै अै इज प्रत्यय स्त्री लिंग में दोनां वचनां में तीनां पुरखां में पुल्लिन रै समांन लागू रैवै है।

है। नै अै, ई अव्यय स्त्री लिंग में दोनां वचनां में नै तीनां पुरखां में पुल्लिग रै समांन लागू रैवै है।

पुल्लिग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हूं जाऊंगो।	म्हे जावांगा।
मध्यम	थूं [तूं] जावैगो। जायगो	थां, थे जावोगा।
	वो जावैगो जायगो	जायैगा।

स्त्रीलिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हूं जाऊंगी।	म्हे जामांगी।
मध्यम	थूं [तूं] जावैगो।	थे जावोगी।
अन्य	वा जावैगी।	वे जावैगी।
	जायगी।	जायगी।
	वो जायगी।	वे जायगी।

भविसत काल री क्रिया रै तीसरै प्रियोग में उत्तम पुरख अेक वचन में "ऊंगो" बहुवचन में "वांगा" नै मध्यम पुरख अेक वचन में "वैगो" नै "यगो" नै बहुवचन में "वोगा" प्रत्यय लगाया जावै है। नै अन्य पुरख अेक वचन में "वैगो", "यगो" नै बहुवचन में "यैगा", "वैगा" प्रत्यय लगाया जावै है। स्त्री लिंग में अै इज प्रत्यय ईकारांत कर दिया जावै है।

क्रिया रै तीन पुरुख दोय लिंग नै दोय वचनां रौ तीनां कालां रै जुदा जुदा रूपां रौ ऊपरला नियमां रै मुजब प्रत्ययां नै क्रिया रै रूपां रौ नकसो नीचे दियो जावै है।

वरतमान काल

पुरुख	अेक वचन		बहु वचन	
	पुल्लिंग	स्त्री लिंग	पुल्लिंग	स्त्री लिंग
उत्तम	हूं हां छूं	हूं हां छूं	हां छां	हां छां
मध्यम	है छै	है छै	हो छो	हो छो
अन्य	है छै	है छै	है छै	है छै

भूत काल

पुरुख	अेक वचन		बहु वचन	
	पुल्लिंग	स्त्री लिंग	पुल्लिंग	स्त्री लिंग
उत्तम	यो इयौ	ई ही	या हा	ई ही
	हो तो	हुती ती	हुता हंता	ती हुती
	हंतो हतो	हंती छी	ता छा	हंती
	हुतो छो	हती		हवी छी

मध्यम	इयो यौ हौ हंतौ तौ हुतौ हतौ छौ	ई ही हुती हती हूंती ती छी	या हा हुता ता हंता छा	ई ही ती हंती नै हुती हती छी
अन्य	इयो यौ हौ हंतौ हुतो तौ छौ	ई ही हती हुती हंती ती छी	या हा हुता ता हता छा	ई ही ती हंती हुती हती छी

भविसत काळ १

	अेक वचन		बहु वचन	
	पुल्लिंग	स्त्री लिंग	पुल्लिंग	स्त्री लिंग
उ.	ऊंला ऊंलो ऊं	ऊंला ऊंली	वांला वां	वांला वाली
म.	वैला वैलो ई ईह	वैला वैली	वोला वो	वोला वोली
अ	वैला वैलो ई	वैला वैली	वैला ई	वै वैली

भविसत काल् २

पु.	अेक वचन पुल्लिंग	अेक वचन स्त्री लिंग	बहु वचन पुल्लिंग	बहु वचन स्त्री लिंग
उ.	ईह सु	ईह सूं	सां स्यां	हां सां
	स्यूं ऊं	हूं ऊं	स्यां हां	स्यां स्यां
	हूं ईस	स्यूं ईस		
म.	ईह ईस	ईह ईस	हो स्यो	हो स्यो
	सी ईस	सी ही	स्यो सौ	स्यो सौ
	ही			
अ	सी ई स्ये	सी ई	ही सी	ही सी ई
	स्ये	स्ये स्य	ई स्यै स्य	स्यैं स्यै

भविसत काल् ३

	अेक वचन पुल्लिंग	अेक वचन स्त्री लिंग	बहु वचन पुल्लिंग	बहु वचन स्त्री लिंग
उ.	ऊं गो	ऊंगो	वांगा	वांगी
म.	वैगो यगो	वैगी	वोगा	वोगी
अ.	वैगो यगो	वैगी यगी	वैगा यगा	वैगी यगी

सांमान्य वरतमांन काल

	एक वचन		बहु वचन	
	पुल्लिंग	स्त्री लिंग	पुल्लिंग	स्त्री लिंग
उ.	म्हैं, [छूं]	म्हैं, हूं [छूं]	म्हे हां [छां]	म्हे हां [छां]
म	थूं हूं हां [तूं] है [छै]	हूं हां थूं [तूं] है [छै]	म्हे हां [छां]	म्हे हां [छां]
अ.	वो है [छै] ओ है	वा है [छै] ओ है	वे है [छै] ओ है	वे है [छै] ओ है

स्थांनी में होणो क्रिया रे सांमान्य वरतमांन काल री क्रिया हेर फेर नईं होवै है। उणी तरै सूं संभाव्य भविसत नै विधि काल रै मांय लिंग रै कारण किणी तरै रो फरक नईं पड़ै है। जिण रो हवालो नीचे दियो जावै है।

विधि काल

	एक वचन		बहु वचन	
	पुल्लिंग	स्त्री लिंग	पुल्लिंग	स्त्री लिंग
उ.	म्है जाऊं	म्हैं जाऊं हूं जाश्रां	म्हे जावां	म्हे जावो
म.	थूं हूं जाया [तूं] जा	थूं [तूं] जा	थे जावो	थे जावो

आकारांत धातुआं री क्रियाआं रै मांय राजस्थानी में पुरुख रै कारण किणी प्रकार रो हेर फेर नईं होवै है। ज्यां : म्हैं खायो, थैं खायो, उण खायो। म्हैं पायो, थैं पायो, उण पायो। म्हैं गयो, थूं गयो, वो गयो।

पुंलिंग	स्त्री लिंग
छोकरो गयो।	छोकरी गई।
मिनख हसै है।	लुगाई हसै है।
छोरो जावैला।	छोरी जावैला।

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां री क्रिया सूं सावल समझ में आवै है के अकरमक क्रियाआं रा पुरुख लिंग नै वचन क्रिया रै करता रै मुजब इज होवै है। जिण क्रिया रा पुरुख लिंग नै वचन करता रै मुजब होवै है उण नै सस्कृत मुजब करतरी [कर्त्तरि प्रयोग] कैवै है।

पुंलिंग	स्त्री लिंग
माराज रांमायण वाची।	छोरी आंबो तोड़ियो।
बांमण गीता वाची ही।	छोरी आंबा तोड़िया हा।
छोकरो रांमत देखतो होवैला।	छोरियां रांमत देखी है।

सकरमक क्रिया रै भूतकाल सूं बणियोड़ा कालां रै पुरुख लिंग वचन करम रा पुरुख लिंग वचन मुजब होवै है। जिण क्रिया रा

पुरुख लिंग वचन उण रा करम रै मुजब होवै उण नै राजस्थांनी में संस्कत रे मुजब करमणी प्रियोग [कर्मणि प्रयोग] कैवै है। बाकी रा कालां री क्रिया करतरी प्रियोग में रैवै है।

१. रोगी सूं हालीजै कोयनी।
२. छोरी सूं हसिजै कोयनी।
३. सिपाही सूं दौड़ीजै है।
४. म्हा सूं हमार बोलीजै कोयनी।

भाव वाच्य प्रियोग री क्रियाआं रा पुरुख, लिंग वचन उण रै करता रै मुजब नहीं होवै है, क्यां के उणरो करता केवल क्रिया रो भाव होवै है। आ क्रिया हमेसां अन्य पुरुख, पुल्लिंग नै अेक वचन में ही रैवै है। जिण क्रिया रा पुरुख लिंग, वचन करता अथवा करम रै अनुसार नईं होवै उण नै भाव प्रियोग [भाव प्रयोग] क्रिया कैवै है।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा वाक्यों रै मांय क्रिया रा प्रियोग बताओ।

१. थारो कैणो भूठो होवैला।
२. भाई कयो कै म्हैं म्हारो काम करूंला।
३. कांम मन सू चोखा होवै है।
४. उण काले सिनान कियो।
५. सायत भाई हमें कांम करनै घरे गयो हैला।

६. म्हैं भेरूंदांन जी नै देखिया हा।
७. आसू काले आप रै बेरै आवैला।
८. आप उठै आसू सूं मिलजो।
९. मांदै सूं ओफलो कोयनी रहीजै।
१०. वां री लड़ाई रो म्हनै किणी कारण नईं बताओ।
११. भाई सा वेरै माथै गया हा।
१२. छोरौ घणोई रोयो हो।
१३. छोरां आप रो कैणौ करियो।
१४. भैस पाडो लाई ही।
१५. गीता सीता नैं उठै मेली ही।

०

इग्यारमौं अध्याय

कृदंत

विकारी सब्द

१. हवा में घूमणो फायदै मंद होवै है।
२. पढ़ियोड़ा रो सदाई आदर होवै है।

३. वेवतां बगत मारग में ध्यांन राखजै।

४. रोटी खाय नै आयो हूं।

५. बलद वैणो है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय क्रिया सूं वणियोड़ा सब्द आया है। जिणां रो प्रियोग व्याकरण रा बीजा सब्द भेदां रै जेड़ो होवै है। पैला वाक्य रै मांय 'घूमणो' सब्द संग्या है। क्यांकै उण सूं अेक कांम रो नांम प्रगट होवै। बीजा वाक्य में 'पढियोड़ो' सब्द विसेसण है। क्यांकै ओ 'मिनख' सब्द संग्या री तारीफ करै है। तीजे वाक्य में 'वेवता' सब्द ई विसेसण है। क्यां कै इण रो अरथ 'वेवणे' सूं संबंध कारक रै समांन है।

चौथा वाक्य रै मांय 'खाय नै' सब्द क्रिया विसेसण रै समांन आयो है क्यां कै वो 'आयो हूं' क्रिया री विसेसता बतावै है। क्रिया सूं वणियोड़ा सब्द व्याकरण रा बीजा सब्दां रै समांन प्रियोग आवै है, वे क्रदंत कैवीजै है।

१. भणणो [भणीजणो] फायदै मंद है।

२. भणण [भणिजण] में सावचेती राखणी चाईजै।

३ घणो हंसणो चोखो नईं होवै है।

४. धीमें हालणो चोखो कांम है।

५. छोरै नै हालणो सिखावां हां।

ऊपरला वाक्यां रै मांय क्रिया सूं वणियोड़ा सब्द संग्या रै ज्यां प्रियोग हुवा है। इण कारण सूं अैड़ा सब्दां नै ई संसक्रत रै

मुजब राजस्थांनी में ई 'क्रियावाचक संग्या' कैवै है। अैड़ी संग्याआं क्रिया रै साधारण रूप में रैवै है। इण क्रियावाचक सग्या सव्दां री कारक रचना ओकारांत संग्या सव्दां रै समांन होवै है। नै घणकरी अेक वचन ईज होवै है।

१. पडण वालो [आलो] कुण है।
२. जावणियो कुण है।
३. लेखणियो [लिखणियो] आयो है।
४. गाडो आवण वाली है, वैगा हालौ।
५. लिखणहार कितरा है।
६. जदतद ही जीव जावणहार है।

ऊपरला लिखियोड़ा क्रिया वाचक संग्याआं रै विक्रत रूपां में 'आलो' 'वालो' 'हारो' नै 'इवो' प्रत्यय जोड़ण सूं 'करतरी वाचक सग्या' [कर्त्तृवाचक संज्ञा] सव्द वणै है। पण क्रिया रै आगे 'इयो' प्रत्यय सूं कोरा पुल्लिंग मे ही क्रिया वाचक सग्या सव्द वणै है। इण सव्दां रो प्रियोग विसेसणां रै जैड़ो होवै है। नै कदेई कदेई भविसत काल रो भी अरथ प्रगट करै है। इण सव्दां रा रूप ओकरांत विसेसणां रै जैड़ा विसेस्य रै लिंग, वचन मुजव होवै है। पण 'इयो' प्रत्यय सूं वणण वाला सव्द तो केवल पुल्लिंग में इज रैवै है।

नोट : राजस्थांनी [डिंगल] रै गीतां [छंद विशेप] मे 'हार' 'हारो' प्रत्यय रो प्रियोग घणै मांन सूं होवै है।

१. हसतोड़ौ [थको] आदमी चोखो को दीसै नीं।
२. गातोड़ो [गावतौ] मारग में जावै है।
३. वैंवतोड़ी [वैंवती] गाड़ी रै मांय मती बैठो।
४. उडतोड़ा [उडता] कागलां रै भाटो मती फैंक।

क्रिया वाचक संग्याआं रै अंत रो 'णो' लोप करण सूं जिको सब्द बणै है उण नै राजस्थांनी में ई धातु कैवै है। धातुआं रै अंत में 'तौ' 'तौड़ो' प्रत्यय लगावण सूं जिको सब्द बणै है उण नै राजस्थांनी में वरतमांन कालिक विसेसण कैवै है। औ विसेसण घणकरा विसेस्य रै लिंग वचन रै मुजब होवै है।

अविकारी अव्यय

१. बचियोड़ो भाचन गरीबां नै बांट दो।
२. खुलो घर मती राखौ।
३. पढ़ियोड़ो पाछो कांई पढ़ौ हौ।
४. खायोड़ो माल सरदा देवै है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय नीचे लकीर वाला [आला] सब्द भूत कालिक क्रदंत विसेसण है। इणां में ई धातु रै आगै 'इयोड़ो' प्रत्यय लगाणो पड़ै है जिको होणो क्रिया रौ भूत काल क्रदंत विसेसण होवै है। औड़ा विसेसणां रा रूप लिंग, वचन विसेस्य रै मुजब होवै है नै बहु वचन में 'इयोड़ो' प्रत्यय रै जागा 'इयोड़ा' प्रत्यय लगावणो पड़ै है।

अकरमक क्रियाआं सूं बणियोड़ा भूत कालिक क्रदंत विसेसण करतरी वाचक [कर्तृवाच्य] नै सकरमक क्रिया सूं बणियोड़ा करम वाचक [कर्तृ वाच्य] कैवै है।

अकरमक . गियोड़ो ला। पड़ियोड़ो पांन।
सकरमक : वायोड़ो खेत। खायोड़ो माल। तपायोड़ो लो।
कियोड़ो कांम। लियोड़ो नांम।

१. उण आवता पाण [सेती, इज, हिज, हीज, ही, ई, [थकां] रांमायण पढणी सरू कर दी।

२. कागद मिलतां इज वो ढील नई करैला।

३. वंधांणी ऊठतां हिज अमल नै चाय मांगै है।

४. छोरो गाडी में बैठतां हीज पड़ गयो।

ऊपरला वाक्यां रै मांय लकीर वाला [वाला] सब्द संसक्रत रै मुजब तातकालीक क्रदंत अव्यय [तात्कालिक कृदंत अव्यय] कवीजै है। वरतमांन कालिक क्रदंत विसेसणां रै अंत रै आखर 'तो' री जागा 'तां' नै आगै 'पांण', 'ईज', 'इज', 'हिज', 'हीज' 'ई' 'ही' 'थकां' जोड़ण सूं वणै है। इणां तातकालिक क्रदंत अव्यय सब्दां सूं प्रधान क्रिया रै साथै होवण आला [वाला] कांम री समापती रो ग्यान होवै है। अैड़ा क्रदंत ई अव्यय रै ज्यां हा क्रिया विसेसणां रै समांन प्रयोग मे आवै है। स क्रिया री विसेसता बतावै है।

तातकालिक क्रदंत नै प्रधांन क्रिया रो उद्देस्य घणकरो अेक इज होवै है। पण कदेई कदेई तातकालिक क्रदंत रो उद्देस्य बीजोई होवै है नै जे वो प्रांणी वाचक होवै तो संबंध कारक में आवै है। ज्यां :

१. उण हाकम हुता पांण सूंक लेणी सरू की।
२. सूरज किरण काढता इज चोर दौड गया।
३. थां रै आवता-ही कांम सरू कर दियो।

१. छोरा गुरांसा नै देखतां डरै है।
२. मारग हालतां घणो दुख होवैला।
३. पौसाल में भणीजतां म्हैं अेक नाग देखियो।
४. भथांणिये में रेतां [रेवतां] मदनलाल जी नै पचीस वरस हो गया।

उपर लिखियोड़ा वाक्यां रै मांय नीचे लकीर वाला सब्द 'अपूरण क्रिया वाचक [द्योतक] क्रदंत' कैवीजै है। क्यां कै इणां रै मांय प्रधांन क्रिया रै साथै होवण वालो कांम अधूरो [अपूर्ण] प्रगट होवै है। इण क्रदंत रा रूप भी तातकालिक क्रदंत रै जैड़ा होवै है। पण इण रै मांय थांण, इज ईज, हिज, हीज, ई, ही, थकां नई जोड़णा पड़ै है। इण क्रदंत रा उद्देस्य घणकरा संसक्रत रै चतुरथी विभक्ति में होवै है।

१. इतरो दिन चढियां, थे वठां आया।

२. इण कांम नै हुयां दस वरस हुग्या [हुवा]।

३. छोरो हाथ में कागद लियां आयो।

४. दिन ऊगां सैंग मिनख ग्या परा।

५. रावल रमियां पछै थे आया।

ऊपर लिखियोड़ा नीचे लकर वाला सब्द 'पूरण क्रिया वाचक [द्योतक] क्रदत' रा उदारण है इण क्रदंत सूं प्रधांन क्रियारी पूरणता प्रगट होवै है। अपूरण क्रिया वाचक [द्योतक] नै पूरण क्रिया वाचक [द्योतक] दोनोई क्रदत अव्यय नै क्रिया विसेसण होव है।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां रै मांय कृदंतां रा भेद बताओ ?

१. उठै ढांणी री रैंवण आली अेक लुगाई आई।

२. वे सदाई माता जी रा मिंदर में जाय नै भजन करता हा।

३. हालतां हालतां रोटी नई खावणी चाईजै।

४ खायोड़ो हजम हुयां रै पछै रोटी खावणी चाइजै।

५. वैवतां वैवतां मत भणीजो।

६. काले दो घड़ी दिन चढियां वे म्हारै खनै आया।

७. वो ईसवर रो नांम लेतो सरग गयो।

८. राजा असोक रा हुकम भाटां [पत्थरां] माथै खुदियोड़ा है।

बारमौं अध्याय

क्रिया रै कालां री बणावट

क्रिया रै वाच्य अरथ काल पुरख लिंग नै वचनां रै कारण सूं होवण वाला रूपां नै क्रिया रै कालां री बणावट [रचना] कैवै है।

वरतमांन कालां रै भेदां री बणावट

सामान्य वरतमांन काल

पुल्लिंग

खा, खाव, धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	खाऊं हूं, खावूं हूं खावां हां, खाऊं छूं खावूं छूं।	खावां हां, खावां छां।
मध्यम	थूं [तूं] खावै है थूं [तूं] खावै छै	थे खावौ हौ, थे खावौ छौ
अन्य	वो खावै है, वो खावै छै,	वे खावै है, वे खावै छै।

स्त्रीलिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	खाऊं हूं, खावूं, खावां हां खाऊं छूं, खावूं छूं	खावां हां, खावां छां।

मध्यम	थूं [तूं] खावै है, थूं [तूं] खावै है।	थे खावौ हो, थे खावौ छौ
अन्य	वा खावै है, वा खावै छै	वे खावै है, वे खावै छै

धातु खा नै खाव रै आगे पुल्लिग उत्तम पुरख अेक वचन मे ऊ प्रत्यय नै वहुवचन में आ, मध्यम पुरख अेक में अै नै वहु वचन में ओ नै अन्य पुरख में अेक वचन में नै बहु वचन में दोनों मे अै प्रत्यय लगाय नै होणो क्रिया रा रूप तथा छै रा प्रियोग लगाया जावै है नै स्त्री लिग में कोई तरै रो फरक नहीं होवै है।

पूरण वरतमांन काल

पुल्लिग

खा, खाव, धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं खायो है [छै] म्हैं खादो [ध] है [छै]	म्हे खाया है [छै] म्हे खादा [ध] है [छै]
मध्यम	[तूं] खायो है [छै] थैं [थूं] खादो [ध] है [छै]	थे खायो है [छै] थे खादो [ध] है [छै]
अन्य	उण खायो है [छै] उण खादो [ध] है [छै]	उणां खायो है [छै] उणां खादो [ध] है [छै]

स्त्री लिग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं खायो है [छै] म्हैं खादो [ध] है [छै]	म्हे खायो है [छै] म्हे खादो [ध] है

मध्य	थैं [तूं] खायो है [छै] थैं [तूं] खादो [ध] है [छै]	थे खायो है [छै] थे खादो [ध] है [छै]
अन्य	उण खायो है [छै] उण खादो [ध] है [छै]	उणां खायो है [छै] उणां खादो [ध] है [छ]

भूत कालिक क्रदत रा 'ड़ो' 'ड़ी' 'ड़ा' प्रत्ययां नै दूर करनै 'होणो' सहायक क्रिया रा सामान्य वरतमान रा रूप आगै लगाया जावै है।

सभाव्य वरतमान काल

पुलिंग

खा, खाव, धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं सायत खाऊं। म्हैं सायत खांवूं।	म्हे सायत खावां।
मध्यम	थूं [तूं] सायत खावै है	थे सायत खावो हो [छो]
अन्य	वो सायत खावै है [छै]	वे सायत खावै है [छ]

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन

उत्तम	म्हैं सायत खाऊं, म्हैं सायत खांवूं।	म्हे सायत खावां।
मध्यम	थूं [तूं] सायद खावै है [छै]	थे सायत खावो हो। [छो]
अन्य	वा सायत खावै है [छै]	वे सायत खावै है [छै]

सामान्य वरतमांन काल रै रूपां रै प्रथम 'सायत' सब्द लगा वण सूं संभाव्य वरतमांन काल रा रूप वणै है।

प्रतख विधि

पुल्लिग

खा, खाव, धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं खाऊं। म्हैं खावूं। हूं, म्हैं खावां	म्हे खावां।
मध्यम	थूं [तूं] खा।	थे खाओ।
अन्य	वो खावै।	वे खावै।

प्रतख विधि रा रूप मध्यम पुरख अेक वचन नै छोड बाकी रा धातु रै आगै ऊं, आं, औ, नै ओ प्रत्यय जोडिया जावै है। नै मध्यम पुरख अेक वचन धातु रै रूप में इज रैवै है।

सदिग्ध वरतमांन काल

पुल्लिग

खा, खाव, धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं खावतौ होऊंला।	म्हे खावता होवांला
मध्यम	थूं [तूं] खावतौ होवैला	थे खावता होवौला
अन्य	वो खावतौ होवैला।	वे खावता होवैला

स्त्रीलिग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं खावती होऊंला	म्हे खावती होवांला।
मध्यम	थूं [तूं] खावती होवैला	थे खावती होवौला।
	थूं [तूं] खावती हुईस	थे खावती होवैली।
अन्य	वा खावती होवैला, होवैली	वे खावती होवैला।
	ओ खावती हुस्यै	ओ खावती हुस्यै
	वे खावती होवैली	

संदिग्ध वरतमांन रा रूप बणावण सारू वरतमांन कालिक क्रदंत रै आगे होणो सहायिक क्रिया रा सामान्य भविसत काल रा रूप जोड़ण सूं बणै है।

हेतु हेतु मद वरतमान काल्

पुल्लिग

खा , खाव , धातु

पुरुष	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं खाऊं तौ , म्हनैं भी दो	म्हे खावां तौ
मध्यम	थूं [तूं] खावै तौ	थे खावौ तौ
अन्य	वो खावै तौ , ओ खावै तौ ,	वे खावै तौ , ओ खावै तौ

हेतु हेतु मद् वरतमान काल् रा रूप बणावण सारू संभाव्य वरतमान काल् रै रूपां रै आगै तौ सब्द जोड़िया जावै है ।

भूतकाल रै भेदा री बणावट

सामान्य भूत काल्

पुल्लिग

आ आव धातु

पुरुष	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं आयो	म्हे आया ।
मध्यम	थूं [तूं] आयो	थे आया ।
अन्य	वो आयो	वे आया ।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	वहु वचन
उत्तम	म्हैं आई	म्हे आई , म्हे आयै ।
मध्यम	थूं [तूं] आई	थे आई , थे आयै ।
अन्य	वा आई	वे आई , ओ आयौ ।

सामान्य भूतकाल भूत कालिक कृदत रै ड़ो, ड़ा, ड़ी प्रत्यय हटावण सूं करता रैं लिंग बचनां रै मुजब रूप वणै है ।

नोट : देणो , खाणो , पीणो , करणो , लेणो नै देखणो क्रियाआं रा सामान्य भूत रा ऊपर मुजब रूपां रै सिवाय बीजा रूप ई वणै है, जिकै नीचै दियो जावै है :

पुल्लिंग

खा खाव धातु

पुरख	अेक वचन	वहुवचन
उत्तम	म्हैं खाधौ । म्हैं खायौ ।	म्हे खाधा । म्हे खाया ।
मध्यम	थूं [तू] खाधौ ।	थे खाधा । थे खाया ।
	थूं [तूं] खायौ ।	
अन्य	उण खाधौ । उण खायौ	वां खाधा । वां खाया ।

स्त्री लिंग

पुरुष	ओक वचन	बहु वचन
	खाधी , खाई	खाधी , खाई , खाधं ,

पुल्लिग

दे धातु

ओक वचन	बहु वचन
म्हैं दीधौ [दियौ , दीनौ , दीन्हौ]	म्हे दीधा [दिया , दीना , दीन्हा]

स्त्री लिंग

ओक वचन	बहु वचन
म्हैं दीधी [दी , दीनी , दीन्ही]	म्हे दीधी [दी , दीनी , दीन्ही , दीनैं]

पुल्लिग

पी धातु

म्हैं पीधौ [पियौ , पीनौ , पीन्हौ]	म्हे पीधा [पिया , पीना , पीन्हा] म्हां पीना ।

स्त्री लिग

म्हैं पीधी [पी , पीनी , पीन्ही]	म्हे पीधी [पी पीनी , पीन्ही] पीनै ।

पुल्लिग
कर , धातु

म्हैं कीधौ [कियौ , कीनौ , कीन्हौ] म्हैं कीद्दौ ।	म्हे कीधा [किया , कीन कीन्ही]

स्त्री लिग

म्हैं कीधी , म्हैं कीदी , [की , कीनी , कीन्ही]	म्हे कीधी , म्हे कीनै [की, कीनी , कीन्हा]

पुल्लिग
'लै' 'धातु'

म्हैं लीधौ [लियौ, लीनौ, लीन्हौ]	म्हे लीधा लिया लीनाल़ीन्हा

स्त्री लिंग

एक वचन	बहु वचन
म्हूं लीधी [ली, लीनी, लीन्ही	म्हे लीधी [ली, लीनी, लीन्ही] म्हां लीदी, म्हां लीनी।

अपूरण भूत काल

"आ", "आव" धातु

पुरख	अेक वचन	बहुवचन
उत्तम	म्हूं आवतौ हो। (तौ, हंतौ, हुंतौ, हतौ छो)	म्हे आवता हा। (ता, हंता, हुता, हता)
मध्यम	थूं (तूं) आवतौ हो। (छौ)	थे आवता हा। (छा)
अन्य	वो आवतौ हो। (छौ)	वै आवै हा।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहुवचन
उत्तम	म्हूं आवती ही। (ती, हंती, हुती, थी)	म्हे आवती ही। (ती, हंती, हुती, हती, छी)
मध्यम	थूं (तूं) आवती ही। (छी)	थे आवती ही। (छी)
अन्य	वा आवती ही। (छी)	वे आवती ही। (छी)

मध्यम	थूं [तूं] आवती ही । [छी]	थे आवती ही । [छी]
अन्य	वा आवती ही । [छी]	वे आवती ही । [छी]

धातु रै आगे पुल्लिग अेक वचन में तौ, हंतौ, हुतौ, हौ नै पुल्लिग बहु वचन में ता, हंता, हुता, हता, हा प्रत्यय लगाया जावै है नै स्त्री लिंग में अै ईज प्रत्यय ईकारांत किया जावै है।

पूरण भूत काल

पुल्लिग

आ आव धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हूं आयो हौ [छौ, तौ, हंतौ, हुतौ, हतौ]	म्हे आया हा [छा, ता, हता, हुता, हता]
मध्यम	थूं [तूं] आयो हौ [छौ, तौ, हंतौ, हुतौ, हतौ]	थे आया हा [छा, ता, हंता, हुता, हुतो]
अन्य	वो आयो हौ [छौ , तौ , हंतौ , हुतौ , हतौ]	वे आया हा [छा, ता, हंता हुता , हतौ]

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं आई ही [छी, ती, हंती , हुती , हती]	म्हैं आई ही [छी, ती, हंती , हुती , हती]
मध्यम	थूं [तूं] आई ही [छी, ती, हंती, हुती, हती]	थे आई ही [छी म्हे आये तै, हंती, हुती, हती] थे आये तै ,
अन्य	वा आई ही [छी, ती, हती, हुती, हती]	थे आई ही [छी ती, हंती, हुती, हती] ओ आयै त,

पूरण भूतकाल़ बणा बण साह सामान्य भूतकाल़ री क्रियाआं रै आगै 'होणा' सहायिक क्रिया रा भूतकाल़ रा रूप जोड़िया जावै है ।

संभाव्य भूत काल़

पुल्लिग

आ आव धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	[सायत] म्हैं आयो होऊं [वां]	म्हे आया होवां

मध्यम	थूं [तूं] आयो होवै।	थे आया होवौ।
अन्य	वो आयो होवै।	वे आया होवै।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	[सायत] म्हैं आई होऊं [वां]	म्हे आई होवां। म्हे आये हुवां
मध्यम	थूं [तूं] आई होवै।	थे आई होवौ। थे आये होवै
अन्य	वा आई होवै। ओ आई होवै।	वे आई होवै। ओ आये हुवै,

भूतकाल में भूतकालिक क्रदंत रा ड़ौ, ड़ा, ड़ी, प्रत्यय हटावरा सूं होणा सहायिक क्रिया रा संभाव्य भविसत काल रा रूप लिंग, वचन, रै अनुसार जोड़णा सूं बणै है।

सदिग्ध भूतकाल १

पुल्लिग

'अ' 'आव' धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं आयो होऊंला।	म्हे आया होवांला।
मध्यम	थूं [तूं] आयो होवैला	थे आया होवौला।
अन्य	वो आयो होवैला।	वे आया होवैला।

स्त्रीलिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हूं आई होऊंला।	म्हे आई होवांला।
मध्यम	थूं [तूं] आई होवैला।	थे आई होवौला।
अन्य	वो आई होवैला।	वे आई होवैला।

संदिग्ध भूतकाल २

पुल्लिंग

'आ' 'आव' धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हूं आवतो होऊंला	म्हे आवता होवांला।
मध्यम	थूं [तूं] आवतो होवैला।	थे आवता होवौला।
अन्य	वो आवतो होवैला।	वे आवता होवैला।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हूं आवती होऊंला।	म्हे आवती होवांला।
मध्यम	थूं [तूं] आवती होवैला।	वे आवती होवौला।
अन्य	वो आवती होवैला।	वे आवती होवैला।

न० १ संदिग्ध भूतकाल रा रूप बणावण सारू भूतकालिक कृदंत रै अंत रा प्रत्यय 'ड़ो, ड़ा, ड़ी' रै हटाण सूं नै सामान्य भविसत काल रा रूप जोड़ण सूं बणै है।

इणीं प्रकार नं० २ रा संदिग्ध भूतकाल रा रूप बणावण सारू बरतमांन कालिक कृदंत रा अंत रा 'ड़ो', 'ड़ा', 'ड़ी' प्रत्यय हटावण सूं नै सामान्य भविसत काल रा रूप जोड़ण सूं बणै है।

सामान्य हेतु हेतु मद्भूत

पुल्लिंग

'आ' 'आव' धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं आवतो।	म्हे आवता।
मध्यम	थूं [तूं] आवतो।	थे आवता।
अन्य	वो आवतो।	वे आवता।

स्त्रीलिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं आवती।	म्हे आवती।
मध्यम	थूं [तूं] आवती।	थे आवती।
अन्य	वा आवती।	वे आवती।

सामान्य हेतु हेतु मद्भूत बणावण सारू लिंग, वचन रै अनुसार धातु रै आगे 'तो, ता, ती' लगाया जावै है।

अंतरित हेतु हेतु मद्भूत

पुल्लिंग

'आ' 'आव' धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं आयो होतो तो।	म्हे आया होता तो।

मध्यम	थूं [तूं] आयो होतो तो।	थे आया होता तो।
अन्य	वो आयो होतो तो।	वे आया होता तो।

स्त्रीलिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हूं आई होती तो।	म्हे आई होती तो।
मध्यम	थू [तूं] आई होती तो।	थे आई होती तो।
अन्य	वा आई होती तो।	वे आई होती तो।

अंतरित हेतु हेतु मद्भूत बणावण सारू सामान्य भूत काल री क्रिया रै आगे 'होणो' सायक क्रिया रा विकार दरसक रूप 'होतो' 'होता' 'होती' लिंग वचन रै अनुसार जोड़िया जावै है।

अपूरण हेतुहेतु मद्भूत

पुल्लिंग

'आ' 'आव' धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हूं आवतो होतो [होवतो]।	म्हे आवता होता [होवता]
मध्यम	थूं [तूं] आवतो होतो [होवतो]।	थे आवता होता [होवता]
अन्य	वा आवती होती [होवती]।	वे आवता होता [होवता]

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहुवचन
उत्तम	म्हैं आवती होती [होवती]	म्हे आवती होती [होवती]
मध्यम	थूं [तूं] आवती होती [होवती]	थे आवती होती [होवती]
अन्य	वा आवती होती [होवती]	वे आवती होती [होवती]

अपूरण हेतुहेतु मद्भूत रा रूप बणावण सारू सामान्य हेतु हेतु मद्भूत रै आगे वरतमांन कालिक क्रदंत रा विकार दरसक 'होणो' सहायक क्रिया रा रूप 'ड़ो' 'ड़ा' 'ड़ी' हटाय नैं लिंग वचन रै मुजब जोड़िया जावै है।

" भविसत काल़ रै भेदां री बणावट "

सामान्य भविसत काल़

पुल्लिग

" जा ", " जाव " धातु

पैलो रूप

पुरख	अेक वचन	बहुवचन
उत्तम	म्हैं जाऊंला, म्हैं जाऊंलो, म्हैं जाऊं।	म्हे जावांला, म्हे जावां।
मध्यम	थूं (तूं) जावैला, थूं जावैलो, थूं जाई।	थे जावोला, थे जावो।
अन्य	वो जावैला, वो जावैलो, वे जाई।	वे जावैला, वे जाई।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहुवचन
उत्तम	म्हैं जाऊंला, म्हैं जाऊंली, म्हैं जाऊं।	म्हे जावांला, म्हे जावांली, म्हे जावां।
मध्यम	थूं (तूं) जावैला, थूं (तूं) जावैली, थूं (तूं) जाई।	थे जावौला, थे जावौली, थे जावौ।
अन्य	वा जावैला, वा जावैली, वा जाई।	वे जावैला, वे जावैली, वें जाई।

दूजो रूप

पुल्लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं जासूं, हूं जाही हू जासी, हू आईस, हूं जाईह म्हैं जास्यूं, हूं जाऊं, हूं जाहूं।	म्हे जासां, म्हे जास्यां, म्हे जाहां, म्हे जार.यां।
मध्यम	थूं (तूं) जाईह, थूं (तूं) जाईस, थूं (तू) जासी, थूं जाही।	थे जाहो, थे जासौ, थे जास्यो, थे जार.यो।
अन्य	ओ (वो) जासी, ओ (वो) जास्यै, ओ (वो) जार.यै, ओ (वो) जाही (ई)।	ओ (वे) जाही, ओ (वे) जासी, ओ (वे) जाई, ओ (वे) जास्यै, ओ (वे) जार.यै।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	हूं जाईह, म्हैं जासूं, हूँ जाऊँ (ऊँ), हूं जाईस, म्हैं जास्यूं।	म्हे जाहां, म्हे जासां, म्हे जास्यां, म्हे जार.यां।

मध्यम	थूं (तूं) जाईह, थूं (तूं) जाईस, थूं (तूं) जाजी थूं (तूं) जाही।	थे जाहौ, थे जास्यो, थे जासयौ, थे जासौ।
अन्य	ओ (बा) जाइं (ही), ओ (बा) जासयै, ओ (बा) जास्यै, बो (वा) जासी।	ओ जाही (ई), वे जासी, ओ जास्यै ओ जासयं।

तीजौ रूप

पुल्लिंग

पुरख	अेक वचन	बहुवचन
उत्तम	म्हैं जाऊंगो।	म्हे जावांगा।
मध्यम	थूं (तूं) जावैगो, थूं (तूं) जायगो।	थे जावोगा।
अन्य	बो (वो) जावैगो वो (वो) जायगो।	वे जावैगा, वे जायगा।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं जाऊंगी।	म्हे जावांगी।
मध्यम	थूं (तूं) जावैगी।	थे जावोगी।
अन्य	बा (वा) जावैगी, बा (वा) जायगी।	वे (वे) जावैगी, वे (वे) जायगी।

"संभाव्य भविसत काल"

पुल्लिग

'जा', 'जाव', धातु

पुरख	अेक वचन	बहुवचन

उत्तम	सायद् म्हैं जाऊं।	सायद म्हे जावां, सायद म्हे जाहां, सायद म्हे जाआं।
मध्यम	सायद् थूं (तूं) जावै (अै)	सायद थे जावौ (औ)
अन्य	सायद् वो (ओ) जावै (अै)	सायद् वे जावै (अै)

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहुवचन
उत्तम	सायद् मैं जाऊं	सायद म्हे जावां, सायद् म्हे जाहां, सायद म्हे जाआं।
मध्यम	सायद थूं (तूं) जावै (अै)	सायद् थे जावौ (औ)
अन्य	सायद वो (ओ) जावै (अै)	सादय वे जावै (अै)

परोक्ष विधि

(साधारण)

[परोक्ष विधि रा रूप केवल् मध्यम पुरख अेक वचन में ईज वणै है]

पुरख	अेक वचन	बहुवचन
मध्यम	थूं (तूं) जा थूं (तूं) जाजै थूं जाअे, थूं जावजै।	थे जावो (ओ), थे जाजो,

हेतु हेतु मद भविसत काल्

'जा' 'जावे' धातु

पुरख	एक वचन	बहु वचन
उत्तम	आवैला तो म्हैं जाऊँला	म्हे आवाला तो
मध्यम	थूं [तूं] आवैला [लौ] तो	थे आवोला तो
अन्य	वो आवैला [लौ] तो	वे आवैला तो

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	वहु वचन
उत्तम	आवैला तो म्हे जाऊंला [ली]	म्हे आवांला [ली] तो
मध्यम	थूं [तूं] आवैला [ली] तो	थे आवौला [ली] तो
अन्य	वा आवैला [ली] तो	वे आवैला [ली] तो

सामान्य भविसत काल़ रै रूप रै आगे 'तो' सब्द जोड़ण सूं हेतु मद् भविसत काल़ रा रूप वणै है।

करम वाच्य में कालां री वणावट

करमवाच्य [कर्मवाच्य] क्रिया रा रूप केवल सकरमक धातुआं सूं ईज वण है। इण कारण सूं करमवाच्य वणावण रै सारू सकरमक, धातु रै सामान्य भूत काल़ री क्रिया रै आगे 'जाणो' सहायक क्रिया रा सब काल़ां नै अरथां रा रूप जोड़िया जाव है। अथवा सकरमक क्रियाआं रै आगे 'ईजैं' प्रत्यय लगायो जावै है। करमवाच्य रै मांय करम करता [उद्देस्य] रै अप्रतख [अप्रत्यक्ष] रूप रै माय सब कारका में आवै है नै क्रिया रा लिंग, वचन, पुरख करम रै अनुसार होवै है। घणकरो करता कारक गुप्त रेवै है अथवा करण कारक रै चिन्ह रै साथै प्रयोग में आवै है। ज्यां

पांणी लावीजै है।

छोकरा सू पाणी लायो जावै है।

आगे देखणो सकरमक क्रिया रै करमवाच्य [कर्मवाच्य] रा केवल

पुल्लिग रा रूप दियो जावै है। स्त्री लिंग रा रूप करत्रीवाच्य काल रचना रै मुजब बणाया जा सकै है।

सामान्य वरतमान काल

[कर्म उद्देश्य]

पुल्लिंग

देख, धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखियो जाऊं हूं [छूं]	म्हे देखिया जावां हां [छां]
	हूं देखियो जावां हां।	म्हे देखीजां हां [छां]
	हूं देखीजां हा।	
	म्हैं देखूं जूं हूं।	
मध्यम	थूं [तूं] देखियो जावै	थे देखिया जावौ हौ [छा]
	थूं [तू] देखी जै ह [छै]	थे देखी जौ हौ [छौ]
अन्य	वो देखियो जावै है [छै]	वे देखिया जावै है [छै]
	वो देखी जै है [छै]	वे देखी जै है [छै]
	ओ देखी जै है [छ]	ओ देखी जै है [छै]

स्त्री लिग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखी जाऊं हूं [छूं]	म्हे देखी जावां हां [छा]
	हूं देखी जावां हां	म्हे देखी जां हां [छा]

म्हैं देखी जूं हूं [छूं]
हूं देखी जां हां।

मध्यम	थूं [तूं] देखी जावै है [छै]	थे देखी जावौ हौ [छौ]
	थूं [तूं] देखी जै है [छै]	थे देखी जौ हौ [छौ]
अन्य	वा देखी जावै है [छै]	वे देखी जावै है [छै]
	ओ देखी जावै है [छै]	ओ देखी जावै है [छै]
	वा देखी जै है [छै]	वे देखी जै है [छै]
	ओ देखी जै है [छै]	ओ देखी जै है [छै]

पूरण वरतमांन काल

पुल्लिग

देख, धातु

[पुरु]ख	अेक वचन	बहु वचन
[उ]त्तम	म्हैं देखियो गयो हूं [छूं]	म्हे देखिया गया हां [छां]
	हूं देखियो गयो हां	म्हे देखीजिया हां [छां]
	म्हैं देखिजियो हूं [छूं]	
	हूं देखीजियो हां।	
[मध्]यम	थूं [तू] देखियो गयो है [छै]	थे देखिया गया हौ [छौ]
	थूं [तूं] देखीजियौ है [छै]	थे देखिजिया हौ [छौ]
[अन्]य	वो देखियो गयो है [छै]	वे देखिया गया है [छै]
	ओ देखियो गयो है [छै]	ओ देखिया गया है [छै]

	वो देखीजियो है [छै]	वे देखीजिया है [छै]
	ओ देखीजियो है [छै]	ओ देखीजिया है [छै]

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हे देखी गई हूं [छूं]	म्हे देखी गई हां [छां]
	हू देखी गई हां	
	म्हे देखी जी हूं [छूं]	म्हे देखी जी हां [छां]
	हू देखी जां हां ।	म्हे देखी जां हां ।
मध्यम	थूं [तूं] देखी गई है [छै]	थे देखी गई हो [छो]
	थूं [तूं] देखी जी है [छै]	थे देखी जी हो [छो]
अन्य	वा देखी गई है [छै]	वे देखी गई है [छै]
	ओ देखी गई है [छै]	ओ देखी गई है ।
	वा देखी जै है [छै]	वा देखी जै है ।
	ओ देखी जै है [छै]	ओ देखी जै है ।

सभाव्य वरतमान काल

पुल्लिग

देख , धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हें देखियो जाऊं ।	म्हे देखिया जावां ।

	हूं देखियो जावां ।	म्हे देखी जां ।
	म्हैं देखी जूं ।	
	हूं देखी जां ।	
मध्यम	थूं [तूं] देखियो जावै	थे देखिया जावौ ।
	थूं [तूं] देखीजै ।	थे देखी जौ ।
अन्य	वो देखियो जावै ।	वे देखिया जावै ।
	ओ देखियो जावै ।	ओ देखिया जावै ।
	वो देखी जै	वे देखी जै ।
	ओ देखी जै ।	ओ देखी जै ।

स्त्रीलिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखी जाऊं ।	म्हे देखी जावां ।
	हूं देखी जावां ।	म्हे देख्यो जावां ।
	म्हैं देखी जूं ।	म्हे देखी जां ।
	हूं देखी जां ।	
मध्यम	थूं [तूं] देखी जावै ।	थे देखी जावो
	थूं [तूं] देखी जै ।	थे देखी जावौ ।
		थे देखी जौ ।
अन्य	वा देखी जावै ।	वे देखी जावै ।
	ओ देखी जावै ।	ओ देखी जावै ।

वा देखी जै।	वे देखी जै।
ओ देखी जै।	ओ देखी जै।

सदिग्ध वरतमान काल

पुल्लिग

देख, धातु

पुरख	ओक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं [हूॅ] देखियो जावतो होऊंला [होऊ लो] [होसूं] हूं देखिगो जावतो हुईस।	म्हे देखिया जावता। होवांला [होस्यां, हुस्या, होसां]
	म्हैं [हूं] देखीजतो होऊंला [लो] [होसूं] हूं देखीजतो हुईस।	म्हे देखीजता होवांला [होस्यां, हुस्यां, होसा]
मध्यम	थूं [तूं] देखियो जावतो [जातो] होवैला। [लो] [हुईस]।	थे देखिया जावता [जाता] होवौला [हुस्यो, होस्या होसो]
	थू [तूं] देखीजतो होवैला [हुईस] [लो]	थे देखीजता होवौला [हुस्यो, होस्यो होसो]

	वो [ओ] देखीजतो होवैला [हस्यै. होस्यै. होसै]	वे [ओ] देखीजता होवैला [हस्यै. होस्यै. होसै]
	वो (ओ) देखियो जावतो (जातो) होवैला (हुस्यै , होस्यै , होस्यै) ।	वे (ओ) देखिया जावता (जाता) होवैला (हुस्यै , होस्यै , होसै , होस्यै)
उत्तम	म्हैं [हूं] देखी जावती [जाती] होऊंला [हुईस]	म्हे देखी जावती [जाती] होवांला । [ली]
	म्हैं [हूं] देखी जावती [जाती] होऊंला [ली] [हुईस]	म्हे देखै जावतै [जातै] हुस्यां [होस्यां, होसां]
		म्हे देखीजती होवांला [ली]
		म्हे देखीजतै हुस्यां [होस्यां]
मध्यम	थूं [तूं] देखी जावती [जाती] होवैला [ली] [हुईस]	थे देखी जावती होवौला [ली] थे देखै जावतै [जातै] हुस्यौ [होस्यौ]
	थूं [तूं] देखीजती होवैला [ली] [हुईस]	थे देखीजती होवौला [ली] थे देखीजतै हुस्यौ [होस्यौ]
अन्य	वा [ओ] देखी जावती [जाती] होवैला, [ली] [हुस्यै , होस्यै] होसै ।	वे देखी जावती [जाती होवैला (ली) ओ देखौ जावतै [जातै] हुस्यै [होस्सै, होसै]
		वे देखीजती होवैला [ली]

वा [श्रो] देखीजती होवैला [ली] [हुस्यै, होस्यै, होसी]	श्रो देखीजतै हुस्यै [होस्यै] [होसै]

संदिग्ध वरतमान काल रो 'गो' 'गी' रो रूप

पुल्लिग

देख धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखियो जावतो होऊँगो	म्हे देखिया जावता होवांगा
	म्हैं देखीजतो होऊँगो	म्हे देखीजता होवांगा
मध्यम	थूं [तूं] देखियो जावतो होवैगो।	थे देखिया जावता होवौला
	थूं [तूं] देखीजतो होवैगो	थे देखीजता होवौगा
अन्य	वो [बो] देखियो जावतो होवैगो।	वे [वे] देखिया जावता होवैगा।
	वो [बो] देखीजतो होवैगो	वे [वे] देखीजता होवैगा।

स्त्रीलिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखी जावती होऊंगी।	म्हे देखी जावती होवांगी।
	म्हैं देखीजती होऊंगी।	म्हे देखीजती होवांगी

मध्यम	थूं [तूं] देखी जावती होवैगी	थे देखी जावती होवौगी
	थूं [तूं] देखीजती होवैगी	थे देखीजती होवौगी।
अन्य	वा [बा] देखी जावती होवैगी	वे [बे] देखी जावती होवैगी
	वा [बा] देखीजती होवैगी	वे [बे] देखीजती होवैगी।

हेतु हेतु मद वरतमान काल
पुल्लिग
देख धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	जे म्हैं देखियो जावतौ [जातौ] होतौ तौ।	जे म्हे देखिया जावता [जाता] होता तौ।
	जे हूं देख्यो जात होत तौ।	जे म्हे देख्या जात होत तौ।
	जे म्हैं देखीजतौ होतौ तौ।	जे म्हे देखीजता होता तौ।
	जे हूं देखीजतौ हौत तौ।	जे म्हे देखीजता होत तौ
मध्यम	जे थूं [तूं] देखियौ जावतौ [जातौ] होतौ तौ।	जे थे देखिया जावता [जाता] होता तौ।
	जे थूं [तूं] देख्यौ जावतौ [जातौ] होत तौ।	जे थे देख्या जावता [जाता] होत तौ।
	जे थूं [तूं] देखीजतौ होतौ तौ	जे थे देखीजता होता तौ
	जेथूं [तूं] देखीजतौ होत तौ	जे थे देखीजता होत तौ

अन्य	जे वो देखियो जावतौ [जातौ] होतौ तौ ।	जे वे देखिया जावता [जाता] होता तौ ।
	जे ओ देख्यो जावतौ [जातौ] होत तौ ।	जे ओ देख्या [जावत जाता होत तौ ।
	जे वो देखीजतौ होतौ तौ	जे वे देखीजता होता
	जे ओ देखीजतौ होत तौ	जे ओ देखीजता होत

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	जे म्हैं देखती जावती [जाती] होती तौ ।	जे म्हे देखी जावती [जाती] होती तौ ।
	जे हूँ देखी जावती [जाती] होत तौ ।	जे म्हे देख्यै जावतै [जातै] होत तौ ।
	जे म्हैं देखीजती होती तौ	जे म्हे देखीजती होती
	जे हूं देखीजती होत तौ ।	जे म्हे देख्यै जातै हो [हुतै] तौ ।
मध्यम	जे थूं [तूं] देखी जावती [जाती] होती तौ ।	जे थे देखी जावती [जाती] होती तौ ।
	जे थूं [तूं] देखी जावती [जाती] होत तो	जे थे देख्यै जावतै [जा हौतै तौ ।
	जे थूं [तूं] देखीजती होती तौ	जे थे देखीजती होती
	जेथू [तू] देखीजती होत तौ	जे थे देखीजतै होतै तौ

अन्य	जे वा देखी जावती [जाती] होती तौ।	जे वे देखी जावती [जाती] होती तौ।
	जे ओ देखी जावती [जाती] होत तौ।	जे ओ देख्यै जावतै [जातै] होतै तौ।
	जे वा देखीजती होती तो।	जे वे देखीजती होती तौ।
	जे ओ देखीजती होत तौ।	जे ओ देख्यै जावतै होतै तो [होत तौ]

सामान्य भूत काल

पुल्लिग

देख धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं [हूं] देखियो [देख्यो] गयो	म्हे देखिया [देख्या] गया
	म्हैं [हूं] देखीजियो [देखीज्यो]	म्हे देखीजिया [देखीज्या]
मध्यम	थूं [तू] देखियो [देख्यो] गयो	थे देखिया [देख्या] गया।
	थूं [तूं] देखीजियो [देखीज्यौ]	थे देखीजिया [देखीज्या]
अन्य	वो [ओ] देखियो [देख्यो] गयो।	वे [ओ] देखिया [देख्या] गया।
	वो [ओ] देखीजियो [देखीज्यौ]	वे [ओ] देखीजिया [देखीज्या]

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं [हूं] देखी गई।	म्हे देखी गई।
		म्हे देख्यै गयै।
	म्हैं [हूं] देखी जी।	म्हे देखी जी
		म्हे देखी ज्यै।
मध्यम	थूं [तू] देखी गई।	थे देखी गई
		थे देख्यै गयै।
	थू [तूं] देखी जी	थे देखी जी।
		थे देखी ज्यै।
अन्य	वा [ओ] देखी गई	वे देखी गई
		ओ देख्यै गयै।
	वा [ओ] देखी जी	वे देखी जी
		ओ देखी ज्यै।

अपूरण भूत काल

पुल्लिग

जाव, धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं [हूं] देखियौ जावतौ [जातौ] हो [हुतौ]।	म्हे देखिया जावता [जाता] हा [हुता]

	म्हैं (हूॅं) देखीजतौ हौ (हुतौ, हतै)	म्हे देखीजता हा (हुता, हता)
मध्यम	थूं (तूं) देखियौ जावतौ (जातौ) हौ (हुतौ)	थे देखिया जावता (जाता) हा (हुता)
	थूं (तूं) देखीजतौ हौ (हुतौ)	थे देखीजता हा (हुता)
अन्य	वो (ओ) दखियो (देख्यो) जावतौ (जातौ) हो (हुतौ)।	वे (ओ) देखिया (देख्या) जावता (जाता) हा (हुता)
	वो (ओ) येखीजतौ हौ (हुतौ)	व (ओ) देखीजता हा (हुता)

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं (हूं) देखी जावती (जाती) ही (हुती)	म्हे देखी जावती (जाती) ही। म्हे देख्यै जावतै हुतै
	म्हैं (हूं) देखीजती ही (हुती)	म्हे देखीजती ही। म्हे देखीजतै हुतै।
मध्यम	थूं (तूं) देखी जावती (जाती) ही (हुती)	थे देखी जावती (जाती) ही। थे देख्यै जावतै हुतै
	थूं (तूं) देखीजती ही (हुती)	थे देखीजती ही। थे देखीजतै हुतै।
अन्य	वा (ओ) देखी जावती	वे देखी जावती

(जाती) ही (हुती)	(जाती) ही ।
	श्रो देख्यै जावतै
	(जातै) हुतै ।
वा (श्रो देखीजती ही (हुती)	वे देखीजती ही ।
	श्रो देखीजतै हुतै ।

पूरण भूत काल

पुल्लिग

देख , धातु

पुरख	श्रेक वचन	वहु वचन
उत्तम	म्हैं देखियो गयौ हौ	म्हे देखिया गया हा ।
	हूं देखीज्यौ तौ ।	म्हे देख्या गया ता
		(देखीज्याता) ।
	म्हैं देखीजियौ हौ ।	म्हे देखीजिया हा ।
	हूँ देखीज्यौ तौ ।	म्हे देखीज्या ता ।
मध्यम	थूं (तूं) देखीजियो गयौ हौ	थे देखिया गया हा ।
	थूं (तूं) देख्यो गयो तौ	थे देख्या गया ता
	(देखीज्यौ तौ)	(देखीज्याता)
	थूं (तूं) देखीजियौ हौ	थे देखीजिया हा ।
	थूं (तूं) देखीज्यौ तौ ।	थे देखीज्या ता ।
अन्य	वो देखियौ गयौ हौ ।	वे देखिया गया हा ।
	श्रो देख्यौ गयौ तौ ।	श्रो देख्या गया ता ।

वो देखीजियौ हौ ।	वे देखीजिया हा ।
ओ देखीज्यौ तौ ।	ओ देखीज्या ता ।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं (हूं) देखी गई ही (ती)	म्हे देखी गई ही ।
		म्हे देख्यै गयै तै ।
	म्हैं (हूं) देखी जी ही (ती)	म्हे देखी जी ही ।
		म्हे देखी ज्यै तै ।
मध्यम	थूं (तूं) देखी गई ही (ती)	थे देखी गई ही ।
		थे देख्यै गयै तै ।
	थूं (तूं) देखी जी ही (ती)	थे देखी जी ही ।
		थे देखी ज्यै तै ।
अन्य	वा (ओ) देखी गई ही (ती)	वे देखी गई ही ।
		ओ देख्यै गयै तै ।
	वा (ओ) देखी जी ही (ती)	वे देखी जी ही ।
		ओ देखीज्यै तै ।

संभाव्य भूत काल

पुल्लिंग

देव , धातु

पुरख	एक वचन	बहु वचन
उत्तम	[सायत] म्हैं देखियौ गयो होऊं ।	[सायत] म्हे देखिया गया हुवां ।
	[सायत] हूं देख्यौ गयौ होवां [हुवा]	[सायत] म्हे देख्या गया हुवां ।
	[सायत] म्हैं देखीजियो होऊं ।	[सायत] म्हे देखीजियो होयां ।
	[सायत] हूं देखीजियो हुवां	[सायत] म्हे देखीज्या हुवां
मध्यम	[सायत] थूं [तूं] देखियौ गयौ होवै	[सायत] थे देखिया गया होवौ ।
	[सायत] थूं देख्यौ गयो हुवै ।	[सायत] थे देख्या गया हुवौ ।
	[सायत] थूं [तूं] देखीजियौ होवै	[सायत] थे देखीजिया होवो ।
	[सायत] थूं [तूं] देखीज्यौ हुवै	[सायत] थे देखीज्या हुवौ ।
अन्य	[सायत] वो देखियो गयौ होवै	[सायत] वे देखिया गया होवै ।

	[सायत] ओ देख्यौ गयौ हुवै	[सायत] ओ देख्या गया हुवै।
	[सायत] वो देखीजियौ होवै	[सायत] वे देखीजिया होवै।
	[सायत] ओ देखीजियौ हुवै।	[सायत] ओ देखीज्या हुवै।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	(सायत) म्हैं देखी गई होऊं	(सायत) म्हे देखी गई होवां।
	(सायत) हूं देखी गई हुवां।	(सायत) म्हे देख्यै गयै हुवां।
	(सायत) म्हैं देखीजी होऊं	(सायत) म्हे देखीजी होवां।
	(सायत) हूं देखीजी हुवां।	(सायत) म्हे देखीज्यै हुवां
मध्यम	(सायत) थूं (तूं) देखी गई होवै।	(सायत) थे देखी गई होवौ।
	(सायत) थूं (तूं) देखी गई हुवै।	(सायत) थे देख्यै गयै हुवौ।
	(सायत) थूं (तूं) देखीजी होवै।	(सायत) थे देखीजी होवौ।

	(सायत) थूं (तूं) देखीजी हुवै।	(सायत) थे देखीज्यै हुवौ
अन्य	(सायत) वा देखी गई होवै	(सायत) वे देखी गई होवै
	(सायत) ओ देखी गई हुवै	(सायत) ओ देख्य गयै हुवै।
	(सायत) वा देखीजी होवै	(सायत) वे देखीजी होवै
	(सायत) ओ देखीजी हुवै	(सायत) ओ देखीज्यै हुवै

संदिग्ध भूत काल्

पुल्लिग

देख धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखियो गयो होऊंला (होसूं)	म्हे देखिया गया होवांला (होसां)
	हूं देख्यौ गयौ हुईस।	म्हे देख्या गया हुस्यां (होस्यां)
	म्हैं देखीजियौ होऊंला (होसूं)	म्हे देखीज्या होवांला (होसां)
	हूं देखीज्यौ हुईस।	म्हे देखीज्या हुस्यां (होस्यां)
मध्यम	थूं (तूं) देखियो गयौ होवैला।	थे देखिया गया होवौला

	थूं (तूं) देख्यौ गयो हुईस	थे देख्या गया हुस्यौ (होस्यो)।
	थूं (तूं) देखीजियौ होवैला	थे देखीजिया होवैला।
	थूं (तू) देखीज्यौ हुईस (होईस)	थे देखीज्या हुस्यौ (होस्यौ होसै)
अन्य	वो देखियो गयो होवैला	वे देखिया गया होवैला।
	ओ देख्यौ गयो हुस्यै (होस्यै , होसै)	ओ देख्या गया हुस्यै (होस्यै , होसै)
	वो देखीजियौ होवैला।	वे देखीजिया होवैला।
	ओ देखीज्यौ हुस्यै (होस्यै होसै)	ओ देखीज्या हुस्यै (होस्यै होसै)

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखी गई होऊंला (होसूं) (ली)	म्हे देखी गई होवांला (ली) (होसां)
	हूं देखी गई हुईस (होईस)·	म्हे देख्यै गयै हुस्यां (होस्यां)
	म्हैं देखी जी होऊंला (ली) (होसूं)	म्हे देखी जी होवांला (ली) होसां
	हूं देखीजी हुईस (होईस)	म्हे देखीज्यै हुयां (होस्यां , होसां)

मध्यम	थूं (तूं) देखी गई होवैला (ली) (होसी)	थे देखी गई होवैला (ली) (होसौ , होसै)
	थूं (तू) देखी गई हुईस	थे देख्यै गयै हुस्या (होस्यौ)
	थूं (तूं) देखीजी होवैला (ली)	थे देखीजी होवैला (ली) (होसौ)
	थूं (तूं) देखीजी हुईस (होईस)	थे देखीज्यै हुस्यै (होस्यौ)
अन्य	वा देखी गई होवैला (ली)	वे देखी गई होवैला (ली) (होसी)
	ओ देखी गई हुस्यै (होस्यै होसै)	ओ देख्यै गयै हुस्यै (होस्यै , होसै)
	वा देखीजी होवैला (ली)	वे देखीजी होवैला (ली)
	ओ दखीजी हुस्यै (होस्य होसै)	ओ देखीज्यै (हुस्यै) (होसै)

संदिग्ध भूतकाल काल रो , 'गो' 'गी' रो रूप

पुल्लिग

देख धातु

पुरख	ओक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हूं देखियौ गयो होऊंगो ।	म्हे देखिया गया होवांगा ।

	म्हैं देखीजियौ होऊंगो।	म्हे देखीजिया होवांगा।
ध्यम	थूं (तू) देखियौ गया होवैगो	थे देखिया गया होवौगा।
	थूं (तूं) देखीजियौ होवैगो।	थे देखीजिया होवौगा।
न्य	वो (बो) देखियौ गयो होवैगो।	वे (वे) देखिया गया हौवैगा।
	वो (बो) देखोजियौ होवैगो।	वे (बे) देखीजिया होवैगा

स्त्री लिंग

रख	अेक वचन	वहु वचन
त्तम	म्हैं देखी गई होऊंगी।	म्हे देखी गई होवांगी।
	म्हैं देखीजी होऊंगी।	म्हे देखीजी होवागी।
ध्यम	थू (तूं) देखो गई होवैगी।	थे देखो गई होवौगी।
	थूं (तूं) देखीजी होवैगी।	थे देखीजी होंवौगी।
न्य	वा (बा) देखी गई होवैगी।	वे (वे) देखो गई होवैगी
	वा (बा) देखीजी होवैगी।	वे (वे) देखोजी होवैगी

सामान्य हेतु हेतु मद्भूत

पुल्लिग

देख, धातु

रख	अेक वचन	बहु वचन
त्तम	म्हैं देखियौ जावतो (जातो)	म्हे देखिया जावता (जाता)

	हूं देख्यौ जात।	म्हे देख्या जात।
	म्हैं देखीजतो	म्हे देखीजता।
	हूं देखीजत।	म्हे देखीजत।
मध्यम	थूं (तूं) देखियौ जावतो	थे देखिया जावता (जाता)
	थूं (तूं) देख्यौ जात	थे देख्या जात।
	थूं (तूं) देखीजतौ।	थे देखीजता।
	थूं (तूं) देखीजत।	थे देखीजत।
अन्य	वो देखियो जावतो (जातो)	वे देखिया जावता (जाता)
	ओ देख्यौ जात।	ओ देख्या जात।
	वो देखीजतो।	वे देखीजता।
	ओ देखीजत।	ओ देखीजत।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखी जावती (जाती)।	म्हे देखी जावती (जाती)
	हूं देखी जात।	म्हे देखी जात (म्हे देख्यै जावतै)
	म्हैं देखीजती।	म्हे देखीजती।
	हूं देखीजत।	म्हे देखीजतै (देखीजत)
मध्यम	थूं (तूं) देखी जावती (जाती)	थे देखी जावती (जाती)

	थूं (तूं) देखीजात ।	थे देख्यै जातै (थे देख्य जात)
	थूं (तूं) देखीजती ।	थे देखीजती ।
	थूं (तूं) देखीजत ।	थे देखीजतै (थे देखीजत)
अन्य	वा देखी जावती (जाती)	वे देखी जावती (जाती)
	ओ देखी जात (देखीजत)	ओ देख्यै जातै (जात)
	वा देखीजती ।	वे देखीजती ।
	ओ देखीजत ।	ओ देखीजत, देखीजतै

अतरित हेतु हेतु मद भूत

पुल्लिग

देख , धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखियो गयौ होतौ ।	म्हे देखिया गया होता ।
	हूं देख्यो गयौ होत ।	म्हे देखिया गया होत ।
	म्हैं देखीजतौ होतौ ।	म्हे देखीजता होता ।
	हूं देखीजतौ होत ।	म्हे देखीजता होत ।
मध्यम	थूं [तूं] देखियौ गयौ होतौ ।	थे देखिया गया होता ।
	थूं [तूं] देखियौ गयौ होत ।	थे देखिया गया होत ।

	थूं [तूं] देखीजतौ होतौ।	थे देखीजता होता।
	थूं [तूं] देखीजतौ होत।	थे देखीजता होत।
अन्य	वो देखियौ गयौ होतौ)	वे देखिया गया होता।
	ओ देख्यौ गयौ होत।	ओ देख्या गया होत।
	वो देखीजतौ होतौ।	वे देखीजता होता।
	ओ देखीजतौ होत।	ओ देखीजता होत।

स्त्रीलिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखी गई होती।	म्हे देखी गई होती।
	हूं देखी गई होत।	म्हे देखी गई होत।
	म्हैं देखीजती होती।	म्हे देखीजती होती।
	हूं देखीजती होत।	म्हे देखीजतै होत।
मध्यम	थूं [तूं] देखी गई होती।	थे देखी गई होती।
	थूं [तू] देखी गई होत।	थे देख्यै गयै होतै [होत।
	थूं [तूं] देखीजती होती।	थे देखीजती होती।
	थूं [तूं] देखीजती होत।	थे देखीजतै होतै [होत]
अन्य	वा देखी गई होती।	वे देखी गई होती।
	ओ देखी गई होत।	ओ देख्यै गयै होतै [होत]
	वा देखीजती होती।	वे देखीजती होती।
	ओ देखीजती होत।	ओ देखीजतै होतै [होत]

अपूरण हेतुहेतु मंद् भूत

पुल्लिग

देख धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखियो जावतौ [जातो] होतौ।	म्हे देखिया जावता [जाता] होता।
	हूं देख्यौ जावतौ होत।	म्हे देख्या जात [जाता] होत।
	म्हैं देखीजतो होतौ।	म्हे देखीजता होता।
	हूं देखीजतो होत।	म्हे देखीजता होत।
मध्यम	थूं [तूं] देखियो जावतो [जातो] होतौ।	थे देखिया जावता [जाता] होता।
	थूं [तूं] देख्यो जात।	थे देख्या जात।
	थूं [तूं] देखीजतौ होतौ।	थे देखीजता होता।
	थूं [तूं] देखीजतो होत।	थे देखीजता होत।
अन्य	वो देखियो जावतो [जातौ] होतौ।	वे देखिया जावता [जाता] होता।
	ओ देख्यो जावतौ [जातो]	ओ देख्या जावता होत।
	वो दखीजतो हो तौ।	वे देखीजता होता।
	ओ देखीजतो होत।	ओ देखीजता होत।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखी जावती [जाती] होती।	म्हे देखी जावती [जाती] होती।
	हूँ देखी जावत [जावत] होत।	म्हे देखौ जावतै होतै [होत]
	म्हैं देखीजती होती।	म्हे देखीजती होती।
	हूं देखीजती होत।	म्हे देखीजतै होतै [होत]
मध्यम	थूं [तूं] देखी जावती [जाती] होती।	थे देखी जावती [जाती] होती।
	थूं [तू] देखी जावती [जाती] होत।	थे देख्यौ जावतै होतै [हौत]
	थूं [तूं] देखीजती होती।	थे देखीजती होती।
	थू [तूं] देखीजती होत।	थे देखीजतै होतै [हात]
अन्य	वा देखी जावती [जाती] होती।	वे देखी जावती [जाती] होती।
	ओ देखी जावती [जाती] होत।	ओ देख्यै जावतै होतै [होत]
	वा देखी जावती होती।	ओ देखीजतै होतै [होत]
	ओ देखीजती होत।	ओ देखीजतै होतै [होत]

सामान्य भविसत काल

पुल्लिग

देख , धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखियौ जाऊंला।	म्हे देखिया जावांला।
	हूं देख्यौ जाइस।	म्हे देख्या जास्यां [सां]
	म्हैं देखीजूंला।	म्हे देखीजांला।
		म्हे देखीजस्यां [सां]
मध्यम	थूं [तूं] देखियौ जावैला।	थे देखिया जावौला।
	थू (तूं) देख्यौ जाइस।	थे देख्या जास्यौ (सो)
	थूं (तूं) देखीजैला।	थे देखीजोला।
	थूं (तूं) देखीजी।	थे देखीजसौ (स्यौ)
अन्य	वो देखियौ जावैला।	वे देखिया जावैला (जासी)
	ओ देख्यौ जास्यैं।	ओ देख्या जास्यै।
	वो देखीजैला।	वे देखीजैला।
	ओ देखीजस्यै।	ओ देखीजस्यैं।

स्त्री लिग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखी जाऊंला।	म्हे देखी जावांला।
	हूं देखी जाईस।	म्हे देख्यै जास्यां।

	म्हैं देखीजूंला ।	म्हे देखीजांला ।
	हूं देखीजी ।	म्हे देखीजस्यां ।
मध्यम	थू (तूं) देखी जावैला ।	थे देखी जावौला ।
	थूं (तूं) देखी जाइस	थे देखी जास्यौ ।
	थूं (तूं) देखीजैला ।	थे देखीजौला ।
	थूं (तूं) देखीजीस (देखीजसी)	थे देखीजस्यौ (जासौ)
अन्य	वा देखी जावैला ।	वे देखी जावैला ।
	ओ देखी जास्यै (जासै)	ओ देख्ये जास्य (जासै)
	वा देखीजैला ।	वे देखीजैला ।
	ओ देखी जस्यै ।	ओ देखी जस्यै (जसै)

सामांन्य भविसत काळ काल रो 'गो' 'गी' रो रूप

पुल्लिंग

देख धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखियो जाऊंगो ।	म्हे देखिया जावांगा ।
	म्हैं देखीजूंगो ।	म्हे देखीजांगा
मध्यम	थूं (तूं) देखियौ जावैगो	थे देखिया जावौगा ।
	थूं (तूं) देखीजैगो ।	थे देखीजोगा ।

अन्य	वो (बो) देखियो जावैगो।	वे (बे) देखिया जावैगा।
	वो (बो) देखीजैगो।	वे (वे) देखीजैगो।

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखी जाऊंगी।	म्हे देखी जावांगी।
	म्हैं देखीजूंगी।	म्हे देखीजांगी।
मध्यम	थूं (तूं) देखी जावैगी।	थे देखी जावांगी।
	थूं (तूं) देखीजैगी।	थे देखीजैगी।
अन्य	वा (बा) देखी जावैगी।	वे (बे) देखी जावैगी।
	वा (बा) देखीजैगी।	वे (बे) देखीजैगी।

संभाव्य भविसत काल

पुल्लिंग

देख, धातु

पुरख	एक वचन	बहु वचन
ऊत्तम	(सायत) म्हैं देखियो जाऊं	(सायत) म्हे देखिया जावां
	(सायत) हूं देखीजां	(सायत) म्हे देखीजां।
	(सायत) म्हैं देखीजूं	(सायत) म्हे देखीजां।
मध्यम	(सायत) थूं (तूं) देखियो जावै।	(सायत) थे देखिया जावौ

	(सायत) थूं देख्यो जावै	(सायत) थे देख्या जावौ
	(सायत) थूं देखीजै	(सायत) थे देखीजौ
अन्य	(सायत) वो देखियो जावै	(सायत) वे देखिया जावै
	(सायत) ओ देख्यौ जावै	(सायत) ओ देख्या जावै
	(सायत) वो देखीजै	(सायत) वे देखीजै
	(सायत) ओ देखीजै	(सायत) ओ देखीजै

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	(सायत) म्हैं देखी जाऊं	(सायत) म्हे देखी जावां
	(सायत) हू देखी जावां	(सायत) म्हे देख्यै जावां
	(सायत) म्हैं देखीजूं	(सायत) म्हे देखीजां
	(सायत) हूं देखीजां	(सायत) म्हे देखीजा
मध्यम	(सायत) थूं (तूं) देखी जावै	(सायत) थे देखी जावौ
	(मायत) थूं देखीजै	(सायत) थे देखीजौ
अन्य	(सायत) वा देखी जावै	(सायत) वे देखी जावै
	(सायत) ओ देखी जावै	(सायत) ओ देख्यै जावै
	(सायत) वा देखीजै	(सायत) वे देखीजै
	(सायत) ओ देखीजै	(सायत) ओ देखीजै

परोक्ष – विधि

पुल्लिग

देख धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
मध्यम	थूं (तूं) देखियो जा	थे देखिया जावौ
	थूं देख्यो जा	थे देख्या जावौ
	थूं (तूं) देखीज	थे देखीजौ

स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
मध्यम	थूं (तूं) देखीजा	थे देखी जावौ
	थूं (तूं) देखीज	थे देखीजौ

हेतु-हेतु मद भविसत काल

पुल्लिग

देख धातु

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखायौ जाऊं तौ लेऊं।	म्हे देखाया जावां तौ लेलां (लेवां)
	हूं देखायौ जावां तौ लां (लेवां)	म्हे देखाया जावां तौ लां

	म्हैं देखीजूं तौ लेऊं	म्हे देखीजां तौ लेवां
	हूं देखीजां तौ लां	म्हे देखीजां तो लां
मध्यम	थूं (तूं) देखायौ जाव तौ लेवै	थे देखाया जावौ तौ लेवौ
	थूं (तूं) देखीजै तौ लेलं	थे देखीजौ तौ लेवौ
अन्य	वो देखायौ जावै तौ लेवै	वे देखाया जावै तौ लेवै
	ओ देखायो जावै तौ लै	ओ देखाया जावै तो लै
	वो देखीजै तौ लेवै	वे देखीजै तो लेवै
	ओ देखीजै तो ले	ओ देखीजै तौ लै

-स्त्री लिंग

पुरख	अेक वचन	बहु वचन
उत्तम	म्हैं देखी जाऊं तौ लेऊं	म्हे देखी जावां तौ लेवां
	हूं देखी जावा तो लां	म्हे देखी जावां तो लां
	म्हैं देखीजूं तो लेऊ	म्हे देखी जांतौ लेवां
मध्यम	थूं (तूं) देखी जावै तौ लेवै	थे देखी जावौ तौ लेवौ (लौ)
	थूं (तूं) देखीजै तौ लेवै (लै)	थे देखीजौ तौ लेवौ

भाववाच्य में कालांरी वणावट

भाववाच्य क्रिया केवल अकरसक क्रिया रौ वो रूप है जिको करसवाच्य रै जैड़ो होवै है। भाववाच्य रै मांय करम नईं होवै

है नै उण रो करता संसक्त रै मुजब त्रतीया विभक्ति (तृतीया विभक्ति) रै मांय अेकवचन में भाव रै रूप में प्रियोग होवै है। ज्यां :- म्हासूं दौड़ीजियौ कोयनी।

भाववाच्य क्रिया रौ प्रियोग बल नै कमजोरी प्रगट करण रै रूप में होवै है। पण इण क्रिया रा रूप सब काला नै क्रदंतां में नई होवै है।

अठै भाववाच्य रा केवल उणीज कालां रा रूप लिखिया जावै है जिणां में उणां रौ प्रियोग होवै है :—

अकरमक क्रिया हालणो

सामान्य वरतमांन काल

(भाव प्रयोग)

म्हासूं .... उणांसूं हालीजै है (छै)

सदिग्ध वरतमांन काल

म्हासूं .... उणांसूं हालीजतौ होवै।

संदिग्ध वरतमांन काल

म्हासूं .... उणां सूं हालीजतौ होवैला

म्हेसूं .... उवां सूं हालीजतौ हुस्यै (होस्यै)

म्हासूं .... बणांसूं हालीजतौ होवैगौ

हेतु-हेतु मद् वरतमांन काल

म्हांसू ....उणां सू हालीजतौ होवै तौ

पूरण वरतमान काल

म्हांसू ..... उणांसू हालीजियौ गयौ हौ।

भूत काल

सामान्य भूतकाल

म्हांसू ... .उणांसू हालीजियो
म्हांसू ... उणांसू हालांणो

अपूरण भूतकाल

म्हांसू ... .उणां सू हालीजतौ हौ (तौ)

पूरण भूतकाल

म्हांसू ..... उणांसू हालीजियौ गयौ हौ (तौ)

संभाव्य भूतकाल

म्हांसू ... .उणांसू सायत हालीजियौ गयौ हौ (तौ)

संदिग्ध भूतकाल

म्हांसू ... उणांसू हालीजियौ गयौ होवैला (होवैलो)
म्हेसू ... ववां सू हालीजियो गयो हुस्यै (होस्यै)
म्हांसू ... ...वांसू हालीजियो गयो होवैगो

सामांन्य हेतु-हेतु मद भूत

म्हांसूं .... उणां सूं हालीजतौ

भविसत काल (सामांन्य भविसत काल)

म्हांसूं .... उणां सूं हालियौ जावैला (जावैलो)
म्हेऊं (सूं) .... ऊंवांऊं (सूं) हाल्यौ जास्यै (जासै)
म्हांसूं .... वांसूं हालीजैगौ (हाल्यो जावैगौ)

संभाव्य भविसत

म्हांसूं .... उणां सूं हालियो जावै
म्हेऊं (सूं) .... उवांऊं (सूं) हाल्यौ जावै
म्हांसूं .... उणां सूं हालीजै

हेतु हेतु मद् भविसत

म्हांसूं .... उणां सूं हालीजैला तौ
म्हेऊं (सूं) .... उवांऊं (सूं) हालीजस्य तौ

अभ्यास

नीचे लिखी क्रियाओं री कालां रो बणावट उणां रे सांमा लिखियोड़ा काला में बणाओ ?

(१) खाणो (खावणो) करमवाच्य में सामांन्य भविसत में ?
(२) जाणो (जावणो) भाव - वाच्य में अपूरण भूतकाल में ?

(३) होणो (होवणी) करत्री - वाच्य में अंतरित हेतु - हेतु मद् भूत में ?

(४) हालणो क्रिया रा संदिग्ध भूतकाल में ?

—:०.—

तेरवां अध्याय

पूरब कालिक क्रिया

(१) ओ पढ नैं पिंडत हो गयो।

(२) वे पढ,र खेती करी।

(३) वा पढ,र घरै जाई (जास्यै)

(४) थूं (तूं) पढ के कांई करी (करैला, के रैलो, करसी)

(५) ओ पढ,न की करस्यै।

ऊपर लिखियोड़ा छोटा आखरां वाला वाक्यां रै मांय 'पढणो' क्रिया रा पूरब कालिक रूप है। इण वाक्यां सूं आ बात पाई जावै है कै (अथवा) मुख्य क्रिया 'होणो' 'करणो' 'जाणो' सिद्ध होवण सूं प्रथम पढणो क्रिया सिद्ध हुई है। इण सूं ओ

नियम वणै है कै जिण क्रिया रै सिद्ध होवणो किणी बीजी क्रिया रै पैली सिद्ध होणो पायो जावै है। उण नै राजस्थानी रै मांय संसक्रत रै मुजब 'पूरब कालिक क्रिया' कैवै है। नै हिंदी रा पिंडत पण पूरब कालिक क्रदंत अव्यय मांनै है। पण वात अेक इज है। इण क्रिया रै मूल धातु रै आगै 'नै' 'र' 'अर' 'अन' 'न' 'इनै' 'ने' 'अे' 'अैन' 'कै' प्रत्यय जोड़ण सूं वणै है। इण क्रिया रो प्रियोग घणकरो प्रधांन क्रिया रै होवण वाळै कांम रै खतम होवण सूं पैली होवै है। इण सूं आ क्रिया क्रिया-विसेसण जैड़ो ई कांम दैवै है। इण क्रिया रा रूप दूजी क्रियाआं रै ज्यां काळां में नईं वणै है। इण सूं इण नै अव्यय कै दियो जावै तौ भी कोई हरज नईं।

उत्तर कालिक क्रिया

(१) म्हैं 'पढण' आयो हूं।
(२) थूं (तूं) 'खेलवा' नै जावै है।
(३) वो 'खेलवा' गयो है।
(४) वा 'खेलवा' आई है।
(५) ओ 'खेलण' आई है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय छोटा वाळा सव्दां सूं ओ पायो जावै है कै 'पढण' 'खेलण नै' 'खेलवा नै' 'खेलवा' 'खेलण' रै सिद्धी रै वासतै 'आणो' क्रिया रो प्रियोग कियो गयो है।

जिण क्रिया री सिद्धी रै सारु बीजी क्रिया प्रयोग की जावै है उण नै उत्तर कालिक क्रिया कैवै है। उण रै आगै नीचे मुजब मूल धातु रै आगै प्रत्यय लगाया जावै है।

मूल धातु	प्रत्यय
खा	वासतै, सारु, वण, नै, नूं, ण, वा, नां, वा, बेई, वैई, तांई, आंटै, नै, आंटा।
लिख	लिखण, लिखणनै, लिखणनें, लिखणनां, लिखण नूं, लिखबा, लिखवा, लिखण आंटै, लिखबा आंटै, लिखवा आटै, लिखण वासतै, लिखण सारू, लिखवा वेई, लिखवा बेई, लिखबा तांई, लिखण आंटा।

प्रेरणारथक क्रिया

(१) गुरांसा छोकरा सूं कागद लिखवावै है।

(२) सेठ साब बामण सूं गीता पढवावता हा।

(३) ठाकुरसा रसोइदार सूं खाणो पकावैला।

ऊपरला वाक्यां रै मांय छोटा आखरां वाली क्रियाआं सू उणां रै करता ऊपर दूजो करता प्रेरणा करै है। इस कारण सूं अैड़ी क्रियाआ नै राजस्थानी रै मांय प्रेरणारथक क्रिया कैव है।

जिको करता दूजै रै ऊपर प्रेरणा करै उण नै प्रेरक करता नै जिण माथै प्रेरणा की जावें उण नै प्रेरित करता कैवै है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय 'गुरांसा' 'सेठ साव' नै 'ठाकुरसा' प्रेरक करता है। नै 'छोकरो' 'बांमण' नै 'रसोड़दार' प्रेरित करता है। घणकरो प्रेरित करता संसक्रत रै मुजब त्रितीया विभक्ति रै रूप में आवै है।

अकरमक	सकरमक	प्रेरणारथक
चलणो	चलाणो, चलाड़णो	चलवावणो, चलवाड़णो।
दबणो	दबाणो, दबावणो दबाड़णो	दबवावणो, दबवाड़णो।
सुणणो	सुणाणो, सुणावणो सुणाड़णो	सुणवावणो, सुणवाड़णो।
ऊठणो	उठावणो, उठाणो उठाड़णो	उठवावणो, उठवाड़णो।
बैठणो	बैठाणो, बैठावणो, बिठाणो, बठांणणो, बैठाड़णो	बैठावणो, बेठांणणो, बिठवावणो, बैठवाड़णो
वधणो	वधाणो, वधावणो, वधाड़णो	वधवावणो, वधवाड़णो
घटणो	घटाणो, घटाड़णो, घटवाणो	घटवावणो, घटवाड़णो

ऊभणो	उभाणो , उभारणो , उभाड़णो	उभवावणो , उभवाड़णो
लटकणो	लटकाणो , लटकावणो	लटकवावणो , लटकवाड़णो ,

घणकरी अकरमक सूं सकरमक नै सकरमक सूं प्रेरणारथक क्रिया वणै है। पण अकरमक धातुआं रै अंत में 'आव' 'आड़' प्रत्यय लगाण सूं सकरमक नै 'वाव' 'वाड़' प्रत्यय लगावण सूं प्रेरणारथक क्रिया वणै है।

पण 'आणो' 'जाणो' 'सकणो' 'होणो' क्रियाआं सूं सकरमक नै प्रेरणारथक दोनां प्रकार री क्रियाआं नईं वणै है।

मरणो	मारणो	मरावणो , मरवावणो, मरवाड़णो मराड़णो।
कटणो	काटणो	कटावणो, कटवावणो, कटवाड़णो कटाड़णो।
गमणो	गमाणो गमाड़णो	गमावणो, गमवावणो, गमवाड़णो
पलणो	पालणो	पलावणो, पलवावणो, पलवाड़णो
पड़णो	पाड़णो	पड़ावणो, पड़वावणो, पड़वावणो पड़ाणो।
दवणो	दावणो	दवावणो, दववावणो, दववाड़णो दवाड़णो।

पिसणो	पीसणो	पीसावणो, पिसवावणो, पिसवाड़णो, पीसाड़णो।
लुटणो	लूटणो	लूटावणो, लूटाणो, लूटाड़णो, लूटवावणो, लूटवाड़णो।
बंधणो	बांधणो	बंधावणो, बंधवावणो, बंधवाड़णो, बंधाड़णो।
पिटणो	पीटणो	पिटावणो, पिटवावणो, पिटवाड़णो, पिटाड़णो।

किताई प्रकार री अकरमक धातुआं रै पैलै आखर रै दीरघ करण सूं सकरमक नै 'आव' 'वाव' नै 'ड़ाव' प्रत्यय लगावण सूं प्रेरणारथक रूप वणै है।

अकरमक	सकरमक	प्रेरणारथक
जुड़णो	जोड़णो	जोड़ावणो, जुड़ावणो जुड़वावणो।
तूटणो, तोड़ाणो	तोड़णो	तोड़ावणो, तुड़वावणो तुड़वाड़णो।
फूटणो	फोड़णो	फोड़ावणो, फुड़वावणो फुड़वावणो।
छूटणो	छोडणो	छोडावणो, छुडावणो छुड़वावणो।
मुड़णो	मोड़णो	मुडावणो, मुड़वावणो

डूबणो	डुबाणो डुबाड़णो	डुबावणो , डुबवावणो
बोलणो	बुलाणो , बोलाणो बोलाड़णो , बुलाड़णो	बुलावणो , बुलवावणो बोलावड़णो , बुलवाड़णो
भींजणो	भिंजावणो , भिंजोणो भींजाड़णो , भींजाणो	भींजवावणो , भिजवावणो भिंजवाड़णो
ओढणो	ओढाणो	ओढावणो , ओढावड़णो ओढवावणो,
बोलणो	बोलाणो बुलाणो	बोलावणो बोलवावणो बुलावणो बुलवावणो
सूवणो	सुवाणो	सुवावणो , सुवावणो

कठेई कठेई दोय आखरां रै धातु रै प्रथम आखर नै दीरघ सूं लघु करण सूं सकरमक नै 'आव' 'वाव' नै 'ड़ाव' प्रत्यय लगावण सूं प्रेरणारथक क्रिया वणै है।

खाणो	खवाड़णो , खवावणो	खवड़ावणो
गाणो	गवाड़णो , गवांणो	गवड़ावणो
नाणो	नवावणो , नवाणो	नवड़ावणो
वांणो	ववावणो ,ववाड़णो	ववड़ावणो
धोणो	धोवावणो , धोवाड़णो धुवाड़णो , धुवावणो	धोवड़ावणो , धुवड़ावणो धुववावणो

...ीणो	सिखाड़णो, सिखाणो सिखावणो	सिखवावणो, सिखड़ावणो
...कैणो	कैणांणो, केवावणो केवाणो, कैवाड़णो	कैवावणो, कैवड़ावणो के ण ाणो

ऊपर लिखियोड़ा अेक आखर रा धातुआं ने दीरघ सूं लघु ...रने 'वाड़' 'डाव' नै 'वाव' प्रत्यय लगावण सूं सकरमक नै ...रणारथक क्रिया वणै है।

...नकलणो	निकालणो	निकलवावणो, निकलाणो निकलवाणो, निकलवणो
...खणो	देखाणो, देखालणो देखावणो	दिखवावणो, दिखवाड़णो दिखड़ावणो
...ड़णो	उखेड़णो, उखाड़णो	उखड़वाणो, उखड़ावणो
...लणो	उखेलणो	उखलावणो, उखलवाणो

तीन आखर रा धातुआं रै दूजा आखर रै बिलटी रो आखर ...पण दीरघ करणो पड़ै है।

...कणो	वेचणो	वेचावणो, वेचाड़णो विकाणो, विकाड़णो विकवावणो, विकाणो
...णो, रैणो	राखणो	रखावणो, रखवाड़णो रखवावणो, रखवाड़णो

चिरणो	चीरणो	चीरावणो, चिरवावणो चीराड़णो
बिखरणो	बिखेरणो	बिखरावणो, बिखरवावणो

कितीक सकरमक नै प्रेरणारथक क्रिया वणाण रो कोई खास नियम नईं होवै है।

लिखीजणो	लिखणो	लिखणो, लिखावणो लिखाड़णो, लिखवाड़णो लिखवावणो
पढीजणो (पढीजणो)	पडणो	(पडाणो, पढाणो) पढाड़णो, पढवावणो
खवोजणो (खाईजणो)	खाणो, खावणो	खवाड़णो, खवावणो खवड़ाणो
हसीजणो, हसणो	हसाणो	हसावणो, हसवावणो हसवाड़णो
हलीजणो	हालणो	हलावणो, हलवावणो हलवाड़णो, हलाडणो

प्रथम धातु रै आगै 'ईज' प्रत्यय लगावण सूं भाव वाच्य क्रियाआं वणै है। नै इण भाववाच्य अकरमक क्रियाआं रै आगै 'आव' 'वाव' नै 'ढाव' प्रत्यय लगावण सूं प्रेरणारथक क्रिया वणै है।

सकरमक	प्रेरणारथक
करणो	कराणो, करावणो, करवावणो करवाड़णो
लिखणो	लिखावणो, लिखवावणो लिखाड़णो
रंगणो	रंगावणो, रंगवावणो, रंगाड़णो
भरणो	भरावणो, भरवावणो, भराणो, भरवाड़णो
खोसणो	खोसावणो, खोसवावणो खोसाणो, खोसाड़णो
तोड़णो	तोड़ावणो, तुड़ावणो, तोड़ाणो, तुड़वावणो, तुड़वाड़णो
लूटणो	लुटावणो, लुटवावणो, लुटाणौ, लुटवाड़णो
पूंछणो	पूंछावणो, पुछवावणो, पूछाणो, पुंछवाड़णो
पूंछणो	पुछावणो, पुछवावणो पुछवाड़णो, पूछाणो

सकरमक धातु रै 'आव' 'वाव' नै 'ड़ाव' प्रत्यय लगावण सूं प्रेरणारथक क्रिया बणै है नै जो आदि स्वर दीरघ होवै तो लघुकर लियो जावै है।

लेणो लेवणो	लिराणो, लेराणो लेवाणो	लिरावणो, लिरवावणो लिरवाड़णो, लेवाड़णो
देणो, देवणो	दिराणो, देराणो दिरावणो	दिरवावणो, देवाड़णो देवराड़णो, दिरवाड़णो
सीणो, सीवणो	सिवावणो सिवाणो	सिववावणो, सिवराड़णो सिववाड़णो
खाणो	खवावणो, खवाणो	खववावणो, खवाड़णो
खावणा	खवावणो, खवाणो	खववावणो, खवाड़णो
पीणो, पीवणो	पावणो, पिवावणो पिवाणो	पिववावणो, पिववाड़णो पिवराड़णो

—:o:—

चौदवां अध्याय

संयुक्त क्रिया

(१) मोवन राम नै देख,र आयो है।

(२) चंदू इतरो उतावलो है कै बीच में बोल उठियो।

(३) गगदान सदाई अठै आया करै है।

(४) अंकास रा तारा कुण गिण सकै है।

(५) हूं म्हारो पाठ पढ चूको हूं।

ऊपरला वाक्यां रै मांय दोय दोय सब्दां सूं बणियोड़ी क्रियाआं आई है। जिणां रै मांय अेक तो परधांन नै दूजी सायक क्रिया है। परधांन क्रिया 'क्रदंत' र रूप में नै सायक क्रिया 'काल' रै रूप में है। कीं खास खास क्रदंता रै आगै विसेस अरथ में कीं सायक क्रियाआं जोड़ण सूं जो क्रिया बणै है उण नै 'संयुक्त क्रिया कैवै है।

संयुक्त क्रिया रा रूप राजस्थानी में भी नव तरै रा होवै है।

(१) क्रिया वाचक संग्या रै मेल सूं बणियोड़ी ज्यां :—
करणो चाइजै। करणो पड़ै। जाणो पड़ै है। जाणो चाइजै।

(२) वरतमांन कालिक क्रदंत रै मेल सूं वणियोड़ी :— करतो रैवै है। पढतौ रैवै है।

(३) भूतकाल रै मेल सूं वणियोड़ी :— हालियो गयो वलो गियो। हालियो जावैला।

(४) पूरब कालिक क्रिया रै मेल सूं :— पढनै आवैला जायर,र लिखैला। तोड़ नांखेला।

(५) अपूरण क्रिया द्योतक क्रदंत :— ज्यां :— हालतां दुख होवैला। देखतां डरै है।

(६) पूरण क्रिया द्योतक क्रदंत :—
लियां आयो। मार नांखतो।

(७) संग्या कै विसेसण रै मेल सूं वणियोड़ी :—
देख पड़ियौ।

(८) पुनरुक्त सयुक्त क्रियाआं सूं :— जांणतो - बूझतो खातो - पीतो।

(९) उत्तर कालिक क्रिया रै मेल सूं :— पढण जाऊंला पढण आयो। पढण नै आवै है।

संयुक्त क्रियाआं में नीचे मुजब क्रियाआं सायक क्रिया रै रूप में आवै है ज्यां :— अपणावणो, अपणाणो, उठाणो, करणो चाहणो, चूकणो, जाणो, देणो, नांखणो, रखणो, राखणो,

पड़णो , पावणो , होणो , रैणो , ढूकणो , लगणो , लैणो , संकणो , रालणो , गेरणो , पटकणो , डालणो ।

इण ऊपरली क्रियाआं रै मांय घणकरी क्रियाआं 'चूकणो' नै 'संकणो' नै छोड़ सुतंतर रूप ही प्रियोग मैं आवै है नै बीजी क्रियाआं रै सायक रूप में भी आवै है ज्यां :— वो जावण ढूको ।

इण वाक्य रै मांय 'ढूकणो' 'जाणो' क्रिया रै सायक रूप में आई है । सी लाग जावै है ।

इण वाक्य रै मांय 'जावणो' सायक क्रिया 'लागणो' खास क्रिया रै साथै आई है ।

कदेई कदेई संयुक्त क्रियाआं में सायक क्रिया रै क्रदत रै आगै दूजी सायक क्रिया आवै है । इण तरै सूं करनै तीन कै च्यार च्यार सब्दां री संयुक्त क्रिया वण जावै है । ज्यां :— इण वात री जल्दी सफाई कर लेणी चाइजै । मगदांन नै मथांणिये जाय नै लिखण रो कांम करणो पड़ै है । हूं आ पोथी उठाय नै ले जा सकूं हूँ ।

क्रिया वाचक संग्या रा मेल सूं वणियोड़ी संयुक्त क्रिया :—

क्रिया वाचक संग्या रै मेल सूं वणियोड़ी संयुक्त क्रियाआं में क्रिया वाचक संग्या दो तरै सूं आवै है (१) साधारण रूप में । (२) विक्रत रूप में ।

साधारण रूप रै साथै 'पड़णो' 'होणो' 'होवणो' 'कै' 'चाइजै' 'चइजै' क्रिया नै जोड़ण सूं आवश्यकता बोधक सयुक्त क्रिया वणै है ज्यां :-- करणो पड़ै है। करणो चाइजै (चइजै)। करणो होसी। करणो पड़सी। करणो पड़ैला। करणो पड़स्यै। करणो पड़ैगो।

जद कद इण संयुक्त क्रिया में क्रिया वाचक संग्या रो प्रियोग विसेसण रै समांन होवै है। तो घणकरी आ विसेस्य (संग्या) रै लिंग वचन रै मुजब बदली जावै है। ज्यां :—

गरीबां री मदत करणी पड़ै है। विद्यारथियां री सायता करणी चाइजै। मनै दवा लेणी पड़सी। जका होणी है वा होसी।

क्रिया वाचक संग्या र विकृत रूप सूं राजस्थांनी में तीन प्रकार री संयुक्त क्रिया वणै है। (१) आरंभ बोधक (२) अनु-मती बोधक (३) अवकास बोधक।

(१) आरंभ बोधक क्रिया :-- 'ढूकणो' 'लगणो' क्रिया रै मेल सूं वणै है ज्यां :-- वो कांम करण ढूको। रंडी गावण ढूकी। वो केवण लागो।

(२) देणो क्रिया रै मेल सूं अनुमती बोधक संयुक्त क्रिया वणै है। मनै जावण दो। बोलण नईं दियो।

(३) अवकास बोधक :-- अरथ रै मांय अनुमती बोधक क्रिया रै विपरीत होवै है। ज्यां :— थूं अठा सूं जाण नीं पावैला

बात होवण नीं पाई कै वे आय गया। बात हुई कोयनी जितरै ओ आ गया।

(२) वरतमांन कालिक कृदंत सूं बणियोड़ी संयुक्त क्रिया:-

वरतमांन काल रा कृदंत रै आगै 'आणो' 'जाणो' नै 'रैणो' जोड़ण सूं नितता बोधक संयुक्त क्रिया वणै है ज्यां:— ओ कांम परमपरा सूं होतो आयो है। रूंख बढतो जावै है। मेह वरसतो ई गयौ।

(अ) 'रैणो' क्रिया रै योग सूं सामांन्य भविसत काल सूं अंगरेजी रा पूरण भविसत काल रो बोध हावै है। ज्यां :— म्हे उण वगत लिखता रैवांला। थां रै आवण री वैला वे जाता रैवैला।

भूत काल रै मेल सूं वणियोड़ी संयुक्त क्रिया :—

अकरमक क्रिया रै आगै जाणो क्रिया जोड़ण सूं ततपरता बोधक संयुक्त क्रिया वणै है। ज्यां :— छोरो आय जातौ हो। छोरो आया करतौ हे। माथौ फाट 'जातौ' (जावतो) हो। छोरी पड़ जावती होवसी। माथो फाट जात। छोरी पड़ जात।

भूत कालिक कृदत रै आगै 'करणो' जोड़ण सूं अभ्यास बोधक संयुक्त क्रिया वणै है। ज्यां :-- वो पढिया करै है। हूॅ लिखतो रैऊंला। थे सुवे घूमण गया करो (हो)

भूतकाल रै साथै 'चावणो' क्रिया जोड़ण सूं इच्छा बोधक संयुक्त क्रिया वणै है। ज्यां :— हूं किताब पढणी चाऊं हूं।

थे उणां सूं मिलणा चावो हो कांई ? वे म्हां सूं मिलण चावै है ।

कदेई क्रिया वाचक रै साथै भी 'चावणो' जोड़ण सूं इच्छा बोधक सयुक्त क्रिया वणै है । हूं किताव पढणी चाऊं हूं । कागद लिखणो चाऊं हूं । ऊ घरै जावणो चावै है ।

नोटः—अभ्यास बोधक नै ईच्छा बोधक क्रियाओं रै मांय जाणो क्रिया रो भूत काल में 'गयौ' रै वदलै 'जायो' होवै है । ज्यां :— थूं उठै जाया करतौ हौ । वे उठै जावणो चावै है ।

(४) पूरव कालिक क्रिया रै मेल सूं वणियोड़ी संयुक्त क्रिया :—

पूरब कालिक क्रिया रै योग सूं राजस्थानी में तीन तरै री संयुक्त क्रियाओं वणै है । ज्यां :— अवधारण बोधक (२) सगती (शक्ति) वोधक (३) पूरणता बोधक ।

अवधारण वोधक :— क्रिया सूं मुख क्रिया रै अरथ रै मांय अधिक दृढता के पकावट पायी जावै है । इण अरथ रै मांय नीचे लीखी सायक क्रियाओं प्रियोग में आवै है । 'ऊठणो' 'वैठणो' 'रालणो' 'देणो' नै 'नांखणो' अै क्रियाओं घणकरी अचांणकता रै अरथ में आवै है ज्यां :— बोल ऊठियौ । तोड़नाखियौ । काट नांखियौ । दे रालियौ । दे उठ्यौ । दे नांख्यौ । काट दीधो । 'लेणो' 'आणो' इण क्रियाओं सूं वोलण वाला रै कांम री सूचना प्रगट होवै है । कर लैणो । दे आणो (भलावणा) ।

'पड़णो' नै 'जाणो' :— अे क्रियाआं घणकरी सीघ्रता प्रगट करै है। कूद पड़णो, खा जाणो, पांच जाणो।

'दैणो' इण क्रिया सूं किणी बीजा री कांनी क्रिया रो वौपार प्रगट होवै है। ज्यां :— जोड़ दैणो। कै दैणो। पटक दैणो।

'रैणो' 'खैणो' आ किया घणकरी भूत कालिक क्रदंत सूं वणियोड़ी कालां में आवै है। इण रा आसन्न भूत नै पूरण भूत काल रै मांय तरतीबवार अपूरण वरतमांन नै अपूरण भूतकाल रो बोध होवै है। ज्यां :— वो भणीज रयौ है। वो जाय रैयो है।

सगती (शक्ति) बोधक :— क्रिया पूरव कालिक क्रिया में 'सकणो' कै क्रियाआं रै मध्यम में 'ज' रो प्रियोग लावण सूं वणाई जावै है। खा सकणो कै खाईजणो, दौड़ सकणो कै दौड़ीजणो।

पूरणता बोधक क्रिया :— 'चूकणो' क्रिया रै योग सूं वणै है। खा (खाय) चूको। पढ चूको। जा (जाय) चूको। लिख चूको।

(५) अपूरण क्रिया द्योतक क्रदंत रै मेल सूं वणियोड़ी संयुक्त क्रिया :—

अपूरण क्रिया द्योतक क्रदंत रै आगै 'वणणो' क्रिया जोड़ण सूं योगिता बोधक संयुक्त क्रिया वणै है ज्यां :— जातां (जावतां) वणियो (जातौ रयौ)

(६) पूरण क्रिया द्योतक क्रदंत सूं बणियोड़ी संयुक्त क्रिया।

पूरण क्रिया द्योतक क्रदंत सूं दो तरै री संयुक्त क्रियाआं वणै है। (१) निरतरता बोधक (२) पकावट बोधक (निश्चय बोधक)

सकरसक क्रियाआं रै पूरण क्रिया द्योतक क्रदंत रै आगे 'जाणो' क्रिया जोड़ण सूं निरंतरता बोधक क्रिया वणै है। ज्यां:— मनैं खावतां जावै है। लड़का पढिया जावै है। कांम करियां जावो। आ क्रिया घणकरी वरमांन कालिक क्रदंत सूं वणियोड़ी काला में नै विधी काला में आवै है।

पूरण क्रिया द्योतक क्रदंत रै आगै 'लैणो' 'दैणो' 'नांखणो' 'बैठणो' नै 'रालणो' जोड़ण सूं पकावट बोधक संयुक्त क्रिया वणै है। अै क्रियाआं घणकरी सकरमक क्रियाआं रै साथै सामान्य वरतमान काल में आवै है। ज्यां :— म्हैं पोथी लेऊं हूं। मगता नै रोटी देऊं हूं (छूं) चीड़ियां नै चुग नांख देऊ हूं (छूं)।

(७) संग्या कै विसेसण रै मेल सूं वणियोड़ी संयुक्त क्रिया।

संग्या कै विसेसण रै साथ जोड़ण सूं जो संयुक्त क्रिया वणै है उण नै राजस्थांनी में भी 'नांम बोधक' क्रिया कैवै है ज्यां :— राख हुणो (होणो) भसम हुणो (होणो) मंजुर होणो।

नांम बोधक संयुक्त क्रिया रैं मांय 'करणो' 'होणो' नै 'देणो' क्रियाआं आवै है 'करणो' नै 'होणो' क्रियाआं रै साथै घणकरी

क्रियारथक वाचक संग्याआं नै देणै रै साथै भाववाचक संग्याआं आवै है।

होणो :— कंठ होणो, याद होणो, भसम होणो, नास होणो।

करणो:— अंगीकार करणो। नास करणो। आरंभ करणो।

देणो :— देखाई देणो, सुणाई देणो।

(८) पुनरुक्त संयुक्त क्रियाआं।

जद दोय समांन अरथ वाळी कै समांन ध्वनि वाळी क्रियाआं रो मेळ होवै है तद उणां नैं पुनरुक्त संयुक्त क्रिया कैवै है। ज्यां: 'लिखणो' 'पढणो' समझणो 'बूझणो' जिकि क्रिया ध्वनि मिलावण सारु आवै है वा निररथक रैवै है ज्यां :— 'पूछणो - ताछणो' 'होणो - हवाणो' केवळ नीचे लिखियोड़ी सकरमक संयुक्त क्रियाआं करम वाच्य में आवै है।

आवसकता बोधक क्रियाआं जिण में 'होणो' नै 'चाइजै' रो मेळ होवै है ज्यां कागद लिखियौ जावतौ (लिखीजतौ हौ) हौ। कांम देखियो जावणो चाइजै। आरंभ बोधक :— ज्यां :— ऊ पिंडत समझीजण ढूको। थे ई मोटा में गिणीजण ढूका।

अवधारणा बोधक :— जिकी 'लैणो' 'देणो' नै 'नांखणो' राळणो रै मेळ सूं वणै है। ज्यां :— कागद दियो जावै है। (कागद दिरीजै है) कांम करलियो गयो (नांखियो)

सगती (शक्ति) बोधक :— ज्यां :— पांणी लाईज (लाईज्यो) गयो है।

पूरणता बोधक ज्यां :— पांणी लाईज (लाईज्यो) गयो है।

नांम बोधक क्रियाआं जिकै सैंसकरत क्रिया वाचक संग्या रै मेल सूं वणै है। ज्यां :— आ वात मंजूर हुगी (होगी, हुई)। कथा सुणी जावंला (जास्यै, जासी, जास्यै)

पुनरुक्त क्रियाआं :— कांम देखियो भालियो नीं गयो। नीचे लिखियोड़ी सकरमक संयुक्त क्रियाआं (करतरी वाचक) भूत कालिक क्रदंत सूं वणियोड़ा कालां में हमेसां करतरी प्रियोग में आवै है।

आरंभ बोधक :— छोरो पढण ढूको। छोरियां कांम करण ढूकी।

नितता बोधक :— म्हे वातां करता रिया (रया)। ऊ म्हनै बुलावतो रियौ (रयौ)।

अभ्यास बोधक :— मालवै जाय नै वै करियो ही खायो।

सगती (शक्ति) बोधक :— छोरी कांम नीं कर सकी कै छोरी सूं ऊ कांम करीजियो कोयनी। म्हे उण री वात दोरी समझ सकिया। (म्हे उवै री वात दोरी समझया) म्हां सूं उवै री वात दोरी समझीजी।

पूरणता बोधक :— चाकर कोठौ झाड़ चूको। लुगाई रसो
कर चूकी है। वे नांम बोधक क्रियाआं जिकै दैणो कै 'पड़णो'
मेल सूं वण है। ज्यां :— चोर थोड़ो आगै दीसियो। उण
सब्द सावल को सुणिजिया नीं।

(६) उत्तर कालिक क्रिया रै मेल सूं वणियोड़ी संयुक्
क्रिया :—

उत्तर कालिक क्रिया रै आगै 'आणो' नै 'जाणो' क्रिया
जोड़ण सूं संयुक्त क्रिया वणै है। म्हैं खेलण आयो हूँ (हूं खेल
आया हां)। कांई थूं पढण जावै है ? ऊ पढण आयो है।

अभ्यास

१—नीचे लिखियोड़ा वाक्यां रै मांय संयुक्त क्रिया रा भे
बताओ ?

(१) अेक दिन छोरी रोवती ही (ती)।
(२) हवा रै विनां कोई नीं जीव सकै है। (हवा रै वि
जीवी जै कोयनी)।
(३) म्हनैं वेला को होवै नीं इण वासते हूं वैरै
जासकूंनी।
(४) परणीजण रै थोड़ाक दिनां रै पछै वो मर गयो।
(५) थोड़ोक आगो अेक आदमी दीखियो।
(६) म्हैं सदाई खेत जाया करूं हूं।

(७) म्हे काम करता रिया ।

(८) म्हारै कैणै माथै ही थे हालता जावौ हौ ।

(९) कांम करता करता म्हे थक गया ।

(१०) कांई थे लिखण जावौ हौ ?

२—नीचे लिखियोड़ी क्रियाआं रा उपयोग एक एक संयुक्त क्रिया रै रूप में करो ।

दौड़णो , खींचणो , बुलावणो , लावणो , मेलणो , बैठणो ।

—:०:—

चवदवां अध्याय

क्रिया विसेसण

छोरो हमार आयो है ।

गाडी वेगी आई हो (ती) ।

म्हारो भाई आज आवैला। (आस्यै)

थूं कदै गियो (गयौ)

ऊपरला वाक्यां रै मांय छोटा आखरां आला सब्द क्रिया विसेसण है क्यां के अै क्रिया री विसेसता नै क्रिया रै होवण रो समै ई बतावै है। अरथारथ 'कद' रो जबाब देवै है। इण कारण सूं अैड़ा अव्यय सब्दां नै काल वाचक क्रिया विसेसण कैवै है। नीचे लिखियोड़ा राजस्थांनी रा काल वाचक क्रिया विसेसण है :—

अबी, अब, हमैं, हमार, हमारु, अमार, अमै, अबार, हणां, कद, कब, कबी, कभी, करै; करांई, कदेई, कद; कदि, कणां, कणांई, कदकोई, कारांई, कदथांई, कबी को, कदी को, कदे को, कद को, कदै, कणां, कद, करै। हव – [अब], जब, जद, जरां, जरै, जदै, जदथां, जरांई, जणां, तद, तब, तदी, तदि, तदथां, तणां।

आज, कालै, परसूं, तिरसूं, पैलेदिन, सवारे, तेपैले-दिन, तड़के, परबाते, सदा सदाई, सदीव, हमेश, रोजीना, करांई – करांई, किण वगत, जिण वगत, इण – वगत, उण – वगत, सेवट, बार बार, पछै, फेर, वार वार, जद – कद, जदे – कदेई, नित, सरवदा, वेगो, मोड़ो, तुरत, घणकरो, कदेईसैक, जैपैलै, दिन, घड़ी – घड़ी, अबार, हमार, हमारु,

अबारु , तापैलेदिन , जापैलेदिन । जेज , कणांकलो , (कभी का) कदी रो , कदे रो , कदे को , कदी को ।

नोटः—नीचे लिखियोड़ा सब्द सग्या वाची हुतां थकांई संग्या है। दिन - रात , सुबै , साकलै , सांझ , दो पार , आथण , रोटी वगत , कलेवारी वगत , पखवाड़ौ , अठवाड़ौ ।

ऊँट हौलै - हौलै हालै है ।
थूं उतावलौ जावै है ।
साचमाच दिन ऊग गियो ।
अचांणक थे आय गिया ।

" ऊपरला मई आकरों आला सब्द क्रिया रै होवण रो 'ढंग कै रीत' बतावै है । इण सूं अैड़ा क्रिया विसेसण सब्दां ने 'रीतिवाचक' क्रिया विसेसण कैवे है । नीचे लीखियोड़ा सब्द वाचक क्रिया विसेसण है :—

धीमैं , होलै , धीरै , धीमैं - धीमैं उतालौ , उतावलौ , खाथौ , खातौ , तकड़ौ , ताकड़ौ , अचांणक , पालौ , पैदल . साचमाच , सचमुच , बेसक , कदास , कदा , जठातक , सायत् , मतन , गट , गढ , कवुड़ी , छानै , क्यूं , क्यूं कै , क्यां , किणसारू , सारू , आंटै , माटे वासते , छांनै , अेकदम , हबदैणो , झठाक , खटाक , वेगौ , जलदी , सटकै , सटकैई , वेगोई , ध्यांन सूं , सावचेती सूं , खबरदारी सूं , घणकरा , जादातर , रखे (ऐसा न हो) खबरदारी ऊं ।

रीतिवाचक रा नीचे मुजब पांच भेद होवै है।

१. निस्चय वाचक :—

साचमाच, सचमुच, वेसक, जरांइज, ई ठैई, ईं ठैइज, वठैइज, बीठैइज, उठैइज, ओथईज, अंथईज, उथियैही, वठैई, कठैही, उवांइज, वठैही, हनोज, इणीतरै, उणीतरै, हमारईज, जरूर, तठैईज, कठैई-कठैई, जठैई-जठैई।

२. अनिस्चय वाचक :—

कदेई, करांई, कठेई, ओथई, अैथई, जठै, तठै, अठै, उठै, जरां, तरां, कठातांई, हालतांई, कठैई-कठैई, जठातांई, सायत, सायत, कदे न कदे, कदी न कदी, कठ न कठै।

३. निसेध वाचक :—

जिण अव्यय सब्दां सूं क्रिया रै होवण में नाकार-नाकरो कै निसेध पायो जावै उण अव्यय सब्दां नै निसेध वाचक क्रिया विशेसण अव्यय कैवै है। नीचे लिखियोड़ा निसेध वाचक क्रिया विसेसण अव्यय सबद है।

न, म, मत, मां, मती, नीं नईं, नांई, नांयं, नायं, नह, नहीं, नहिं, नांज, मतनां, नाहिंन, कोनी, कोयनी, कोनै, को।

४. कारण वाचक क्रिया विसेसण :—

इण कारण, इणवासते, क्यूं - क्यूं कर, कांई वासते, किण वासते, लिये, वासते, माटै, म्रांटा, कांकर, क्यां, के कारण।

अनुकरण वाचक क्रिया विसेसण:—

वे अनुकरण सब्द जिके क्रिया विसेसण रै ज्यां वाक्य रचना में प्रियोग कियो जावे है :—

नीचे लीखियोड़ा अनुकरण वाचक क्रिया विसेसण है।

१. गटल् गटल् पाणी एकदम नईं पीणो चाईजै।

२. बीजली पलापल् चमकै है।

३. सत्यदेव हल़ाहल़ भूठो है।

घड़ाधड़, झपाझप, झटाझट, खटाखट, गटागट, गटगट, पड़ापड़, तड़ातड़, कड़ाकड़, भलाभल, भल़भल़, भड़ाभड़, भड़भड़, वड़वड़, सड़ासड़, रिड़ारिड़, रिड़ोरिड़, वल़ोवल़, खल़खल़, वड़ावड़, लड़ालड़, सड़ासड़, ठमाठम, गमांगमी, धूंआंधोर, घमाघम, धमाधम, खराखरी, ओलोओल़, ढालोढाल़, ठौड़ोठौड़, ठावोठा, लपालप, चपाचप, लढालढ, खसाखस, वंगोवंग, ढमढम, गवागव, ढबोढब।

नोटः—ऊपर लिखियोड़ा घणा सब्द संख्या रे विसेसण रै समान भी प्रियोग होवै है।

स्थान वाचक क्रिया विसेसणः—

जिकै अव्यय सब्दां सूं क्रिया रै होवण रै स्थांन रो बोध हुवै उण ने स्थान वाचक क्रिया विसेसण कैवै है। ज्यां :—

गुरांसा अठै आया है।
थूं कठै जावै है।
ओथ केथ जावै है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय छोटा आखरां वाला सब्द स्थान वाचक क्रिया विसेसण है क्यां के औ सब्द क्रिया रै होवण रै स्थान प्रगट करै है। स्थान वाचक क्रिया विसेसणां सूं दिसा रो बोध ही होवै है। नीचे लिखियोड़ा सब्द स्थान वाचक क्रिया विसेसण है।

कठै, केथ, किथियै, कठी, कठि, कींठै, कोड़ै, जेठै, कींडै, कियां, कित कूं, कैंडै, कीहां, किहां, किण, वठै, उठै, ओथ, उथिये, अेथ, इथिये, ईया, उवा, अठीनै, वठीनै, जठीनै, कठीनै, तठे नै, जठी, कठी, दूर, निकट, इथै, इणां, ईडै, इंठै, अडीनै, उडीनै, ह्यां, इह्यां, ईह, इतकूं, उतकूं, जठै, तठै, नैड़ो, गोडे, कनै, खनै, पार, नजीक, आगो, आगे, अगाड़ी। सैंगजागा, पाहै, पाहडे,

पासवाड़ै , वासड़े , पासै , पास , पां , केड़ै (पीछे) मूं (मे , से) मांऊं , तीरै , हेटे , वच , विचै , लारै , ऊपर , नीचै , विचैं , सांमी , सांमनै , फाचै , ऊगमणूं , आथूंणू , उनै , वुनैं किनै , कुनै इनै ।

परिमांण वाचक क्रिया विसेसण

घणो दौड़णो ठीक नईं होवै है ।

मांदो घणो कूकै है ।

आ वात बिलकुल ठीक होवैला ।

छोरा खूब खेलता हा ।

ऊपरला वाक्यां रै मांय छोटा आखरां वाला सब्द क्रिया रै होवण रो परमांण परगट करै है . इण कारण सूं अैड़ा सब्दां नै परिमांणवाचक क्रिया विसेसण कैवै है। नीचे लिखियोड़ा सब्द परिमांण वाचक क्रिया विसेसण है।

अत - अति , अतंत , थोड़ो , बौत , बस , घणो , थोड़ोक , चिनको , चिनकियोक , इतरो , इतरोक , कितरो , कितरोक , जितरो , उतरो , अतरो , अतरोक , उतरोक , केवल , बिलकुल , अकवार , दोयवार , तीनबार , अधक , अधिक , कांईक , थोड़ोसो , थोड़ोसोक , कितोक , कितोसौ , कितौ , उतौ , उतौसौ , इतौसोक , इतौसौक , उतौक ।

केई परिमांणवाचक क्रिया विसेसण सब्द नै कदेई कदेई विसैसणां रै ज्यां प्रियोग में आवै है। ज्यां :—

आ बौत छोटी किताब है। इण जागा 'बौत' सब्द 'छोटी' विसेसण री विसेसता बतावै है। थूं बोत धीमें हालै है। इण जागा 'बोत' सब्द 'धीमें' क्रिया विसेसण री विसेसता बतावै है। इणी तरैं सूं इतरो फूटरो घड़ो कठाऊं लायो। इतरो होलै बोलै कै सूणीजै भी कोयनी। इण वाक्य रै मांय 'इतरो' सब्द अेक बार विसेसण री विसेसता बतावै है। नै दूजी जागा क्रिया विसेसण री विसेसता बतावै है। इणीज तरै रा दूजा विसेसण समझणा चईजै।

प्रस्न वाचक क्रिया विसेसण

जिण क्रिया विसेसण रो उपयोग सवाल बूझण रै वासते होवै है। उणां ने प्रस्नवाचक क्रिया विसेसण कैवै है। ज्यां :— थूं कद आयो ? मोवन कठै गयो है ? अटै थूं क्यूं उबो है ? नींबू कैड़ो होवै है ?

प्रस्नवाचक क्रिया विसेसण अव्यय सब्द हमेसां काल वाचक रीतिवाचक, इसथांनवाचक नै परिमांण वाचक क्रिया विसेसण होवै है।

स्वीकार बोधक क्रिया विसेसण

जिण क्रिया विसेसण सब्दां सूं स्वीकार के 'हा' रो बोध होवै है। उणां नै स्वीकार बोधक के 'स्वीकार वाचक' क्रिया विसेसण कैवै है। नीचै लिखियोड़ा सब्द स्वीकार बोधक क्रिया विसेसण है।

हां, होवै, हवै, हुवै, जी, हांसा, जरूर, जी हां,

प्रियोग रै मुजब क्रिया विसेसण तीन तरै रो होवै है। ज्यां :-

(१) साधारण (२) संबधक (३) अनुबद्ध।

जिण क्रिया विसेसण रो प्रियोग वाक्य रै मांय सुततरता सूं होवै है उण नै साधारण क्रिया विसेसण कैवै है। ज्यां :--

'हमार' हूं आऊं हूं। हणां हूं आवां हां।
थूं धीमे धीमे हालजे।

जिण क्रिया विसेसण सूं दूजा क्रिया विसेसण सूं संबध रैवै है उण नै राजस्थांनी में सबंधक क्रिया विसेसण कैवै है। ज्यां :-

'जठै' पैली 'सीम' ही 'उठै' हमें गांव बसियोड़ा है।
'जैड़ो' हूं लिखूं 'वैड़ोई' थूं भी लिख।
'जीतरो' म्हैं पढियो 'उतरो' कोई नहीं पढियो।

जिण क्रिया विसेसण सब्दां सूं वाक्यां रै मांय निस्चय रो बोध होवै है उणां नै अनुबद्ध क्रिया विसेसण कैवै है। ज्यां :--

म्हारै घरै घी तो है।　　　　छोरो गयौ परौ।

ऊ (ओ) काले ई (भी) आयो हौ (तौ)।

उण दिन भर काम कियौ।　　　मोवन आयौ 'उरो'।

सब्द बणावट रै मुजब क्रिया विसेसण रा तीन जुदा भेद भलै होवै है।

(१) मूल। (२) यौगिक। (३) स्थानीय।

१. जिकै क्रिया विसेसण किणी दूजा सब्द सूं नईं बणै उणां ने मूल क्रिया विसेसण कैवै है। ज्यां —

झट, फेर, सट, वैगौ, मोड़ौ, भलै, ठीक, नैड़ौ, आगौ, पाछौ।

२. जिके क्रिया विसेसण सब्द दूजा सब्दां सूं बणाया जावै है उणां नै 'यौगिक क्रिया विसेसण' कैवै है। अैड़ा क्रिया विसेसण संग्या सरवनांम, विसेसण, क्रिया, क्रिया विसेसण, आदि रै मेल सूं बणै है। ज्यां।

(१) सग्या सूं :— प्रेम सूं लाड सूं (प्रेम पूर्वक)।

(२) सरवनांम सूं :— भरज़ोर, पूरे बल।

सर्वनाम	कालवाची	स्थानवाची	रीतिवाची	परिमांण वाची
औ, वो, वो, बी, वी, सो,	अब, तब, तदै	अठै, उठै, वठै, वठै, ओथ, तठै	ऐड़ो, इयां वैड़ो, तैड़ो त्यां	इतरौ, इतौ, उतरौ, उतौ, तितरौ
जको, जिकी, जणी, जीं, कुण	जब, जदै, कदे, कबी	जठै, कठै, केथ	जैड़ो, ज्यां केड़ो, क्यां	जितरौ कितरौ

३. विसेसण सूं :— धीमे, चुपके, ठीक, पैली ।

४. क्रिया सूं :— जावतां, आवतां, तांई, आंटा ।

५. क्रिया विसेसण सूं :— ज्यां अठा सूं, वठा सूं, जठा तांई, उठा तांई, कठा तांई, उनरी तांई, ओमसूं ।

बीजा सब्द भेद जके बिना किणी प्रकार रा हेर फेर रै क्रिया विसेसण रै समांन उपयोग में आवै है। वे स्थानीय क्रिया विसेसण कैवीजै है। ज्यां :—

(सग्या सूं) १. थूं म्हारी मदत धूड़ करी काई ।

२. सरवनांम सूं :— म्हूं (हूं) औ आयौ। छोरौ वो जावै। (ओ) थूं मनै कांई बुलावै। आ पोथी कांई कठाण है।

३. विसेसण सूं :— छोरौ फूटरौ णौ है। सिनख ऊमण-दूमण है।

४. वरतमांन कालिक क्रदंत :— छोरौ पढतौ हुवौ आवै है। ढोली गावतोड़ौ आवै है।

५. भूत कालिक क्रदंत सूं :— चोर घबरायोड़ौ दौड़ गयौ।

६. पूरव कालिक क्रदंत सूं :— चोर पकड़ियो जातौ हो। तूं दौड़ ने हाल। वो पड़ने मरियौ।

जके यौगिक क्रिया विसेसण दोय अथवा दोय सूं घणा सब्दां रै मेल सूं वणै उणां नै 'मिलियोड़ा' (संयुक्त क्रिया विसेसण) अथवा समासां वाला क्रिया विसेसण कैवै है। अैड़ा क्रिया विसेसण नीचे लिखियोड़ा सब्द भेदां सूं वण है।

१. संग्याओं री 'पुनरुक्ति' सूं ज्यां :—

घरो घर, घर घर, देस देस, घड़ी घड़ी हाथो हाथ।

२. दोय भिन्न संग्याआं रै मेल सूं ज्यां :—

दिन रात, सांझ सवेरे, घाट वाट।

(६) गुल थोड़ोक कांई लायो ।

(७) वो भरजोर है ।

(८) हां सा ओ आयौ ।

(९) ओ पढती पढती आंवै है ।

(१०) वो अजे तांई कोय आयौनीं ।

(११) थूं भलं कदेई मोड़ौ मत करजै ।

—:०:—

पनरमो अध्याय

संबंध बोधक रा भेद

(१) पांणी बिना जीवणो दोरो है ।

(२) रूंख रै माथै पंखेरू बैठा है ।

(३) थारै बिगर म्हारो कांम चलणो कठण है ।

(४) मिनख रै ज्यां हालणो चाइजे।

(५) थारै सिवा म्हारैं कुण नैड़ो है।

(६) गुरांसा लुगाई टाबर समेत आया है।

ऊपर लिखियोड़ा छोटा आखरां वाला सब्द संबंध बोधक है। प्रथम नै तीजै वाक्य रै मांय 'विना' नै 'विगर' संबंध बोधक है। जिकां रौ सबंध प्रथम वाक्य रै मांय 'पांणी' नै 'जीवणो' क्रिया सूं है। नै बीजा वाक्य रै मांय सरवनांम थारै ने 'चलणो' क्रिया सूं है। इणी तरै सूं दूजा वाक्य रै मांय 'माथै' संबंध - बोधक सब्द सूं रू ख संग्या नै 'बैठणो' क्रिया सू है। चौथा वाक्य रै मांय ज्यां संबध बोधक रो संबंध मिनख संग्या नै 'हालणो' क्रिया सूं है। पांचमै वाक्य रै मांय सिवा सबंध - बोधक रौ संबंध थारै सरवनांम नै 'है' क्रिया सूं है। इणीज तरै छठैं वाक्य रै मांय 'समेत' संबंध बोधक रो संबंध गुरांसा संग्या नै 'आया है' क्रिया सूं है।

सबंध बोधक संग्या नै सरवनांम रौ संबंध बीजा सब्दां रौ साथ जोड़ै है। ज्यां :— गांधी जैड़ौ मातमा (महातमा) भीम रै समांन जोधार, सिंध जैड़ो रूप।

इणी तरै सूं केई कलवाचक, स्थानवाचक, क्रिया विसेसण संग्या कै सरवनांम रै साथै आय,र, संबंध बोधक रै ज्यां उपयोग में आवै है।

क्रिया विसेसण	संबंध बोधक संग्या नै सरवनांम
इण कांनी देख।	रांम रै कांनी देख।
ओ कांम पछै कियौ जावैला	औ कांम थांरै आवण सु पछै कियो जावैला।
आगै मती बैठ।	रांम रै आगै मती बैठ।
उठै मत जा।	म्हांरै उठै मत जा।

इणी तरै सूं केई विसेसणां री प्रियोग भी संबंध - बोधक रै ज्यां होवै है।

विसेसण	संबंध - बोधक
वित रा बराबर दोय बंट करो	थूं म्हारै बराबर नईं चाल सकै।
लायक आदमी री सैंग जागा कदर होवै।	थाऊं म्हारै बराबर को हालीजैनी
	थूं किणी रै लायक नईं
जोगा आदमी री पूछ होवै।	ऊ किणी रै काम जोगो कोयनी
जैड़ो देस वैड़ौ भेस।	थूं उण रै जैड़ो कोयनी।

घणाकरा संबंध सूचकां रै पैला 'रै' विभक्ति चिह्न नैं कठेई 'सूं' विभक्ति आवै है। ज्यां :— म्हारै कनै, नांम रै कनै, गांम सूं परै, नदी सूं परै, धन रै जैड़ौ, धन सूं विनां।

केई संबंध बोधक विना विभक्ति रैं भी आवै है। करता, लग भर (दिन भर) समेत, सरीको, सिरुको ; सरुको।

कदेई कदेई 'रै' अलोप रेवै है। ज्यां :— नीचे लीखीयोड़े मुजब, गाये विना, गये विगर, देखणैं जोग।

जद 'कांनी' (तरफ) रै पैला सख्या वाचक विसेसण रैवै है तौ उण रै पैली 'री' 'रैं' री जागा केवल 'रैं' इज आवै है। ज्यां :— गांम रै च्यरां कांनी, मकान रै दोनां कानी।

समांन वाचक — जैड़ौ, तरै, सरीखौ, सारीखौ, सिरुकौ, जोग, मुजब, मुतावक, जिसो।

विरोध वाचक — उलटो, खिलाप, विरुद्ध।

साथ वाचक — साथै, संग, सहित, समेत, अधीन, वस, भेलो।

संग्रह वाचक — भर, तक, लग समेत।

तुलना वाचक :— अगै, करता, विचै, पाहै।

रूप रै मुजब संबंध बोधक रा दोय भेद भलै होवै है। अेक मूल नै दूजौड़ो योगिक।

१. जके संबंध - सूचक सब्द किणि दूजा सब्दां सूं वणाया गया है वे मूल - सबंध सूचक कैवीजै है। ज्यां :—
विना, लग, तक, तांई, दाई।

२. जकै संबंध – सूचक सब्द दूजा सब्दां सूं बणाया गया है उणांने यौगिक – संबंध – सूचक सब्द कैवै है।

संग्या सूं :— वदलै, वास्ते, पलैट, करतां, विचै, पाहै, लेखे।

विसेसण सूं :— सरीखो, सारीखो, जोग, जैड़ो।

क्रिया विसेसण सूं :— ऊपर, हेटै, आगे, लारै, अठै।

क्रिया सूं :— लिये, करने।

संबंध सूचक रै मेल सूं ओकारांत संग्याआं विक्रत रूप में आवै है। ज्यां :— किनारे लग, चौमासे भर, छोरे सहित।

नीचे खास खास संबंध – सूचकां रा अरथ नै प्रयोग लिखिया जावै है।

आगै :— इण रो अरथ कदेई कदेई योग्यता व स्वभाव होवै है। ज्यां :— रांम रै आगै किणी भी नईं चलै है। वायरा रै आगै वादला नईं ठैर सकै है।

ठीक (लारै) :— जब इण में हरेक रो बोध होवै तव इण रै पैली विभक्ति नईं आवै है। ज्यां :— पोथी दीठ आंनो। आदमी दीठ रिपियो।

लारै :— इण रो प्रयोग भी उपर मुजब होवै है। छोरा लारै दस रिपिया खर्च किया।

कनै , खनै , पाहै , गोडै , पाखती पास :— इण सूं कवजो प्रगट होवै है। म्हारै कनै एक पोथी है। थारै गोडै किता रिपिया है।

सरीखो , सारीखो :— ओ घणकरो विना विभक्ति रै आवै है नै विसेस्य रै समांन रूप वदलै है। ज्यां :—

रांम सरीखो वेटो। सीता सरीखी स्त्री। प्रताप सरीखो वीर। पदमणी सरीखी सती।

जैड़ो :— घणकरो ओ विना विभक्ति रै भी प्रयोग में आवै है। ज्यां :— प्रताप जैड़ो राजा। दुरगदास जैड़ो वीर।

सो :— ओ कदेई संबंध - सूचक , कदेई प्रत्यय , कदेई क्रिया विसेसण रै ज्यूं उपयोग में आवै है। इण रो प्रयोग जैड़ो , खरीखो रै समांन होवै है।

संबंध सूचक :— फूल सो सरीर , हाथी सो वल।

प्रत्यय :— कालो सो घोड़ो। थोड़ो सो माल। वहुत सो धन।

क्रिया विसेसण सूं :— छोरी झूलती सी हालै है।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां में संबंध - सूचक नै उण रा भेद तथा उपयोग बताओ।

(१) पाली रै आथूणै कांनी अेक कपड़ै रो कारखांनो है।

(२) मिंदर रै माथै अेक कलस चढायोड़ो है।

(३) ऊ चार दिनां रै पछै गांव सूं घरै आयो।

(४) मोहन घूमण रै वास्ते मंडोर आयो।

(५) बूढो आदमी लकड़ी रै मदत सूं हालै है।

(६) ऊ मारग भर दौड़तो गियो।

(७) गंगा र तट माथै घणाई रूंख है।

(८) रोटी जीमण रै पछै थोड़ी जेज आराम करणा चईजै।

(९) उण चौधरियां री मदत सूं झगड़ो निपटायो।

(१०) मां बाप रै कैणे सूं उलटो कोई कांम नई करणो चईजै।

(११) धन विचै धरम चोखो है।

—•०•—

सोलमों अध्याय

समुच्चय बोधक

(१) रांम नै मोवन ने बुलावो।

(२) म्हैं रांम ने बुलायो पण वो नईं आयो।

(३) जे मगो नईं आयो तो थनै लिखणो पड़सी।

(४) गुरांसा कैयौ कै काले फीस लेने आवजो।

ऊपर लीखियोड़ा वाक्यां रै मांय छोटा आखरां वाला सब्द समुच्चय बोधक है। प्रथम वाक्य रै मांय 'जे' नै 'तो' नै चौथे में 'के' दो दो छोटा वाक्यां ने जोड़ै है। इणी तरै सूं तीजा वाक्य रै मांय 'जे' नै 'तो' जोड़ सूं आयोड़ा समुच्चय बोधक है।

समुच्चय बोधक दोय तरै रा होवै है अेक तो वाक्यां ने मिलावण आलो नै बीजो विभाजन करण आलो।

(१) मोवन कयो कै म्हैं जाऊं।

(४) काई तो बूढा नै काई जवांन सब भगवान सूं राजी हा।

ऊपरला वाक्यां रै मांय छोटा आखरां वाला सब्द अेक दूजे ने जोड़ै है इण सूं अे संयोजक समुच्चय बोधक है।

नै, जथा, जे, जिका, जिके, जिको, जको, जका, जके, तो, तोई, के, ई, फैर, भलै, वलै।

१. छोरो आवैला कै छोरी।

२. सड़कै जा नईं तो गाडी हूक जावैला।

३. नईं ऊठीरो नै नईं अठीरो।

४. जचै तो रै नै जचै तो जा।

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां रै मांय छोटा आखरां वाला सब्द विभाजक समुच्चय बोधक है। क्यां कै अै दोय बातां रै मांय अेक ने मंजूर करै है कै दुनां नें निसेध करै है।

नीचे लिखियोड़ा सब्द विभाजक समुच्चयबोधक सब्द है।
कै, पण, परत, परंतु, नीं, तो, जचै तो।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां में समुच्चय बोधक नै उवांरा भेद बताओ :—

(१) अठीनै सूं तो दिन ऊगो नै उठीनै सूं धूं आयो।

(२) नईं तो आप पधारिया नै नईंज कोई आपरो कागद आयो ।

(३) दीखण में तो ऊ घणोई सीधो है पण है अलपतो ।

(४) मोहन घरै जाई कै नहीं ।

(५) मन चावै तो रौ नै मन चावै तो जावो परा ।

(६) जे म्हैं ओ जांणतो कै आप नईं मिलोला तो म्हैं हरगिज नईं आवतो ।

(७) मोहन ने मिनखां कूटियो क्यां कै उण चोरी की ही ।

(८) कमावणो चइजै नईं तो भूखां मरतां जेज को लागै नईं ।

(९) उण मेहनत नईं करी इण वासते ऊ भूखां मरियो ।

—:o:—

सतरमौ अध्याय

विस्मयादि बोधक

(१) वाह ! रे वाह ! चोखो कांम कियो ।

(२) हाय ! हाय कैड़ी भूंडी मौत हुई ।

(३) अरे ! पेट दुखै ।

(४) ओयरे ! आंखियां दूखै ।

(५) बोय ! बोय ! की करै है ।

ऊपर लिखियोड़ा छोटा आखरां वाला सब्द कोई मन रो भाव प्रगट करै है । नै किणी वाक्य सूं इणां रो कोई संबंध नईं है । अैड़ा सब्दां ने विस्मयादि बोधक कैवे है ।

विस्मयादि बोधक मन रा केई भाव कै विकार प्रगट करै है । जिण में खास खास नीचे मुजब है ।

अचंभो, विस्मय, हरस, हरख , सोक , दुख , तिरस्कारक्रोध ।

कराई कराई सग्या , विसेसण क्रिया नै क्रिया विसेसण भी विस्मयादिबोधक रै ज्यूं कांम में आवै है । ज्यां :—

[१] रांम ! रांम ! कैड़ो खोटो कांम हुयो ।

[२] भलां ! उण औ कांम कीकर कियो ?

[३] जा ! अठै क्यूं आयो ।

[४] क्यूं अैड़ो कांम भलै ककेई करसी ।

नीचे लिखियोड़ा बिस्मयादि बोधक कदेई कदेई संग्या रै ज्यूं प्रियोग में आवै है । उण समै इण सब्दां ने संग्या समझणी चाइजै । ज्यू :—

[१] उणां आप ने वाह वाह दी है ।

[२] आप ने घणा धिन है ।

[३] उण घर में तो हाय हाय मचियोड़ी है । परंत राजस्थानी में इणी सब्दां सूं इण मुजब संग्या ई वणै है ।

छैवास = छैवासी ।
सैवास = सैवासी ।
वाह वाह = वाह वाही ।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां में विस्मयादिबोधक नै उणरा भेद बताओ :—

वाह ! कैड़ो सकरो गावै है । ओह ! आप पधार गया । अरे ! आगा रैजो । छैवास । साओड़ो कांम कियो । हाय । हाय ! कैड़ दुख री वात है । ओयरे ! जीव दोरो ।

अठारमौ अध्याय

सब्दां री बणावट

संसक्रत रै मुजब राजस्थांनी में भी सब्दां री बणावट रा दोय परधांन नियम होवै है। उण नियमां नै 'रूढ' नै 'यौगिक' कैवै है।

रूढ उण सब्दां ने कैवै है जिणां रा खंड अथवा टुकड़ा करण सू कोई खास अरथ नहीं निकलै ज्यां लोटो, तवो, हाथ, काळौ, आज, झट, वैगो, काल।

जिकै सब्द बीजा सब्दां रै जोड़ सूं अथवा मेळ सूं वणै उणां ने संसक्रत रै मुजब राजस्थांनी में यौगिक सब्द कैवै है। ज्यां :— कतरणी, ढकणी, पगरखी, दूधाल, लाताळ, अंगरखी, पीलापण, ढकणौ, हेमाळौ, दिणियर, सीरख।

अरथ री विसेसता रै मुजब अेक तरै री सब्द वणावट दूजी भी है जिण नै 'यौगिक रूढि सब्द' कैवै है। जिण सूं कोई खास अरथ निकलै है। ज्यां :— सूंडाळौ, दिनकर, भुरजाळौ, भुरजाळ, धावळियाळी, लोवड़ियाळ, लोवड़ीयाळी, गिरधर, गिरधारी, पांडुपुत्र, धरमपुत्तर, धूंधाळौ।

भालाळौ = भालो है जिण रो सस्त्र , पाबूजी राठौड़ ।

लोवड़ियाल = (श्याम रंग का ऊनी वस्त्र) है जिणरो प्रावरण रो , गावो = श्री करणी देवी ।

लंबोदर = लंबा + उदर = श्री गणेशजी ।

इणी तरै रा राजस्थांनो में 'यौगरूढिसब्दां' री भरमार है ।

जिणी तरै रा राजस्थांनी में दूजा सब्दां रै मेळ सूं जिके सब्द बणै है वे सब्द घणाकरा तीन तरै सूं बणै है । किणी किणी सब्दां रै पैली (प्रथम) 'उपसरग' लगावण सूं नै किणी किणी सब्दां रै आगै 'प्रत्यय' लगावण सूं नवा सब्द बणै है । नै कोई कोई सब्द किणी दूजा सब्द सूं मिलण सूं अेक नवो तीजो सब्द बणै है । तीजै तरै रा सब्द ने तो संसक्रत रै मुजब समास कैवै । ज्यां :— परबल , धाडफाड़ , बळ प्रियोग , दसाणण , धन - दौलत ।

राजस्थांनी रै मांय इणां रै बिवाय दोय तरै रा भलै सब्द होवै है उणां ने 'पुनरुक्त' नै अनुकरण वाचक सब्द कैवै है ।

पुनरुक्त सब्द अैड़ा सब्दां नै कैवै है जिकै बोलण में दोराया जावै है । ज्यां :— वरसो , वरस , बरोवर , धरोहर , रोटी वोटी , झटाझट - काटकूट ।

अनुकरण वाचक सब्द किणी पदारथ रै असल अथवा कल्पित धुनी प्रगट करण सारू जिको सब्द वणै है उण ने अनुकरणवाची (वाचक) सब्द कैवै है। ज्यां :— घमाघम, धमाधम, धड़ाधड़, कड़ाकड़, लंड़ालड़, लठालठ. राठरोठ, प्रत्ययां सूं बणियोड़ा सब्दां रा राजस्थांनी में दोय भेद है। अेक तो क्रदंत नें दूजोड़ौ तद्धित।

धातुआं रै आगै लगाया जावण वाला प्रत्ययां सूं जिकै सब्द वणै है उणां ने ससक्रत रै मुजब राजस्थांनी में क्रदंत कैवै है। धातुआं ने छोड़ बाकी रा सब्दां रै आगे प्रत्यय गावण जिकै सब्द वणै है उणां ने तद्धित कैवै है। ज्यां— लिखणहारो, लिखणियो लिखणआलौ, लिखणवालौ (क्रदत)

दूधाल, लाताल, रुपालौ (तद्धित)

आदि अव्यय (उपासी) पर, पव्रत, परा, अ, अण, अद, णध, अभ, अब, उप, दुर, नि, निर नु, वि, विछ, चछ, सा, का, कु, स, साव, सत, स्व; ओ, औ, भर, क, कठ, बे, न, ना, चद, विद, उ, वण, अच अत।

ऊपर लिखियोड़ा 'अव्यय' सब्द है अै सब्द जदकद क्रिया रै थैला आवै तो 'उपसरग' कैवीजै है। नईं तो अव्यय मांनिय जावै है। इणां रो विवेचन निचे मुजब है।

उपसरग :— प्र, प्रहार, संघार, संहार, उपहार।

अ = इण रो अरथ नईं होवै है। ज्यां :— अभाव, अदीठ, अभंग, असंगी, अलग, अखड, अधप, अडर, दूसरो अरथ इण रो समांन ही रैवै है। ज्यां :— अलोप तीसरो अरथ अधिक भी होवै है। ज्यां :— अपार।

अण :— औ राजस्थांनी रो सब्द है। इण रो अरथ 'नईं' नै दूसरो अरथ 'अदभुत' भी होवै है। नैं अधिक भी होवै है। ज्यां :— अणभंग, अणकल, अणमै, अणचेत, अणपार।

अत, अति = औ संसक्रत रो सुद्ध सब्द है। इण रो अरथ होवै है। ज्यां अतिकाल, अतगत।

अद, अध = औ सब्द संसक्रत रा 'अधि' सब्द रा अपभ्रंस है। जिणां रो अरथ 'ऊपर' नै 'स्थांन' में उत्तमता प्रगट करै है। ज्यां :— अदपत, अधपत, अधधार।

अनु :— औ संसक्रत रौ सुद्ध सब्द है। इण रौ अरथ नकलकरणी नै लारै वेवण रो होवै है ज्यां :— अनुचर, अनु ण।

अप :— औ संसक्रत रो सुद्ध सब्द है जिण रो अरथ संसक्रत रै मुजब 'हीन' 'रक्शव' अभाव होवै है ज्यां :- अपमांन अपकीरत, अपजस।

दूसरो 'अप' रो अरथ राजस्थांनी में अधिक होवै है :— अपजोरौ।

अब :— औ उपसरग संसकत रो 'अभि' सब्द रो अपभ्रंस है इण रो अरथ 'नैड़ो' 'सांमी' तरफ होवै है।

ज्यां :— अभमांन (अभिमांन) अभलाखा (अभिलाषा)।

अभ = औ उपसरग संसकत रै 'अभि' सब्द रो अपभ्रंस है इण रो अरथ 'नैड़ो' 'सांमी' 'तरफ' इज होवै है ज्यां :— अभमांन।

अव :— औ उपसरग संसकत रो सुद्ध सब्द है जिण रो अरथ 'नीचे' 'हीन' 'अभाव' नै नई होवै है ज्यां :— अवचत, अवट।

आ :— संसकत रो सुद्ध सब्द है इण रो अरथ 'लग' 'तक' समेत आदि होवै है ज्यां :— आजीवण, आक्रमण।

उ = औ राजस्थांनी सब्द है। इण रो अरथ नई होवै है। उदंत, उचालौ, उताल।

उप :— औ संसकत रो सुद्ध सब्द है जिण रो अरथ 'नैड़ो' 'सरीसौ' होवै है ज्यां :— उपगार, उपकार, उपदेश।

राजस्थांनी सब्द है जिण रो अरथ 'बुरो' नै 'खराब' ज्यां :— औगुण, औगत, औप।

क :— औ संसकत रो सुद्ध सब्द है जिण रो अरथ खराब होवै है ज्यां :— कपूत।

कठ :— औ राजस्थांनी सब्द है जिण रो अरथ ख, ज्यां :— कठरूप ।

कम :— औ उरदू रो सब्द है जिण रो अरथ 'थोड़ो' हुवै है । ज्यां :— कमजोर ; कमकीमत ।

का :— औ राजस्थांनी रो सब्द है जिण रो अरथ खराब होव है ज्यां.— कापुम ।

कु :— औ संसक्रत रो सुद्ध सब्द है जिणरो अरथ 'खराब' होवै है । ज्यां :— कुजस, कुरुप, कुचाल, कुडौल, कुठौड़, कुपंथ ।

दु :— औ ससक्रत रै 'दुर' सब्द रो अपभ्रंस है जिणरो अरथ नईं होवे है दुबलो ।

ना:— औ उरदू रो सब्द है जिणरो अरथ नईं होवै है ज्यां :— नालायक, नाजोगो, नाराज ।

न :— औ संसक्रत रो 'निर' 'नी' सब्द रो अपभ्रंस है जिण रो अरथ 'नईं' होवै है । ज्यां :— नचीतो ।

नि :— औ संसक्रत रो सुद्ध सब्द है जिणरो अरथ 'नीचे' 'ऊपर' नईं 'नहीं' ने बारै होवै है । ज्यां :— निवलो, निडर, निवल, निकांमो, निसरमो, निचीचो, निलजो, निमांणो ।

नु :— औ राजस्थांनी रो सुद्ध सब्द है इण रो अरथ 'नई' नै 'खराब' होवै है ज्यां नुगरो।

पर :— औ संसक्रत रो सुद्ध सब्द है इण रो अरथ 'दूजो' होवै है। ज्यां :— परनगर, परदेश, परघर।

पर :— औ संसक्रत रो 'प्र' सब्द रो अपभ्रंस है जिणरो अरथ 'अधिक' नै होवै है। ज्यां :— परबल, परछाय, परजल।

पर :— औ संसक्रत रो 'परि' सब्द रो अपभ्रंस है इण रो रथ 'अहाड़े' 'पहाड़े' 'चारोंकांनी' होवै है। ज्यां :— परकमा।

प्रत :— औ संसक्रत रै 'प्रति' सब्द रो अपभ्रंस है जिणरो अरथ 'विरुद्ध' 'सामने' होवै है। ज्या :— प्रतकूल, प्रतक (प्रत्यक्ष) प्रतबंत।

बे :— औ उरदू रो सब्द है जिणरो अरथ राजस्थांनी में चार तरै सूं होवै है। ज्यां :— 'अधिक' 'अद्भुत' 'नई', न 'खराब'।

भर :— औ राजस्थांनी सब्द है जिणरो अरथ अधिक होवै है। ज्यां :— भरपेट, भरपूर।

वड, विड, वद, विद :— औ राजस्थांनी रा सब्द है जिणां रो अरथ खराब होवै है। ज्यां :— विडरूप विडरूप।

वि :— औ संसक्रत रो सुद्ध सब्द है जिणरो अरथ 'जुदो' 'अधिक' न नईं होवै है ज्यां :— विदेस, विस्रांत, विधवा, विवाद, विटल।

स :— औ संसक्रत रो सुद्ध सब्द है इण रो अरथ चौखो नै साथ होवै है ज्यां सतोष, संगम, संजम।

स :— औ संसक्रत रो सुद्ध सब्द है इण रो अरथ 'सहित' नै आछो होवै है ज्यां :— सजीव, सचेत, सजग, सपूत, सपौचो।

सत :— औ संसक्रत रो सुद्ध सब्द है जिण रो अरथ 'चोखो' होवै है ज्यां :— सतकार, सतपुरस, सतसग।

सर :— औ राजस्थांनी सब्द है जिण रो अरथ सहित होवै है ज्यां :— सरजल, सरजीव, सरजीत।

सा :— औ राजस्थांनी रो सब्द है जिणरो अरथ 'चोखो' होवै है ज्यां :— सापुरस।

सु :— औ संसक्रत रो सुद्ध सब्द है जिण रो अरथ चोखो नै पाछो होवै है। ज्यां :— सुनांम, सुजस, सुपंथ, सुगरो।

सैं :— औ राजस्थांनी सब्द है जिणरो अरथ 'सहित' ने प्रतक्ष होवै है। ज्यां :— सैंजोड़, सैंदेह, सैंचोड़े, सैंदखा।

हर :— औ उर्दु रो सब्द है जिणरो अरथ प्रत्येक होवै है ज्यां :— हरकांम , हरअेक , हरघड़ी हरदिन ।

अभ्यास

नीचे लिखीयोड़ा सब्दां में उपसरगों रा भेद नै अरथ बताओ :—

अखड़ , अधर , अभंग , अणभंग , अकल , अडर , अनीतो निकांमो , निजोरो , निलजो , निसरमों । सावचेत , निपोचो । सावजोग , भरपेट , भरमार , सतकार , औघट , औगुण , औगत , कठरूप , विढरूप , उदंत , दुबलो , सपोचो , कमजोर बेहद , बेसुरो । बेसरमों । परवल , परनार , परघर , सजीव , सचेत , कुचाल , सजल , सरजल , सरजीत ।

नीचे लिखीयोड़ा उपसरगों रा जुदा जुदा अरथों रा उदाहरण दो :—

अण , अे , आ , साव , अन , वि , नि , कठ , विद , सु , कु ।

कृदंत (कर्तृवाचक)

धातु रै आगै आऊ प्रत्यय सूं :— खावणो सूं खाऊ , उडाणो सूं उडाऊ ।

धातु रै आगै आक प्रत्यय सूं :— लड़णो 'लड़ाक खावणो' खवाक, कूदणो सूं कूदाक रमणो सूं रमाक।

धातु रै आगै आकू प्रत्यय सूं :— लड़णो सूं लड़ाकू, खावणो सूं खवाकू।

धातु रै आगै आरी प्रत्यय सूं :— पूजणो 'पूजारी- बोरणो' जुआरी।

धातु रै आगै आल प्रत्यय सूं :— लेणो लेवाल, देवणो देवाल

धातु रै आगै आली प्रत्यय सूं :— झगड़णो सूं झगड़ाली।

धातु रै आगै आलो प्रत्यय सूं :— खावणो 'खावण आलो' पीवणो सूं पीवण आलो।

धातु रै आगै इयो प्रत्यय सूं :— जड़णो सूं जड़ियो, धुनणो सूं धुनियो।

धातु रै आगै इयोड़ो प्रत्यय सूं :— पढणो सूं पढ़ियोड़ो, लिखणो सूं लिखियोड़ो।

धातु रै आगै एरो प्रत्यय सूं :— लूटणो सूं लुटेरो।

धातु रै आगै एल प्रत्यय सूं :— झगड़णो सूं झगडैल, अकडणो सूं अकड़ैल।

धातु रै आगै ओरो प्रत्यय सूं :— चाटणों सूं चटोर।

धातु रै आगै औ प्रत्यय सूं :— घोटणो सूं घोटौ, लोडणो सूं लोडौ।

धातु रै आगै इयो–डी प्रत्यय सूं :— लिखणो सूं लिखियोड़ी,
पढणो सूं पढियोड़ी।

धातु रै आगै इयोड़ो प्रत्यय सूं :— पढणो सूं पढियोड़ो,
लिखणो सूं लिखियोड़ो।

धातु रै आगै ण प्रत्यय सूं :— वेलणो सूं वेलण, लिखणो
सूं लेखण।

धातु रै आगै णी प्रत्यय सू :— कतरणो 'कतरणी, ओढणो
ओढणी।

धातु रै आगै ल प्रत्यय सूं :— खूटणो 'खूटल, विटणो,
विटल।

धातु रै आगै हार प्रत्यय सूं :— लिखणो सूं लिखणहार,
पढणो सूं पढणहार।

धातु रै आगै हारो प्रत्यय सूं :— जावणो 'जावणहारो,
खावणो 'खावणहारो।

क्रिया रै मूल रूप सूं :— ओढणो, ढकणो, ओरणो।

भाववाचक कृदत

धातु रै आगै अ प्रत्यय सूं :— धातु रै अंत में 'अ' प्रत्यय
लगावण सूं गुण संधि रो
होवणो :— मिलणो सूं मेल।

धातु रै आगै अट प्रत्यय सूं :— घबराणो सूं घबराहट,
चिलाणो सूं चिलाट।

धातु रै आगै आई प्रत्यय सूं :— सुणावणो सूं सुणवाई, देखणो सूं देखाई, लड़णो सूं लड़ाई।

धातु रै आगै आट प्रत्यय सूं :— घबराणो सूं घबराट, बड़बड़णो सूं बड़बड़ाट, तड़फणो सूं तड़फड़ाट।

धातु रै आगै आप प्रत्यय सूं :— मिलाणो सूं मिलाप, संतणो सूं सताप।

आतु रै आगै आव प्रत्यय सूं :— बचणो सूं बचाव, चढणो सूं चढाव।

धतु रै आगै आवट प्रत्यय सूं :— सजणो सूं सजावट, थकणो सूं थकावट।

धातु रै आगै आवो प्रत्यय सूं :— पिछतावणो ' पिछतावो, बुलाणो 'बुलावो।

धातु रै आगै आंण प्रत्यय सूं :— ठगणो ' ठगाव, भुगतणो भुगतांण।

धातु रै आगै ई प्रत्यय सूं :— धमकणो सूं धमकी, बोलणो सूं बोली।

धातु रै आगै ओ प्रत्यय सूं :— क्रिया रै अंत रा 'ओ' रो लोप सूं :— मरणो सूं मरण, सोवणो सूं सोवण।

धातु रै आगै औ प्रत्यय सूं :— घेरणो सूं घेरौ, फेरणो सूं फेरौ।

धातु रै आगै औतो प्रत्यय सूं :— समझणो 'समझौतो, रड़वणो 'रड़वातो।

धातु रै आगै अंत प्रत्यय सूं :— घड़णो सूं घड़ंत, रमणो सूं रमंत, रटणो सू रटंत।

धातु रै आगै गत प्रत्यय सूं :— मिलणो सूं मिलगत, चलणो सूं चलगत।

धातु रै आगै णी प्रत्यय सूं :— पढणो सूं पढणी, करणो सूं करणी।

धातु रै आगै त प्रत्यय सूं :— बचणो 'बचत, खपणो 'खपत।

धातु रै आगै ती प्रत्यय सूं :— घटणो 'घटती, बढणो 'बढती

धातु रै आगै आस प्रत्यय सूं :— फुरमाणो 'फुरमास, तपणो सूं तपास।

धातु रूप सूं :— विचार, पुकार, सुधार, खेल।

क्रिया रूप सूं :— खाणो, गाणो, लिखणो, बैठणो, सूणो, बड़बड़ाणो, खड़बड़ाणो, तड़फड़ाणो।

गुणवाचक कृदंत

धतु रै आगै अंदो प्रत्यय सूं :— कर सूं करंदो, खुर सं खुरंदो।

धातु रै आगै आऊ प्रत्यय सं :— विकणो 'विकाऊ, टिकणो टिकाऊ।

धातु रै आगै आऊड़ो प्रत्यय सूं :— वधाणो सूं वधाऊड़ो।

धातु रै आगै आल़ प्रत्यय सूं :— रुखवाल़णो सूं रुखवाल़।

धातु रै आगै इयोड़ो, इयोड़ी प्रत्यय सूं :— ठगणो सूं ठगियोड़ी ठगियोड़ो, लिखणो सूं लिखियोड़ी, लिखियोड़ो, पढणो सूं पढियोड़ी, पढियोड़ो।

धातु रै आगै ऊ प्रत्यय सूं :— जोड़णो सूं जोड़ू, खावणो सूं खाऊ।

धातु रै आगै अेड़ प्रत्यय सूं :— पालणो सूं पालेड़, हिल़णो सूं हाल़ेड़।

धातु रै आगै अेरो प्रत्यय सूं :— भंगेरणो सूं भंगेरो। जगेरणो सूं जगेरो।

धातु रै आगै ओकड़ो प्रत्यय सूं :— चटणो सूं चटोकड़ो, खावणो खावोकड़ो, लड़णो सूं लड़ोकड़ो।

धातु रै आगै क प्रत्यय सूं :— प्रजाल़णो सूं प्रजाल़क। भाल़णो सूं भाल़क।

धातु रै आगै कण प्रत्यय सूं :— भिड़कणो सूं भिड़कण।

धातु रै आगै खंडो प्रत्यय सूं :— खावणो सूं खावणखंडो।

धातु रै आगै इयाळ प्रत्यय सूं :— भिड़णो सूं भिड़ियाळ,
लड़ सूं लड़ियाळ।
अड़णो सूं अड़ियाळ।

धातु रै आगै वाळ प्रत्यय सूं :— दणो सूं दैवाळ,
लैणो सूं लैवाळ।

क्रिया रै रूप सूं :— वैवणो, सुहावणो, डरावणो, लुभावणो।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ी क्रियाआं सूं संग्या नै विसेसण सब्द वणाओ :—

पढणो, हसणो, घटणो, चरणो, चराणो, लड़णो, वैणो, खावणो।

तद्धित

तद्धित व्याकरण में अैड़ा प्रत्ययां ने कैवे है जिके प्रत्यय संग्या नै विसेसण रै अंत में लगावण सूं सब्द वणै है नै अै सब्द ईज संग्या नै विसेसण बणजावै है। तद्धित प्रत्ययां सूं वणियोड़ा सब्द राजस्थांनी में ई छ प्रकार रा होवै है।

अपत्य वाचक

अपत्यवाचक पत्ययां सूं संतांन अथवा गुरु परंपरा सूं किणी धरम ने मानण वाला गुरु रै चेला रो बोध होवै है। ज्यां :—

ज्यां :— चांपो = चांपा , चांपावत (चांपापुत्र , चांपापुत्त , चांपाउत्त) ।

कूंपो = कूंपा , कूंपावत (कूंपापुत्र , कूंपापुत्त , कूंपाउत्त)

ऊदो = ऊदा , ऊदावत , (ऊदापुत्र , ऊदापुत्त , ऊदाउत्त)
ओत प्रत्यय सूं :— करमसेन , सूं करमसोत , रांम सूं रांमोत ।

कठेंई कठेई मूल – पुरख रा नांम सू भी अपत्यवाचक सब्द बणै है ज्यां :— ऊजल रा वंसज ऊजल ,

ऊदा ,, ,, ऊदा ।
जोधा ,, ,, जोधा ।
दूदा ,, ,, दूदा ।

आई प्रत्यय सू :— वैदां सूं वैदाई , मेहे सूं मेहाई ।

आंण प्रत्यय सूं :— कूंपा सूं कूंपांण , ऊदा सूं ऊदांण ।

आंणी प्रत्यय सूं — ऊदे सूं ऊदांणी , कोल "कोलांणी ।

उतरो प्रत्यय सू :— जेठ सूं जेठूतरो , देवर सूं देवरूतरो । नाथे सूं नाथांणी । घणकरा संसक्रत रा सब्द ततसम (तत्सम) रूप में इज रैवै है ।

रघु सूं राघव । पांडु सूं पांडव । गंगा सूं गंगेव । गांगेय ।

गुरु परम्परा सूं :— रांमानंद सूं रांमानंदी । कबीर सू कबीरपंथी । रांमा 'रांमावत , नानक सूं नानकपंथी ।

स्थान विसेस रै कारण सूं :— खेड़ सूं खेड़ेचा, खेड़ेच। पाली सूं पालीवाल, पलीवाल। अहाडां, सूं अहाड़ा। खडेला सूं खडेलवाल। मेड़ेत सूं मेड़तियो, जयपुर सूं जयपुरियो। मथुरा सूं माथुर, मारवाड़ सूं मारवाड़ो नै मेवाड़ सूं मेवाड़ो। श्रीमाल सू श्रीमाली।

करतरी वाचक

आड़ी प्रत्यय सूं :— खेल सूं खेलाड़ी, कबाड़ौ सूं कबाड़ी।

आट प्रत्यय सूं :— खग 'खगाट, भुज 'भुजाट, तुरा सूं तुराट।

संसक्रत रा 'आर' अपभ्रंस सूं :— कुंभकार सूं कुंभार,
स्वर्णकार सूं सुनार,
लोहकार सूं लोहार।

आरो प्रत्यय सूं :— विणज सूं विणजारो, पूजा सूं पूजारो, लाख सूं लखारो।

आलो, वालो सूं — पांणी सूं पांणी आलो नै घर घर सू घरआलो।

इयो प्रत्यय सूं :— आड़त सूं आड़तियो, फड़ सूं फड़ियो।

ई प्रत्यय सु :— राग सूं रागी पग सूं पागी।

एती प्रत्यय सूं :— गांम 'गामेती, गाडी 'गाडेती, धाड़े स धाड़ेती।

एरो प्रत्यय सूं :— भांग सूं भांगेरो।

कूटो प्रत्यय सूं :— काचड़ सूं काचड़ कूटो।

गर प्रत्यय सूं :— सौदा सूं सौदागर, कारी सूं कारीगर।

टी प्रत्यय सूं :— रीस सूं रसीट।

दार प्रत्यय सूं :— अमल सूं अमलदार, रसोई सूं रसोईदार।

नवीस नवेस प्रत्यय सूं :— सोना सूं सोना नवीस, सोनानवेस
नकल सूं नकलनवीस, नकलनवेस

याल प्रत्यय सूं :— दातड़ी सूं दातड़ीयाल, सींगड़ी सूं
सींगड़ीयाल।

गुणवाचक तद्धित

अणियो प्रत्यय सूं :— डरण सूं डरणियो, डरकण सूं
डरकणियो।

आऊ प्रत्यय सूं :— गांम 'गांमाऊ, मुलक 'मुलकाऊ।

आट प्रत्यय सूं :— भुज सूं भुजाट, खग सूं खगाट।

आयत प्रत्यय सूं :— लैण सूं लैणायत, दैण सूं दैणायत,
धाड़ा सूं धाड़ायत।

आयल प्रत्यय सूं :— अजर सूं अजरायल, झगड़ा सूं
झगड़ाहल।

आल प्रत्यय सूं :— लात सूं लाताल, दूध सूं दूधाल।

आलो प्रत्यय सूं :— दूध 'दुधालो, लात सूं लातालो।

आंण प्रत्यय सूं :— उतर सूं उतरांण, दिखण सूं दिखणाण।

आंतियो प्रत्यय सूं :— पग सूं पगांतियो, सिर 'सिरांतियो।

ओतियो प्रत्यय सूं :— पग सूं पगोतियो, हल 'हलोतियो।

इयांण प्रत्यय सूं :— सुभ सूं सुभियांण।

ई प्रत्यय सूं :— जंगल सूं जंगली, सूत सूं सूती, रेसम सूं रेसमी।

ईक प्रत्यय सूं :— भाव सूं भावीक, पाठ सूं पाठीक,

ईको प्रत्यय सूं :— पुड़ी सूं पुडीको, मण सूं मणीको।

ईणो प्रत्यय सूं :— लाख सूं लखीणो, साख सूं साखीणो।

ईली प्रत्यय सूं :— कंकड़ सूं ककड़ीली, पथर सूं पथरीली।

ईलो प्रत्यय सूं :— रंग सूं रंगीलो, रस सूं रसीलो।

ऊ प्रत्यय सूं :— घर सूं घरू, बाजार सूं बाजारू।

ऊणी प्रत्यय सूं :— पहलै सूं पहलूणी, अगलै सूं अगलूणी।

ऊंद प्रत्यय सूं :— दस सूं दसूंद, बीस सूं बीसूंद।

ऊंदी प्रत्यय सूं :— दस सूं दसूंदी, बीस सूं बीसूंदी।

एड़ प्रत्यय सूं :— ठालै सूं ठालेड़, कालौ सूं कालेड़।

एड़ो प्रत्यय सूं :— कांम सूं कांमेड़।

एतण प्रत्यय सूं :— जांन सूं जानेतण, मांन सूं मानेतण।

एती प्रत्यय सूं :— जांन सूं जांनेती, मांन सूं मांनेती।

एल प्रत्यय सूं :— जोस सूं जोसेल, खार सूं खारेल।

ओ प्रत्यय सूं :— तिरस सूं तिरसो, भूख सूं भूखो।

ओद प्रत्यय सूं :— वरस सूं वरसोद, परसोद।

ओकड़ प्रत्यय सूं :— पाल सूं पालोकड़, खाणो सूं खावोकड़।

कण प्रत्यय सूं :— डर सूं डरकण, बी सूं बीकण।

कार प्रत्यय सूं :— गुण सूं गुणकार, लाभकार।

की प्रत्यय सूं :— खुराक सूं खुराकी, लड़ाक सूं लड़ाकी।

कों प्रत्यय सूं :— लाड सूं लाडको , पौर सूं पौरकी ।
गर प्रत्यय सू :— ईंट सूं ईंटगर , मींढ सूं मींढगर ।
गार प्रत्यय सूं :— बुरी स बुरीगार , राड़ सूं राड़गार ।
गारो प्रत्यय सूं :— औगण सूं औगणगारो ; छंदा सूं छंदागारो
चो प्रत्यय सूं :— कूड़ सूं कूचड़ो ।
टो प्रत्यय सूं :— चोर सूं चोरटो , गोर सूं गोरटो ।
णू प्रत्यय सूं :— आवण सूं आवणू , जावण सूं जावणू ।
दाई प्रत्यय सूं :— सुख सूं सुखदाई , दुख सूं दुखदाई ।
यण प्रत्यय सूं :— गुण सूं गुणियण , कवि सूं कवियण ।
यांन प्रत्यय सूं :— समझ सूं समझयांन , गुण सूं गुणयांन ।
यारी प्रत्यय सूं :— दुखी सूं दुखियारी , सुखी सूं सुखीयारी ।
ल प्रत्यय सूं :— बोझ सूं बोझल , दोझ सू दोझल ।
लू प्रत्यय सूं :— वरसा सूं वरसालू , ऊनालो सूं ऊनालू ।
आयत :— विखै सूं विखायत , सिरै सूं सिरायत ,
वंट सूं वंटायत ।
लो प्रत्यय सूं :— आगै सूं आगलो , लारै सूं लारलो ।
वांणी प्रत्यय सूं :— नील सूं नीलवांणी ; लील सूं लीलवांणी
भूरा सूं भूरांणी ।
वांन प्रत्यय सूं :— भाग सूं भागवांन , बाग सूं बागवांन ।
वी प्रत्यय सूं :— पाट सूं पाटवी , राजा सूं राजवी ।
बाज प्रत्यय सूं :— रंडी सूं रंडीबाज , धोखे सूं धोखेबाज ,
दगै सूं दगाबाज ।

को प्रत्यय सूं :— लाड सूं लाडको, बोलणा सूं बोलको।

भाववाचक तद्धित

आई प्रत्यय सूं :— चतुर सूं चतुराई, कपूत सूं कपूताई।

आको प्रत्यय सूं :— धड़ सूं धड़ाको, धम सूं धमाको।

आयत प्रत्यय सूं :— पंच सूं पंचायत, अपणौ सूं अपणायत, आपौ सूं आपायत।

आवौ प्रत्यय सूं :— मेल सूं मेलावौ, उत्तर सूं उतरावौ,

आणो प्रत्यय सूं :— छाड सूं छाडांणो, निजर सूं निजरांणो।

ई प्रत्यय सूं :— चोर सूं चोरी, कपूत सूं कपूती।

ऊन प्रत्यय सूं :— नांम सूं नांमून।

ओ प्रत्यय सूं :— बोझ सूं बोझो, सोज सूं सोजो।

ओती प्रत्यय सूं :— बाप सूं बपौती, कांनां सूं कनौती, कांनौती।

कार प्रत्यय सूं :— हिन्दू सूं हिन्दूकार, छत्री सूं छत्रीकार।

कारो प्रत्यय सूं :— ना सूं नाकारो, हां सूं हांकारो।

गत प्रत्यय सूं :— राज सूं राजगत, देव सूं देवगत।

गी प्रत्यय सूं :— सादो सूं सादगी, मांदगी, सरदारगी।

आचार प्रत्यय सूं :— मिनख सूं मिनखचार, भाई सूं भाईचार

चार प्रत्यय सूं :— पांमणो सूं पांमणाचार, दुरा सूं दुराचार

चारो प्रत्यय सूं :— गिनायत सूं गिनायतचारो, भाई सूं भाईचारो।

प प्रत्यय सूं :— सैण सूं सैणाप , मेल सूं मेलाप ।

पणो प्रत्यय सूं :— मिनख सूं मिनखपणो , माईत सूं माईतपणो ।

आपो प्रत्यय सूं :— फूटरै सूं फूटरापो , बूढै सूं बुढापौ ।

पौ प्रत्यय सूं :— गोली सूं गोलीपो , भाई सूं भाईपौ ।

रौ प्रत्यय सूं :— आव सूं आवरौ , विकणा सूं विकरौ ।

वाड़ प्रत्यय सूं :— भेल सूं भेलवाड़ , मेल सूं मेलवाड़ ।

वाड़ौ प्रत्यय सूं :— पख सूं पखवाड़ौ , आठ सूं अठवाड़ौ ।

लघुवाचक

इयो प्रत्यय सूं :— कलस सूं कलसियो , गधै सूं गधियो ।

ई प्रत्यय सूं :— भाखर सूं भाखरी , लोटै सूं लोटी ।

ओलियो प्रत्यय सूं :— छाव सूं छवोलियो , घुरक सूं घुरकोलियो

को प्रत्यय सूं :— धीणै सूं धीणको , नैंन सूं नैनको ।

ड़ी प्रत्यय सूं :— राव सूं रावड़ी , घाट सूं घाटड़ी ।

ड़ो प्रत्यय सूं :— छोटे सूं छोटोड़ो , मोटे सूं मोटोड़ो ।

कली प्रत्यय सूं :— चिड़ि सूं चिड़कली , रिड़ सूं रिड़कली

लो प्रत्यय सूं :— खाट सूं खाटलो , दसड़ सूं दसड़लो ।

ली प्रत्यय सूं :— आंवो सूं आंवली , घोड़े सूं घोड़लो ।

महान वाचक

महान वाचक सब्द राजस्थानी में दो प्रकार रा होवै है। जिणां में प्रथम प्रकार रा सब्दां में व्यक्ति विसेस री महानता व गुण प्रगट करै है। और दूसरे प्रकार रा सब्द केवल शरीर री बणावट री महता प्रगट करै है। ज्यां :—

ईस प्रत्यय सूं :— उदा सूं उदेस , बुधा सूं बुधेस , मगा सूं मगेस।

एण प्रत्यय सूं :— रामा सूं रामेण , उदा सूं उदेण।

ल प्रत्यय सूं :— उदा सूं उदल , आसू सूं आसल।

ई रै लोप सूं :— घरटी सूं घरट , पथरी सूं पथर।

ईड़ प्रत्यय सूं :— भैंस सूं भैंसीड़।

एड़ प्रत्यय सूं :— गधा सूं गधेड़ , भैंस सूं भैंसेड़।

ओ रा लोप सूं :— घोड़ो सूं घोड़ , गधेड़े सूं गधेड़।

ड़ प्रत्यय सूं :— ऊँठ सूं ऊठण , भैंस सूं भैंसण।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ी संग्या नै विसेसणां सूं दूजा सब्द बणाओ।

भूक , दूध , भारवर , मितर , ऊंदरो , चोर , गीलो , पुरांणो उदास , लंबो।

—:o:—

उगणीसमो अध्याय

समास

१. राजक्वार लड़ाई में मारियो गियो।

२. बालक जनम - कोढियो है।

३. ओ वडोघर किण किण रो है।

४. माजन लोग वौपार में पाटक होवै हैं।

५. त्रिभुवण में रांम जैड़ो राजा नईं हुयो है।

६. अठवाडे रो अठवाडे मोवन अठै आया करै है।

७. मैं जथासगती कोसिस करूंला।

८. (लड़को) छोरो धीमैं धीमैं हालै है।

९. जोगमाया सरणाई साधार हैं।

१०. मारवाड़ में आ बाजरी रो तोटो कोयनी।

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां में छोटा आखरां आला सब्द दोय कै घणा सब्दां रैं मेंल सूं बणियोड़ा है। उणां रा संबंधी सब्दां रो लोप होगियो है। ज्यां :—

राजकुमार :— राजा रो कंवर।

मोटो घर :— मोटो घर कै बड़ो घर।

माजन :— बड़ो आदमी।

त्रिभुवण :— तीन ई भुवण रो समूह ।
अठवाड़ै :— आट दिनां रो समूह ।
जथासगती :— जठा तांई हो सकी ।
धीमै धीमै :— धीमै धीमै ।
छा बाजरी :— छा नै बाजरी ।
सरणाई साधारण :— सरण में आयोड़ै री रक्षा करण आली ।

दोय कै दोय सूं घणा सब्द, अपणा संबधी सब्दां ने छोड़ अेक साथै मिल जावै तो अैड़ा मेल सूं वणियोड़ा सब्दां ने 'समास' कैवीजै है। नै अैड़ा सब्द ने समासवालां सब्द पण कैवै है। इणां सब्दां रो संबंध प्रगट कर दिखावण री रीति ने संसक्रत रै मांय विग्रह कैवै है। समाज वाला सब्दां में कारक नै विभगति सदाई उण रा छेड़ले पद में रैवै है। ज्यां :—

बनभाई सूं, मां बाप सूं, छाछ बाजरी सूं, बैन भाई नै राजमेल में।

ततपुरुस

(१) रांम कृपासागर है।
(२) छोरां ने देसनिनालो दियो गयो।
(३) कामचोर आदमी कठेई सुखी नई रैवै है।
(४) राजपूत घणा वीर होवै है।

ऊपरला उदाहरणां में छोटा आखरां आला सब्द समासवाला

सब्द आया है। जिण समास रै मांय उत्तर पद परधांन होवै है उण नै ततपुरुस समास कैवै है।

करम धारय

लालमिरच,

मझधार,

सज्जन,

साजन,

ऊपरला नमूनां रा सब्दां में पैलो पद विसेसण है। जिण समास में पैलो पद विसेसण होवै है उण नै करम धारय समास कैवै है।

द्विगु

अठवाड़ो = आठ दिनां रो समूह।

पचकूटो = पांच चीजां रो समूह।

त्रिफला = तीन फलां रो समूह।

नव रतन = नव रतनां रो समूह।

ऊपरला नमूना रा सब्दां में पैलो पद संख्यावाची विसेसण नै पूरा सब्द सूं पदारथां रै समूह रो बोध होवै है। जिण समास में पैलो पद सख्यावाची विसेसण होवै है उण नै द्विगु समास कैवै है।

द्वंद समास

जिण समास रै मांय 'नै' 'कै' 'और' सब्द रो लोप होवै है। उण नै द्वंद समास कैवै है। ज्यां :— रात दिन, अंजल, ज्वा बाजरी, दूध - रोटी, सीताराम, पापपुन।

ऊपरला सब्दां रै मांय दो दो सब्द परधांन है नै दुनोई रै बाबत चरचा की गई है। इण सब्दां रै वीचै आवणवालो सब्द समुच्चयबोधक अव्यय 'नै' रो लोप है औ समास द्वंद समास कैवीजै है।

अव्ययी भाव

जथाजुगत, जथाजोग,

अणचितो, निडर, अडर

अमोल, अणघड़।

प्रतदिन।

ऊपरला उदाहरणां रै मांय हरेक सब्द रा पैला सब्द रै मुख अरथ है। नै पैलो सब्द अव्यय है इण सूं पूरो सब्द क्रिया विसेसण र ज्यां प्रयोग होवै है। जिण समास रै मांय अव्यय सब्दां रो (योग) मेल दूजा सब्दां रै साथै होवै उणने अव्ययीभाव समास कैवै है।

बहुव्रीहि

(१) मेड़ते में च्यारभुजा रो मिंदर है।
(२) जती लोग काळ ऊरा होवै है।
(३) सरणागतसाधार रांम रै सिवाय दूजो कोयनी।
(४) धोळीधजारो धणी सैंग आतमा.यां रो रख्या करै है।

ऊपरला वाक्यां रै मांय हरेक समास रा दोनोई सब्द परधांन नहीं है। अठै च्यारभुजा सूं अरथ है च्यारभुजा है जिणरै अठै नईं तो च्यार सब्द परधांन है नै नईं जको भुजा सब्द परधांन है। पण इण दोनों सब्दां सूं अन्य अरथ विस्णुभगवान परधांन है नै च्यारभुजा विसणुवाचक सब्द है। जिण समास में अन्य पद परधांन हवै है उण ने बहुव्रीहि समास कैवै है।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा सब्दां में समासा रो भेद बताओ।

चीरफाड़, लोवड़ियाली, धोळीधजा रो धणी, जथाजोग धावलोयाळी, बीसहथी, कांमकाज, रावरोटी, त्रिभुवण गुरुदेव, नवरतन। प्रतदिन।

वीसमों अध्याय

पुनरुक्त ने अनुकरणवाची सब्द

वरसावरसी, होलै - होलै, मोटा -- मोटा, आड़ै - पाड़ै, आहड़ै - पाहड़ै, पूछतांछ, घरोघर, झट -- झट, जागा - जागा, झटपट, सटपट।

ऊपरला सब्दां रै मांय अेक जैड़ा दोय सब्द साथै साथै आया है। जिणां में अेक ई सब्द रै साथै दूजो सब्द समांन धुनी रो है। अैड़ा सब्दां नै हिन्दी रै मुजब राजस्थांनी में ई पुनरुक्त सब्द कैवे है।

पुनरुक्त सब्द दोय तरै रा होवै है अेक तो पूरण पुनरुक्त नै दूजोड़ा अपूरण पुनरुक्त।

जदै कदेई अेक इज सब्द लगतो दोय कै तीन चार प्रियोग में आवै है जणां उण ने हिंदी रै मुजब पूरण पुनरुक्त सब्द कैव है। ज्यां :— गांम - गांम, हालतां - हालतां, जावतां - जावतां,

जदै कदेई अेक ई जैड़ा समांन अनुप्रास वाला सारथक कै निरस्थ सब्द अेक साथै दोय कै तीनवार आवै है तो उण ने

अपूरण पुनरुक्त सब्द कैवै है । ज्यां , आंमी - सांमी , पूछताछ , आडै - पाडै , आसडै - पाहडै ।

पूरण पुनरुक्त सब्द घणकरा अेक जात घणो , घणापणो , प्रगट करै है नै वे छ तरै रा होवै है ।

संग्या :—मारवाड़ में वरोवर काल पड़ै है ।

विसेसण :— हूं चोखा चोखा आंवा लायो हूं ।
छोरा नवा नवा खेल रमै है ।

क्रिया :—हूं हालतां हालतां थकगियो ।
देतां २ की आड़ो करै है ।

क्रिया-विसेसण :— होलै २ की हालै है ?
खातो खातो हाल ।

संबंध-सूचक :— छोरा कनै कनै वैठा है ।
घर र पाड़ै पाड़ै सफाई राखणी

विस्मयादि वोधक :— अरे ! अरे ! हैं ! हैं !

अपूरण पुनरुक्त सब्द दोय - सारथक के दोय अेक सारथक कै अेक निररथक सब्दां रै मेल सूं च्यार तरै रा होवै है ।

संग्या :— दूध - रोटी , छावाजरी , भरसार ,
विसेसण :— जाडोमातो , छोटो मोटो , हट्टो कट्टो ,

क्रिया :— खावणो - पीवणो , आवणो - जावणो ,
पूछणो - ताछणो ।

अव्य :— अठै - उठै , जठै - कठ , आंमी - सांमो ।

अनुकरणवाची सब्द

सग्या :— हड़बड़ , बड़ड़ , कड़ड़ , हड़ड़ , दड़ड़ ।

विसेसण :— खटपटियो , झटपटियो , गड़बड़ियो ।

क्रिया :— बड़बड़ाणो , कड़कड़ाणो , झलझलाणो ।

क्रिया विसेसण :— झटाझट , धड़ाधड़ , पड़ापड़ ।

अभ्यास

पुनरुक्त सब्दां रा भेद नें अरथ बताओ :—

(१) उण री तो बात बात में फरक है ।

(२) उठे जावता जावता ।

(३) रात पड़ जावसी ।

(४) उण रा रूं रूं रीस सूं खड़ा हुगिया ।

(५) उण सड़क माथै केई ऊंचा ऊंचा घर है ।

(६) उठै धड़ाधड़ आदमी पड़िया ।

(७) ओलां री तड़ातड़ लागगी है ।

(८) छोरो थर थर धूजै है ।

पद व्याख्या

वाक्या रै मांय स्थित पदां रो रूप नै उणां रो आपस रो संबंध रो पूरण ग्यान पद व्याख्या सूं होवै है क्यांके वाक्यां रै पदां रै आपस रो संबंध प्रकार लिंग वचन, पुरक, कारक काल आदि रे उल्लेख ने ई पद - व्याख्या, पद परिचय, पद छेद, पद निर्णय, पदान्वय अथवा पदनिरधेस कैवै है। 'पद व्याख्या करण रै मांय सब सूं पैली आ बात देखणी चईजै कै संग्या, सरवनांम विसेसण।

पद व्याख्या करण मांय सब सूं पैली आ बात देखणी चईजै कै संग्या सरवनांम, विसेसण, विसेसण, क्रिया नै अव्यय इण पांचां मांय सू किण प्रकार रो सब्द है इण रै बाद हरेक री पद व्याख्या नीचे लिखियोड़ी बातां रो उल्लेख करणो वाजिब है।

(१) संग्या मे प्रकार (जातिवाचक आदि) लिंग, वचन पुरस, कारक नै क्रिया बीजां पदां रै साथ संबंध रो उल्लेख करणो चईजै।

(२) सरवनांम में प्रकार (पुरसवाचक आदि) रै साथ ऊपर मुजब बातां रो उल्लेख करणो चईजै।

(३) विसेसण में विसेसण रा प्रकार (गुणवाचक आदि) नै उण रै विसस्य पद री पद व्याख्या नई करणी होवै तो विसेसण में लिंग, वचन, कारक रो भी उल्लेख करणो चईजै।

(४) क्रिया में क्रिया रा प्रकार (अकरमक सकरमक) आदि) पुरस लिंग , वचन , काल , वाच्य नै करता रो उल्लेख करणो चईजै। सकरमक क्रिया रै मांय करम रो भी उल्लेख करणो चाईजै। करमवाच्य में प्रथमा विभक्ति वालो पद करता कारक होवै है। पूरब कालिक क्रिया नै उत्तर कालिक क्रिया रै मांय केवल उणां रो करता दिखावणो चईजै। क्रिया विसेसण रै मांय उण रा प्रकार नै उण री क्रिया ने बतावणो चाईजै।

(५) अव्यय में प्रकार (संबंध [सूचक] बोधक) आदि रो उल्लेख करणो चईजै। जे संयोजक अथवा वियोजक अव्यय होवै तो वो जिण पदां अथवा वाक्यां ने मिलावतो होवै अथवा अलग करतो होवै तो उण रो भी उल्लेख करणो चईजै।

मगो नै सांवल उण रै पुरांणा खेत में वेगा आवैला।

(१) मगो = व्यक्तिवाचक संग्या , पुल्लिग , अेक वचन , अन्य पुरस नै आवैला क्रिया रा करता। सांवल रो ही अेड़ो इज।

(२) नै = संयोजक अव्यय। मगो नै सांवल ने जोड़ै है।

(३) उण रा = पुरसवाचक सरवनांम , पुल्लिग , अेक वचन अन्यपुरुष संबंधकारक इण रो संबंधवान खेत है।

(४) पुरांणा = गुणवाचक विसेसण। इण रो विशेस्य खेत है।

(५) खेत = जातिवाचक संग्या , पुल्लिग , अेक वचन , अन्य

पुरस नै अधिकरण कारक ।

(६) में = अधिकरण कारक रो चिह्न है ।

(७) वेगा = कालवाचक क्रिया विसेसण । आवैला क्रिया रा विसेसण ।

(८) आवैला :— अकरमक क्रिया पुल्लिग , बहुवचन , अन्य पुरस सामान्य भविसत , करत्री वाचक । रांम नै स्याम इणरा करता है ।

म्हैं बिलाडे में जायने बांणगंगा रै तट माथै देखियो के अेक मोटी भीड़ लागी है ।

म्हैं — पुरसवाचक सरवनांम , पुल्लिग (केवण वाली लुगाई होवै तो इसत्रीलिंग ही हो सकै है । अेक वचन , उत्तर पुरस , करत्ताकारक । देखियो क्रिया रो करता है ।

बिलाड़े में :— व्यक्ति वाचक संग्या स्त्रीलिंग अेक वचन अन्यपुरस नै अधिकरण कारक ।

जायने :— पूरब कालिक क्रिया । इण रो करता म्हैं है ।

बांणगंगा रै :— व्यक्ति वाचक संग्या स्त्रीलिंग अेक वचन अन्य पुरस नै सबंध कारक इण रो सबंधवान तट है ।

तट माथै :— जातिवाचक संग्या, पुल्लिंग अेक वचन अन्य पुरस नै अधिकरण कारक।

देखियो :— सकरमक क्रिया, पुल्लिंग, अेक वचन, उत्तम पुरुस सामान्य भूतकाल, करत्री वाच्य इणरो करत्ता "म्हैं" नै करम "अेक मोटी भीड़ लागी है" ने जोड़े है।

अेक :— संख्यावाचक विसेसण। इण रो विसेस्य मोटी भीड़ है।

मोटी :— गुणवाचक विसेसण, इण रो विसेस्य भीड़ है।

भीड़ :— भाववाचक संग्या स्त्रीलिंग, अेक वचन, अन्यपुरस नै करत्ता कारक, इणरी क्रिया लागी है।

लागी है :— अकरमक क्रिया, स्त्रीलिंग, अेक वचन, अन्य पुरस, सामान्य भूतकाल, करत्रीवाच्य इण करता भीड़ है।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां में आयोड़ा पदां री पदव्याख्या करो।

मैदांन में घोड़ा दोड़ै है। कबूड़ो रूंख माथै सूं नीचो पड़ गयो। थैं काले अेक सांभर देखियो हो।

इक्कीसमों अध्याय

वाक्य प्रथक्करण

वाक्य उपवाक्य नैं वाक्यांस

[१] डूंगरां में रेवण वाला जंगली जानवरां सूं कोयनीं डरै ।

[२] महाराजा हनुवंतसिंह वहुत बुद्धिमांन राजा हुता ।

[३] फतजी पौसाल रो पुरांणो चपरासी है ।

[४] गरमी रा दिनां में सायर रौ पांणी भाप वणै है ।

[५] अेकलव्य घणी मैनत सूं तीर विद्या रो अभियास करण लागो ।

ऊपर लिखियोड़ा हरेक सब्द – समूह सूं अेक अेक पूरो विचार प्रगट होवै है । सब्दां रा अंड़ा समूह ने जिण सूं पूरो विचार प्रगट होवै है वाक्य कैवे है ।

(१) मातमा गांधी जी कह्यो कै अवे कोई फिकर री वात नईं ।

(२) जिण सीपां में मोती निकलै है वे समुंदर रै तलै में होवै है ।

(३) रा नृपति ने आदर रै साथ बाबाजी ने बुलाया ।
नै उणां ने आसण दीनो ।

ऊपर लिखियोड़ा उदाहरणां रै वाक्यां में अेक पूरो विचार प्रगट करण सारू दोय दोय वाक्य आया है क्यांके अेक वाक्य रो अरथ दूसरा वाक्य माथै आश्रित है। जद कदेई अेक वाक्य रो पूरो विचार अेक सूं घणा वाक्यां रै मांय प्रगट होवै तो उणां रै मांय सूं हरेक वाक्य ने उपवाक्य कैवै है।

(१) मेह बरसण रै कारण सूं गांव रो गाव सुखी होगियो
(२) साच बोलणो हरेक मिनख रो कांम है।
(३) कदेई नै कदेई तो राजस्थान री कदर जरूर ई होवैला

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां रै मांय छोटा आखरां वालो सब्द - समूह से अेक पूरो विचार प्रगट नईं होवै है। पण अेक अेक भावना प्रगट होवै है। सब्दां रा अैड़ा समूह ने जिण सूं पूरी बात जांणी नईं जावै पण अेक भावना प्रगट होवै है उणां ने वाक्यांस कैवै है।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां रै मांय वाक्य, उपवाक्य नै वाक्यांस बताओ :—

जे मिनख पसु - पंखेरुआंरी बोली समजलै तो उण रो घणो काम निकलै। जीवजतु विद्या र ऊपर विद्वांना रो घणो ध्यान

है। आज कल गांमो - गांम विद्या रो प्रचार है। जिण इलम रो ग्यांन आसांनी सूं नईं होवै उण नै ढकोसलो बतावै है।

साधारण वाक्य

वाक्य रा परधांन दो भेद होवै है :—

(१) उद्देश्य नैं (२) विधेय।

(१) जिण चीज रै बावत कुछ केयो जावै है उण ने प्रगट करण वाला सब्दां नै 'उद्देश्य' कैवै है ज्यां (१) मेह वरसै है। (२) भगत भजन करै है। (३) घोड़ो दौड़े है। इण वाक्यां रै मांय 'मेह' 'भगत' ने घोड़ो उद्देस्य है क्यांके इणां रै बावत कुछ कयो गयो है।

(२) उद्देस्य रै बावत में विधान कियो जावै है उण ने प्रगट करण वाला सब्दां नै विधेय कियो जावै है। ज्यां ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां र मांय 'मेह' 'भगत' नै 'घोड़ो' इण उद्देस्यां रै बावत तरतीववार 'वरसै' है 'भजन करै है' नै 'दौड़ै है' ओ विधांन कियो गयो है इण सारू इणां ने विधेय कैवं है।

जिण वाक्य रै मांय अेक उद्देस्य नै अेक विधेय रैवै है उण ने साधारण वाक्य कैवै है। ज्यां आज आंधी वाजै है। लेखक लिखै है। गुरांसा पढावै है।

साधारण वाक्यां रै मांय अेक संग्या उद्देस्य नै अेक क्रिया विधेय होव है। जिणां ने तरतीबवार साधारण उद्देस्य नै साधारण विधेय भी कैवै है। साधारण उद्देस्य में संग्या अथवा संग्या रै समांन उपयोग आवण वाला बीजा सब्द भी होवै है ज्यां संग्या—वायरो वाजियो। छोरो आवैला। चौधरी जावै है। सरवनांमः—थे जावता हा। वे आवैला। म्हे बैठा हां।

विसेसण :— पढियोड़े रो आदर होवै है।
मरतो कांई नईं करै है।

संग्या वाक्यांस :— झूठ बोलणो पाप है। खेत रो खेत पांणी सूं भरीज गयो है।

उद्देस्य घणकरो करता कारक में रैवै है पण कदेई कदेई बीजा कारकां में भी आवै है। ज्यां

(१) प्रधांन करत्ता कारक :— छोरो दौड़े है।

(२) दरजी कपड़ा सीवै है। वांदरो रूंख माथै चढै है।

(२) अप्रधांन करत्ता कारक :— म्है छोरा ने बुलायो। चोकीदार चोर ने पकड़ियो। म्हां सूं अबार सिनांन कियो गयो है।

(३) अप्रत्यय करम कारक :—कागज लिखीजियो जावैला ओखदी बणाई गई।

(४) करण कारक :— (भाववाच्य) छोरा सूं हालीजै कोनी। म्हां सूं बोलियो नईं जावै है।

(५) संप्रदान कारक :— आप नै अैड़ो नईं करणो चाइजै। म्हनै उठै जाणो हो।

वाक्य रो साधारण उद्देस्य नै विसेसण ने मिलाय ने उण रो विस्तार कियो जावै है। उद्देस्य री संग्याओं रो अरथ नीचे लिखियोड़ा सब्दां सूं वढायो जासकै है।

(१) विसेसण सूं :— चोखो छोरो मां - बाप री कैणो मांने। भलो आदमी कदेई भूंडो व्यवहार नईं करै है।

संबंध कारक :— खाणा रो सारो सामांन भेलो कर लियो। मेला में जात्रीयां रै घणो आरांम रियो।

समान अधिकरण सब्द सू :— महाराज हनुवंतसिंहजी विलायत गया हा।

विसेसण वाक्यांस :— दिन रो थाकोड़ो मजदूर रात रा घणोई सोयो। कांम सीखियोड़ा आदमी कठै मिलै ?

साधारण विधेय रै मांय ने केवल अेक ही समापिका क्रिया रैवै है नै वा किणी भी वाच्य, अरथ, काल, पुरस, लिंग में प्रयोग हो सकै है। इण रै मांय संयुक्त क्रिया भी मिलाई जावै है

ज्यां :— चौधरी जावै है। भाटो फैंकियो जावैला। हवलै हवलै पढण लागो।

'अ' घणाकरी अकरमक क्रियाआं आपरो अरथ खुद प्रगट करै है। पण अपूरण अकरमक क्रियाआं रो अरथ पूरो करण सारू उणां रै साथै उद्देस्य पूरती लगावणी पड़ै है। उद्देस्य-पूरती रै मांय संग्या विसेसण अथवा कोई गुणवाचक सब्द आवै है। ज्यां वो बलद मारकणो है। उण रो छोरो बदमास निकलियो। वा गाय भगवांन री ही।

सकरमक क्रियाआं रो अरथ करम रै विनां पूरो नईं होवै है द्विकरम क्रियाआं में दोय करम आवै है ज्यां :— चौधरी खेत खड़ै है। वो आदमी थनै बुलावतो हो। चौधरी बलदां ने दांणो खवाड़ै है।

अपूरण सकरमक क्रियाआं रा करमवाच्य रा रूप भी अपूरण होवै है ज्यां वो आदमी हाकम बणायो गयो। अैड़ो छोरो होसियार समझियो जावै है। उण रो कांम अपूरण पायो गियो।

जद अपूरण क्रियाआं आपरो अरथ पूरो अकेली ही करै है तब वे अकेली ही विधेय होवै है। ज्यां :— देवता है। चांद देखीजै है।

करम रै मांय उद्देस्य रै समांन संग्या अथवा संग्या रै समांन उपयोग में आवण वाला सब्द आवै है। ज्यां : (संग्या) माली

साग वेचे है जाट बलद ने वेचियो। छोरो पोथी पढ़ै है।

सरवनांम :— थनैं बुलावै है। म्हे उण ने पढायो। उणां आ भेजी।

विसेसण :— गरीब नैं मती सता। उण पढता रै मारो। थे अबळाआं री मदत करो।

संग्या वाक्यांस :— वो पाठ पढणो सीखै है। म्हे आपरी इण तर री दलीलां नईं सुणुंला। उण रो घर रो घर पढियोड़ो है

गौण करम रै मांय भी ऊपर मुजब सब्द आवै है। ज्यां :— संग्या :— भगदांन सिवूदान ने हिसाब पढावै है। वेदिये राजा ने कथा सुणाई।

सरवनांम :— इण ने आ पोथी दो। म्हने किणी सलाह नईं दी।

विसेसण :— वे भूखिये ने भोजन नैं तिरसा नें पांणी देवै है।

संग्या वाक्यांस :— म्हे गांव रा गांव पढाऊं हूं।

करमवाच्य में द्विकरम क्रियाआं रो प्रधांन करम उद्देस्य हो जावै है। नैं वो करता कारक में आवै है। पण अप्रधांन करम ज्यां रो त्यां रैवै है। ज्यां : गरीब ने रोटी दी गई। म्हने आ रांमायण पढ़ाई जावेला। भैंस ने कपासिया खवाड़ियां जावै है।

अपूरण सकरमक क्रियाआं रै करत्रीवाच्य में करम रै साथै करम पूरती आवै है। ज्यां :—भगवांन रंक ने राव करै है। म्है धूड़ रो सोनो बणायो। थे थारो सब धन धूड़ में मिलाय दियो।

सजातीय अकरमक उण री धातु सूं बणियेड़ो सजातीय करम आवे है। ज्यां :— चोखी पढाई पढै है। फूटरो गणो गावै है।

उद्देस्य रै समांन ई करम पूरती रो विस्तार होवै है। अठै प्रधांन करमां रै विस्तार री सूची दी जावै है।

१. विसेसण :— थे अेक ऊठ खरीदियो। थूं बुरी बांता छोड़ दे। वो उड़तोड़ा पखी रै निसांणो लगावै है।

२. समांनाधिकरण सब्द :— म्हे म्हारा सांवल ने बुलायो क्रस्न ने मथुरा रै राजा कंस ने मारियायो।

३. संबंध-कारक :— उण आपरो कांम कर लियो। कलेक्टर ने गांव रा सरपच ने बुलायो।

४. विसेसण वाक्यांस :— म्है दौड़तोड़े घोड़े ने देखियो। सूरजमलजी मीसण री बणायोड़ी सतसई घणा आदमी चाव सूं पढै है।

उद्देस्य री संग्या रैं समान ई विधेय री क्रिया रो विस्त
है। विधेय री क्रिया क्रिया विसेसण अथवा उण रैं जैड़ा
में आवण वाळा सब्दां सूं वढाई जावै है। विधेय री क्रि
विस्तार नीचे लिखियोड़ा सब्दां सूं होवै है।

१. संग्या अथवा संग्या वाक्यांस :— 'अेक समै'
काळ पड़ियो। वो 'घणा बरस' जीवियो।

२. क्रिया विसेसण रैं जैड़ा उपयोग में आव
विसेसण सूं :— वो चोखो लिखै है। व
गावै है। म्हैं सोरो बैठो हूं।

३. विसेसण रा विसेसण सूं :— उण रो छं
चोखो है। कुत्तो भुसतोड़ो दौड़ियो।

४. पूरण अथवा अपूरण क्रिया द्योतक कृदंत :
पोथी पढतो आयो। फूंड़ - सड़ा वकती चक
म्हैं लिखतो लिखतो थाक गयो।

५. पूरब कालिक क्रिया :— थूं पढ नै सोजावै

६. तत्काळ बोधक कृदंत :— उण आवतां ही कि

७. स्वतंत्र वाक्यांस :— इतो दिन चढियो वयां नईं आयो थनैं गयां अेक वरस हो गयो।

८. क्रिया विसेसण :— अथवा क्रिया विसेसण वाक्यांस :- छोरो कठेई नै कठेई छिपियो है। गायां हाथो हाथ बिक गई।

९. संबंध – सूचक सब्द :— वो दुख रै मारियो मर गयो म्हे उणां रै उठै इज रैऊं हूं।

१०. 'करता' 'करम' नै संबंध कारकां ने छोड़ बाकी। रा कारक ज्यां :— म्हैं छुरी सूं साग बनाऊं हूं। सिनांन करवाने गयो। म्हैं म्हारो कियोड़ा पर राजी हूं

अरथ रै मुजब विधेय वरधक रा नीचे लिखिया भेद होवै है।

१. कालवाचक :— म्हैं काले गयो। वो आज आयो। उण वार वार आ कही।

२. स्थांन वाचक :— वेरा लूणी नदी रै किनारै है।

३. रीतिवाचक :— ऊंठ खौड़ावतो हालै है।

४. परिणांम वाचक :— म्हैं सात को हारियो। मन सूं विद्या बड़ी है।

नोट :— निसेधवाचक सब्दां ने (न, मत, नईं, कोनी) विधेय विस्तारक (क्रिया विसेसण) नईं मांन ने साधारण विधेय रो अेक अंग मांनणो चईजै ।

कार्यकारण वाचक :— पीणे रो पांणी लावो । दूध सूं दही बणै है ।

साधारण वाक्य के प्रथक्करण रा कुछ उदाहरण :—

१. वो मिनख हिड़कियो हो गयो ।

२. दस सेर दूध घणोई वेई ।

३. देस रो देस सुधर गयो ।

४. अठै आयां म्हने बारै वरस बीत गया ।

५. करणी जी रै मंदर री दस गज री भांय में चांरा कांनी दोय गज ऊची भींत है ।

६. ओ मांन म्हांरा किया सूं सहीजै ।

७. राठौड़ घणा दिनां सूं आपरो राज बढावता आवता हा

वाक्य	उद्देस्य			विधेय		
वाक्य	साधारण उद्देस्य	उद्देस्य वरधक	साधारण विधेय	विधेयक करम	पूरती	विधेय विस्तार
(१)	मिनख [आदमी]	वो	हो गयो	०	पागल	हिड़कियो
(२)	दूध	दस सेर	वेई	०	घणोई	०
(३)	देस रो देस	०	सुधर गयो	०	०	०
(४)	बरस	बारै	बीत गया	०	०	अठै आया म्हने [काल]
(५)	भींत	दोय गज ऊंची	है			करणीजी रै मंदर [स्थांन] चारां कांनी
(६)	मांन हांण	ओ	सहीजै	०	०	किण सूं [द्वारा]
(७)	राठौड़	०	आवताहा	०	०	आपरो राज वड़ावता [रीति] घणां दिनां सूं [काल]

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा साधारण वाक्यां रा प्रथक्करण करो।

[१] नाल रै सहारै मकान सूं नीचो उतरियो।

[२] राव बीकाजी बीकानेर ने आपरी राजधांनी बणाई।

[३] गाय रा खालड़ा सूं पगरखियां बणै है।

[४] म्हा सूं हालीजै कोनी।

[५] थारो साथी ऊठो कठै रैवै है।

[६] चावल कलदार रा दोय सेर मिलै है।

[७] म्हने औ रिपिया विद्यारथियां ने देणा है।

सयुक्त - वाक्य

(१) भगदांन तो जोधपुर सूं आयो नै प्रभु जैपर गयो परो

(२) गुरांसा अठै आवैला म्हैं उणां रै खनै पढण जाऊंला

(३) ऊगुणी दिसा में सूरज निकलियो नै तालाव पोयण खिलिया।

(४) महाराजा उम्मेदसींगजी प्रजा नै घणी चावता हा

इण कारण सूं उणां प्रजाहित रा घणा कांम किया।

ऊपर लिखियोड़ा वेवड़ा वाक्यां रै मांय दो प्रधांन -उपवाक्य

मिलियेड़ा है जे म्हे चावां तो इण वाक्यां मांय सूं हरेक वाक्य रो अलग अलग उपयोग भी करसकां हां। ज्यां :—

[१] मगदांन जोधपुर सूं आयो,
प्रभु जयपुर गयो परो।

[२] जिण वाक्यां रै मांय दोय सूं घणा प्रधान उपवाक्य मिलियोड़ा रैवै है उण नै संयुक्त वाक्य कैवै है। संयुक्त वाक्यां में उपवाक्य अेक दूसरा समानाधिकरण होवै है।

संयुक्त वाक्यां रा समानाधिकरण वाक्यां रै मांय च्यार प्रकार रो संबध पायो जावै है।

(१) संयोजक (२) विभाजक (३) विरोध - दर्सक नै (४) परिमांण बोधक।

(१) सयोजक :— प्रवाल सागरां में पैदा होवै है उठै इज छातो बांध ने फैले है। विद्या सूं बुद्धि बढै है, विचार सक्ति बढै है नै दुनिया में मान मिलै है। प्रांणी रो जीवन — आधार केवल भोजन ही नईं है पण केई और चीजां री भी जरूरत होवै है।

(२) विभाजक :— उणां न तो मकान बणायो न बेटां ने सुध रिया। कै तो आप आजो कै आपरा बेटा ने भेजजो। इणै थूं जेल सूं छूट जावैला नईं तो उठ इज मरैला।

(३) विरोध-दरसक:— कामनाओं मन में चढ जावण सूं मिनख दुराचारी नईं होवै पण उणां रै मन री कमजोरी सूं वो गिर जावै नै दुराचार करै है।

(२) हाडी रांणी (नरावंतसींगजी री रांणी) री गम दूर होवण सूं उण री मां उण ने समझावण लागी पण रांणी ने तो ध्यान नईं दियो।

परिमांण बोधक :— म्हैं घणो ई समझायो पण उण म्हारी बात नईं मांनी जिण रो फल उण ने भोगणो पड़ै है। आप सूं मिलियां म्हने घणा दिन हो गया इण सूं अठै आयो हूं। म्हने पाठ समझणो हो इण कारण सूं गुरांसा रै घरै गयो हो।

संयुक्तवाक्यां रा उपवाक्य प्रथक्करण रो उदाहरण :—

म्हैं इण साल घणी पढाई करी है इण वास्ते म्हने पास होवण री पूरी उम्मेद है पण मिनख रै भाग रो फैसलो ईस्वर रै हाथ है।

	उपवाक्य	प्रकार	संबध	संयोजक सब्द
(क)	म्हैं इण साल घणी पढाई की	प्रधांन उपवाक्य		
(ख)	इण वांस्ते म्हने पास होवण री पूरी उम्मेद है	प्रधांन उपवाक्य	(क) रो समानाधिकरण परिमांणबोधक	इण वांस्ते
(ग)	पण मिनखैं भागरो फैसलो ईस्वर रैं हाथ है	प्रधांन उपवाक्य	(ख) रो समानाधिकरण विरोध दरसक	पण

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा संयुक्त वाक्यां रा उपवाक्य प्रथक्करण करोः-

[१] राम, लछमण नै सीता राजा दसरथ री आज्ञा सूं बनवास गया ।

[२] मोवन तो पढ रयो है पण डूंगर खेल रयो है ।

[३] म्हैं काले उणां ने देखिया हा पण आज नईं देखिया

[४] गुरांसा कयो हो कै थनै अंक (पोथी) देवूं पण उणां नईं दी।

[५] लूणी नदी नाग पाड़ सूं निकल कच्छ री खाड़ी में गिरै है।

[६] इण साल मगदांन पढाई घणी जोर सूं कीवी सो पास हो गयो।

[७] म्हैं 'घणी' दूर 'वाट जोई' पण न रांम आयो नै न मोवन।

[८] म्हने रोही में घणी तिरस लागी इण कारण सूं पांणी सारू अठी उठी फिरतो रयो पण पीवण नै पांणी नईं मिलियो।

[९] रांमचंदरजी री आग्या सूं अंगद रांवण री सभा में गयो नै सीता ने पाछी देवण सारू रांवण ने समझायो पण वो नईं मानियो।

मिश्र वाक्य

(१) राम कयो कै म्हैं बाप रो हुकम नईं तोड़ सकूं हूं।

(२) वो जका सुणै उण ने याद कर लेवै है।

(३) जद दिन ऊगो तद म्हे बारै गया।

(४) जद थे आवोला तद देऊंला।

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां रै मांय दोय कै दोय सूं घणा उपवाक्य मिलियोड़ा है जिणां में छोटा आखरां वाला उपवाक्य प्रधांन उपवाक्य नै बाकी रा आश्रित उपवाक्य है। जिण वाक्य रै मांय अेक प्रधांन उपवाक्य नै अेक कै अेक सूं घणा आश्रित उपवाक्य रैवै है उण ने मिश्रवाक्य कैवै है।

मिश्रवाक्य रा आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार रा होवै है।

(१) संग्या उपवाक्य। (२) विसेसण उपवाक्य नै

(३) क्रिया विसेसण उपवाक्य।

प्रधांन वाक्य री किणी संग्या अथवा सरवनांम रै वदलै जका उपवाक्य आवै है उण ने सग्या उपवाक्य कैवै है। ज्यां :— रांम कयो कै म्हैं वाप रो हुकम नहीं तोड़ सकूं। इण वाक्य रै मांय हुकम नंई तोड़ सकूं। आश्रित उपवाक्य प्रधांन उपवाक्य रे म्हैं सरवनांम रै वदलै आयो है।

प्रधांन उपवाक्य री किणी संग्या अथवा सरवनांम री विसेसता वातावरण वालो विसेसण उपवाक्य कैवीजै है। ज्यां— वो जका सुणै उण ने याद कर लेवै है। इण वाक्य रै मांय जका सुणै ओ आश्रित उपवाक्य प्रधांन उपवाक्य रै उण सरवनांम री विसेसता वतलावै है।

क्रिया विसेसण उपवाक्य प्रधांन उपवाक्य री क्रिया री विसेसता वतलावै है। ज्यां जद दिन ऊगो तद म्हे वारै गया। वाक्य रै मांय जद दिन उगो क्रिया विसेसण उपवाक्य प्रधान

उपवाक्य री गया क्रिया री विसेसता बतलावै है।

मिश्रवाक्य रै मांय दोय-अथवा घणा समानाधिकरण आश्रित उपवाक्य भी आसकै है। ज्यां :— म्हे चावां हां के छोरा पढ़ै नै सुखी रैवै। इण मिश्र-वाक्य में चावां हां प्रधान उपवाक्य है नै छोरा पढ़ै नै सुखी रैवै अै दोय आश्रित उपवाक्य है। अै दोनोई उपवाक्य चावां हां क्रिया रा करम है। इण सारू दोनोई समानाधिकरण संग्या उपवाक्य है।

मिश्रवाक्य रै उपवाक्य प्रथक्करण रो उदाहरण :—

जके मिनख हरिभक्त हुआ है उणां रै जीवण सूं पतो चालै है कै वे ईस्वर माथै अटूट श्रद्धा राखता हा।

	उपवाक्य	प्रकार	संबंध	संयोजक सब्द
(क)	जके मिनख हरि भक्त हुआ है	विसेसण उपवाक्य	(ख) उपवाक्य में उणां रै सरवनाम री विसेसता बतावै है।	
(ख)	उणां रै जीवण सूं पतो लागै है	प्रधान उपवाक्य		
(ग)	कै वे ईस्वर माथै अटूट श्रद्धा राखता हा	संग्या उपवाक्य	(ख) उपवाक्य री "पतो" संग्या रो समानाधिकरण	कै (कि

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा मिश्र वाक्यां रा उपवाक्य प्रथक्करण करो :—

[१] जिण जागा री हवा गंदी है उण जागा नईं रहणो चाईजै ।

[२] जे थनै भूख नईं है तो मती जीम ।

[३] बारठ ईस्वरदासजी ईस्वर रा परमभक्त हा आ बात लोक चावी है ।

[४] राजा जसवंतसींग कयो कै दुरगदास मारवाड़ माथै छाया करैला ।

[५] भामासाह कयो कै जठातक आंपे लोग बादसाह रो भीतरी हाल नईं जांण सकां तठ'तक जीतणो मुसकिल है ।

[६] क्रस्न नै माथै ऊपर लियोड़ा नदी रै तट माथै वासुदेवजी सोचण लागो कै लारै तो सिंग करजै है नै आगै जमुनाजी वैवे है हमें कांई करूं ।

[७] वो घणो विद्वान हो पण उण नै चिनियोक ई घमंड नईं हो ।

मिश्रित वाक्य

[१] जिके मिनख धर्म-पंचायत में नईं आवता हा उणां ने अधरमी समझता हा नै उणां ने धरम री राय सूं सजा भी दी जावती ही।

[२] जद वे म्हने मिलै कै उणां रो कागद आवै तो म्हूं उणां रै घरै जाऊं पण उठै घणो नईं टेरूं।

[३] मिनखां रै मूरखपणै ने मिटावण सारू राज रात री पौसालां खोली नै उणां ने इणतरै सूं पढावै है के वै विद्वान वणजावै है।

ऊपर लिखियोड़ा वाक्यां में दोय दोय प्रधांन उपवाक्य नै उणां रै साथै अेक कै अेक सूं घणा उपवाक्य आवै है इण तरै रा वाक्यां ने मिश्रित वाक्य कैवै है। औ वाक्य मिश्र संयुक्त भी कैवीजै है। क्यूंकै इण मे दोनोंई तरै रा वाक्य मिलै है। मिश्रित वाक्य अेक सूं घणां प्रधांन उपवाक्यों नै अेक कै अेक सूं घणा आश्रित वाक्यों रै मेल सूं वणै।

अभ्यास

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां रा भेद कारण सहित वताओ :—

[१] ईस्वरदासजी वारठ रै बाप रो नांम सूजोजी हो।

[२] जद म्हूं धनवांन होजाऊंला तद कांई मैं सुखी नईं होऊंला।

[३] घणकर वे सोचिया करता हा कै कोई अैड़ो उपाय

नईं है जिण सूं मिनख हमेसा रा दुख सूं छूट जावै है।

[४] मेनत करण सूं खाणो हजम चोखो होवै न भूख आछी लागै नै नींद भी घणी आवै है।

[५] जे अै लोग अैड़ी मेनत नईं करता नै भाग रो भरोसो राखता तो आज रा दिन कठै देखता।

तेवीसमां अध्याय

विराम चिह्न

वाक्यां रै मांय उण रै अरथ रै खुलासे वास्ते बोलण रै समय कठेई कठेई ठेराव अथवा रुकावट री जरूरत पड़ै है। अैड़ी ठराव री जागा माथै जके चिह्न लगाया जावै है उणां ने विराम-चिह्न कैवै है। इण प्रकार रा विराम चिह्न राजस्थांनी भाषा र मांय पुरांणे जमांने सूं दोय प्रकार रा पाया जावै है। जिणां में प्रथम विराम चिह्न ने अरध विरांम चिह्न कैवै है वो अेक खड़ी सीधी लकीर (।) सूं बणाया जावै है। इणी प्रकार री दोय खड़ी सीधी लकीर (।।) लगाई जावैं है उण ने पूरण विराम - चिह्न कैवै है। पण आजकल भी राजस्थांनी में नीचे लिखियोड़ा विरांम चिह्नां रो प्रयोग कियो जावैं है।

(१) अल्प विरांम ,

(२)	अरध विरांम	[;]
(३)	पूरण विराम	[।]
(४)	प्रश्न बोधन चिह्न	[?]
(५)	विस्मयादि बोधक	[!]
(६)	उद्धरण	[" "]
(७)	अपूर्ण विरांम	[:]
(८)	कोष्ठ	[( )]
(९)	निरदेसक	[:—]
(१०)	[विभाजन]	[—] संयोजक

(१) अल्पविरांम (,)

इण चिह्न ने अंग्रेजी में कोमा (coma) नै हिंदी रै मांय अल्प विरांम कैवै है इण रो उपयोग उण समय कियो जावै है जद अेक ई प्रकार रा केई सब्दां अथवा वाक्यां रो प्रयोग अेक ही अवस्था में होवै है इण हालत में अन्त रा दोय सब्दां रै बीच में न रो प्रयोग होवै है। ज्यां :—

(१) लिछमण, सोवन, राधा नै मोवन आया।

(२) औ छोरो चंचल, बदमास नै चोर है।

(२) अरध विरांम (;)

इण चिह्न ने अंग्रेजी में सेमीकोलन नै हिंदी मे अरध विरांम कैवै है। इण रो प्रयोग भी आज कल राजस्थांनी में होवण लागो

है । इण रो उपयोग घणकरो सुतंतर वाक्यां ने अलग करण सारू होवै है ज्यां :—

(१) उण पढियो है ; पण उण ने ठीक ठीक याद कोयनी

(३) पूरण विरांम (।)

इण रो प्रयोग वाक्य रै अंत में घणो जरूरी ई समझने-कियो जावै है । ज्यां :— वो स्कूल गयो ।

(४) प्रस्न बोधक चिह्न (?)

इण रो उपयोग प्रस्नवाचक वाक्य रै अंत में पूरणविराम री जागा कियो जावै है । ज्यां :— थे सीधरू जावो हो ?

(५) विस्मयादि बोधक (!)

इण रो उपयोग विस्मयादिबोधक वाक्य रै अंत में ने मनोविकार सूचक सब्दां रै अंत में लगायो जावै है । ज्यां :—

(१) हे राजन् ! राज रो जको हुकम होवै सो म्हे करां ।

(२) रांम ! रांम ! उण छोरे बापड़े गरीब पंखेरू ने मार नांखियो ।

(३) वाह ! चोखो कांम कियो ।

(६) उद्धरण (" ")

इण चिह्न ने उलटो विरांम भी कैवै है इण रो प्रयोग किणी री कयोड़ी बात रै याद नै अंत में लगायो जावै है ज्यां रांम कयो,

" हूं जोधपुर जाऊंला "।

(७) कोस्ठ ()

इण रो प्रयोग किणी पद अथवा वाक्यांस रो बोध करणो होवै अथवा इण रै अलावा वाक्य रै प्रयोग री जरूरत होवै तो इण दोनां ( ) [ ] रूपां में प्रयोग कियो जावै है। ज्यां :-

(१) आज काल प्रधांन मंतरी (जयनारायण व्यास) दिल्ली है।

(८) निरदेसक (:—)

इण ने अंग्रेजी मे कोलन अथवा डैस कैवै है इण रो प्रयोग वाक्य रै आगे केईबातां क्रम सूं लिखी जावै है तद कियो जावै है। ज्यां :— नीचे लिखियोड़ा सब्दां री परिभासा लिखो :—

संग्या , सरवनांम , क्रिया।

(९) [विभाजन] (—) संयोजक

इण ने अंग्रेजी में हाइफन कैवै है नै ससक्रत में संयोजक कैवै है। ओ समासवाला सब्दां रै बीच में घणकरो आया करै है ज्यां — रात - दिन , दिन – रात , छोटा – छोटा , रवि – कुल कलंक।

नीचे लिखियोड़ा वाक्यां रै मांय ठीक ठीक जागा बिरांमां रो प्रयोग करो :—

समै रो सद उपयोग करण वाला मिनख जीव मातर रै वास्ते घणाई उपगार कर गया है। मातमा नै भगवांनां रो ओइज उपदेस है क्यांके प्रधांन गिरंथकार, आवस्कार करण वाला विग्यांनवेता पिंडत, अध्यापक, देस हितैखी, परोपगारी, धर्म रा मांनण वाला सीधा सांत नै चरित्रवांन आदि महानुभाव इण इज तरै रा हुया है नै हुवै है नै अै इज धरती रा मंडण है जे अै जनम नई लेता तो धरती अैड़ी सुख देवण वाली होती कदेई नई बस इयां ने इज पढिया लिखिया मिनख धन्यवाद देवै है।
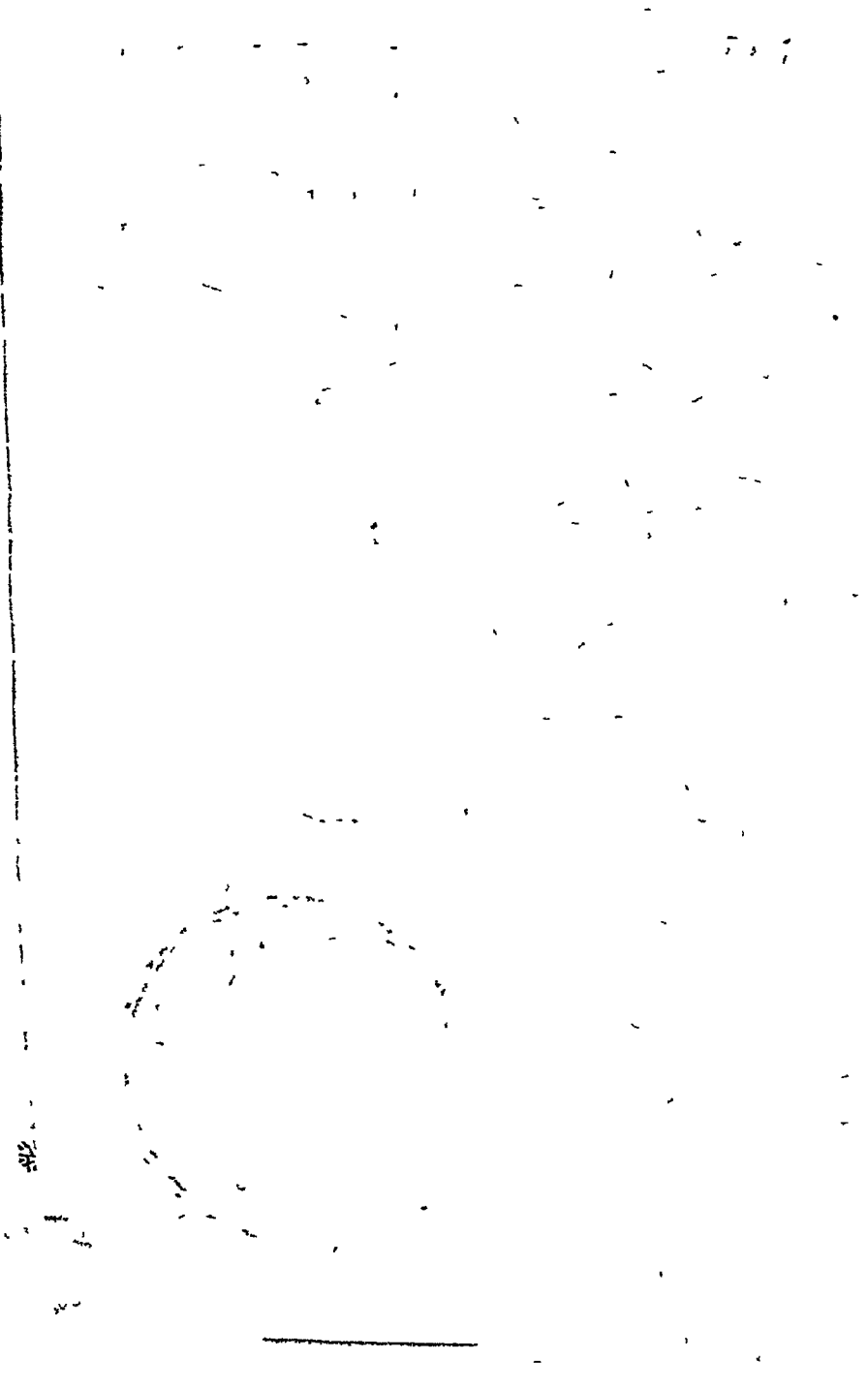
समाप्त

सुद्धि – पत्र

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
४	वेकलू	वेकल़
४	छंणा बीणा	छांणा बीणा
४	विन्यासा	विन्यास
४	डौल	डौल़
५	किंणो	किणो
५	अः	आं
५	ख	(ख)
६	उणार	उणारै
६	मूल	मूल़
७	अै अै	अे अै
७	सवर्ण	(सवर्ण)
७	औ	नै
७	असवर्ण	(असवर्ण)
७	बिलटी	ॿिलटी
८	अेड़	अैड़
८	हरेक	हरेक
८	कक्कां	कक्का
८	अैक	अेक
९	।	र
९	वैला	वेल़ा
९	लाग	लागै
९	घांष	घोष
११	सिलायो	ॿिसल़ायो

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
११	आव	जावै
११	न	नै
११	होव	होवै
१३	तवरग	कवरग
१३	सवरग	तवरग
१४	दाय	दोय
१४	अगल	अगला
१४	ज्य	ज्यां :—
१४	म	भ
१५	।	?
१५	भा	भी
१५	सरवनाम	सरवनांम
१६	वला	हैला
१६	मावबाचक	भाववाचक
२०	सू	सूं
२३	समा	सभा
२३	माईपै	भाईपै
२३	धारयां	धारियां
२३	पढै	पढ़ै
२४	नाखै	नांखै
२४	पुरसवाचा	पुरसवाची
२५	बल	बल़
२५	मौलप	भौल़प
२५	व्यालू	व्याल़ू
२५	माडू	झाड़ू

पृष्ठ संख्या	अशुद्धि	शुद्धि
२६	रो	रा
२६	कोनर	घोनर
२६	घांनो	घोनो
२६	घांनी	घोनी
२६	मां	मा
२७	तदमव	तद्भव
२६	।वद्वांम	विद्वांम
३०	तदमव	तदभव
३०	मां	मा
३१	सालो	सालो
३१	अव्यय	प्रत्यय
३२	मुसलमान	मुसलमांन
३२	मुसलमाणी	मुसलमांनणी
३२	रींछणी	रींछड़ी
३२	"	"
३२	मीलणी	भीलणी
३२	अप्रत्ययवाची	अपत्यवाची
३३	वृद्ध	वृऊ
३४	।मनखां	मिनखां
३४	बलद	बलध
३४	हुई	हुवा।
३५	जावेला	जावैला
३६	वाकारांत	आंकारांत
३७	छारा	छोरा
३७	माथ	माथै

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
३८	गुणा	गुणां
३८	चतुरथ	चतुरथी
३६	परे	पर
३६	वल	चल
३६	कारण	करण
३६	होव	होवै
४०	स	सं
४०	माथा	माथै
४१	—	है
४१	वाला	चाला
४३	विकारो	विकारी
४३	चरुवा	चरुवां
४४	आकारांत	अकारांत
४५	"	"
४६	वाता	वातां
४८	रां	रा
५६	रे	रै
"	"	"
५०	माथे	माथै
५२	उकारांत	ऊकारांत
५६	ख	खे
६१	रावलां	रावलै
६४	रे	रै
"	"	"
"	"	"

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
६४	बंबोधन	संबोधन
६५	गाभा	गाभां
६६	पौवा	पौवां
६७	हंटाघ	सबंध
६७	अधिरण	अधिकरण
६७	सबध-।	संबोधन
६७	आऊला	आऊला
६८	आखर	आखरां
६९	नै	—
६९	इण	इणो
६९	हि	ही
६९	बोलणवालो	बोलणवाली
६९	रे	रै
"	"	"
६९	वचन	एक वचन
७०	हजा	हजूर
७०	अ	औ
७०	अड़	औड़ा
७०	नि। ।चैवाची	निसचैवाची
७०	प्राणी	प्रांणी
७०	आसामी	आसांमी
७१	गज	राज
७१	होव	होवै
७१	कई	कोई
७१	मधम	मध्यम

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
७५	काना	कीनी
७५	समंद वाची	सबंधवाची
७५	करे	करै
७५	केव	कैवै
७५	इण	इणां
७६	होवा	होया
७६	वदल	वादल
७७	री	की,
७७	की	कीं
७७	मांनो	मांनै
७७	अपां	आंपां
७८	व	वे।
८०	अमीणो	+
८०	+	अमीणा , अमीणो
८२	+	तमीणा
८६	ब सू	वै सूं
८८	सं	सूं
८८	न	नै
९०	आंटा	आंटै
९५	न	नै
९५	ज	जै
९७	वरता	करता
१०२	स	सूं
९९	कैस	कैसूं
९९	संदांन	संप्रदांन

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
६६	कैरो	कैरै (साॡ)
६६	कैर	कैरो
१०५	ऊ	ऊँ
१०६	दोनूं	दोनां
१०६	सथे	साथै
१०६	धलो	धौला
१०६	मौलौ	भौलौ
१०६	खीस	खमीस
११०	+	नै
१११	पैलड़ो	×
१११	×	चाराई
१११	सेग	सैंग
१११	फल	फल़
११२	जाव	जावै
११२	ज्यं :-	ज्यां :—
११३	आयगिया	आय गया
११३	सरोई	सारोई
११३	लेगियो	ले गयो
११३	घणा	घणी
११३	नं	नईं
११३	रिमांण	परिमांण
११४	× सा ,	सी , सो
११४	रा	जरा
११५	संवतवाची	संकेतवाची
११५	र	रै

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
११६	काई	कोई
११६	आली	वाली
११६	अनस्चय	अनिस्चय
११६	ी	री
११६	कोई	को
११६	×	हूँ मोवन हलफिया बयांन करूं हूं। छोरो आप तौ नईं आयो।
११६	न	नै
,,	,,	रै
११८	र	कितराई
११८	वितराई	होवै
११८	होव	भी
११८	ई	जावैला
११६	जावेला	जावै
११६	जावे	केवल
११६	केवल	भी
१२०	ई	भांजण
१२०	मांणज	विभक्तियों
१२१	विभग्तिय	टोपी
१२१	टापी	रूंख
१२१	रुख	माथै
१२१	माथे	रूंखां
१२१	रूखां	

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
१२१	विभग्ति	विभक्ति
१२१	होवेला	होवेला
१२१	पत्तिय	पत्तियां
१२२	लो	लोगां
१२२	विभग्ति	विभक्ति
१२२	विसस्य	विसेस्य
१२२	साथे	साथै
१२२	का क	कारक
१२३	ा	रा
१२३	र	रै
१२३	विभग्ति	विभक्ति
१२३	र	रै
१२३	जाव	जावै
१२३	ज्यूं	ज्यां —
१२३	विभग्ति	विभक्ति
१२३	विभग्ति	विभक्ति
१२३	सूं	×
१२३	जावे	जावै
१२४	उण न	उणनै
१२४	मलेरो	भलेरो
१२४	माटे	मोटै
१२५	ग्या	गया
१२६	गियो	गयो
१२६	नहीं	नईं
१२६	ई	भी

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
१२६	धान	धांन
१२६	बोले	बोलै
१२६	केवै	कैवै
१२६	नहीं	नईं
१२७	रमण	" रमणो "
१२७	खाण	" खाणो "
१२७	हो	होवे
१२७	माथ	माथै
१२७	मैं	म्हैं
१२७	मास्टर	मासटर
१२७	सुणाता हा	सुणातो हौ
१२७	असुद्धि	सुद्धि
१२८	सिवाय	सवाय
१२८	माई	भाई
१२८	द्विकम	द्विकरम
१२८	री	कै
१२८	ने	नै
१२६	ऊमय विध	ऊभय विध
१२६	वणाया	बणाया
१३०	मानणो	मांनणो
	वणाण	बणाणो
	जाणणो	जांणणो
	मानै है	मांनै है
१३०	रे	रै
१३०	सजातीव	सजातीय

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	शुद्धि
१३२	बापकार	बापूका
१३३	धोलीज	धोलीज
	र	रै
१३३	रेवै	रैवै
	हुवै	होवै
१३३	होवै	होवै
१३३	उदेस	उद्देस्य
१३४	विभगती	विभक्त
१३४	सिलावट	सिलवट
१३४	पकड़ाणो	पकड़ांणो
१३५	उदेस	उद्देस्य
१३५	कोयनो	कोयनी
१३७	माव वाच्य	भाव वाच्य
१३८	विणा	विनां
१३९	वक्या	वाक्य
१३९	सकेत	संकेत
१४०	छो े	छोरो
१४३	पढगा	पढेगा
१४४	म्हे हुंत	म्हे हंती
१४५	म्हे वांला	म्हे होवांला
१४६	भविसत काल	भूत काल
१५१	नाकर	नोकर
१५२	र	रै
१५६	है	होवै है।
१५६	सामान्य वरतमांन काल	

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
१५६	(उत्तम पुरुख)	हूं हां
१६२	बताओ	बतायो
१६३	अैक	अैक
१६४	ई	भी
१६५	ई	भी
१६५	वाचक	वाच्य
१६६	ला	माल
१६६	लकीरवाला	बारीक आखरवाला
१६६	ईज	इज
१६७	लकीर वाला	बारीक आखरवाला
१६८	हुग्या	होगया
१६८	ग्या	गया
१७०	लकरवाला	बारीक आखरवाला
१७२	आ	आं
१५२	प्रतख	प्रतत्त
१५५	अव्यय	प्रत्यय
१८८	मध्यम पुरख ह	है
१८८	अन्य पुरख (छ)	(छै)
१८६	अन्य पुरख (छ)	(छै)
१६३	देखौ	देखै
१६४	होवौला	होवौगा
१६६	हौत	होत
१६६	जात	जातै
१६७	तो	तौ
१६७	देमियां	देखिया

पृष्ठ संख्या	अशुद्धि	शुद्धि
१६७	येखीज़तो	देखीजतो
२०२	हुवां	होवां
२०२	होयां	होवां
२०२	सध्यम	मध्यम
२०५	यो	गयो
२०५	हुयां	हुस्यां
२१२	देख्यो	देख्यै
२१३	देखीजैखा	देखीजैला
२१४	जाइस	जाईस
२१४	जास्य	जास्यै
२१५	देखीजैगो	तेखीजैगा
२२६	उडडणो	उडवाड़णो
२२६	हाखणो	हालणो
२३०	बोलावड़णो	बोलावाड़णो
२३०	ओढावड़णो	ओढावाड़णो
२३०	सुवावणो	सुवाड़णो
२३०	नवाणो	नवाड़णो
२३१	कैवावणो	कैववावणो
२३१	नीचे लिखियोड़ा	ऊपर लिखियोड़ा
२३६	वूलो गियो	व.लो गयो
२४१	खेणो	रैवणो
२४२	लेऊं	ले लेऊं
२४२	देऊं	दे देऊं
२४३	जिकि	जिकी
२४४	सैंसकिरत	संसक्रत

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
२४८	सायत	सायत
२५६	अेम सूं	अेथ सूं
२५७	कडण	कठण
२६१	नांम	गांम
२६२	गाये	गये
२६२	अगै	आगै
२६३	ीक	दीठ
२६५	रै	री
२६७	मलै	भलै
२६७	सड़के	सरड़के
२६७	मंचूर	मजूर
२६०	परंत	परन्तु
२६६	भव	भाव
२६६	तिरस्कारक्रोध	तिरस्कार , क्रोध
२७०	ककेई	कदेई
२७०	ज्यूं	ज्यां
२७१	प.डु पुत्र	पांडुपुतर
२७२	राड.ड़	राठौड़
२७२	प्राढण	ओढण
२७२	गावौ	गावौ
२७२	जिणी	किणी
२७२	वण	रणो
२७२	थन – दौलस	धन – दौलत
२७२	विवाय	सिवाय
२७३	गावण	लगावण

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
२७३	आदि	प्रादि
२७३	(उपासी)	(उपसर्ग)
२७३	प्रम्रत	प्र , प्रत
२७३	ाघे	अध
२७३	थैला	पैला
२७३	मांनिस	मांनिया
२७३	निचे	नीचे
२७४	अनु ण	अनुकरण
२७४	रक्राव	खराब
२७५	उपसरय	उपसरग
२७४	अम	अभ
२७५	ख	खराव
२७६	कापुस	कापुरस
२७६	नि ाचौ	निपौचौ
२७६	परछा	परछाया
२७७	द्दश्य	अरथ
२७८	पाछौ	आछौ
२७८	सैंदखा	सैंदरूप
२७६	उखु	उरदु
२८०	चटोर	चटोरो
२८२	संतणो	संताप
२८२	ठगण	ठगांण
२८३	रड़वातो	रड़बौतौ
२८६	वेदां	वेदा
२८६	कौल	कौलै

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
२८७	कबाड़	कबाड़ै
२८८	झगड़ाइल	झगड़ायल
२९०	पौरकी	पौरको
२९०	कूचड़ो	कूड़चौ
२९०	लू	ल॒
२९०	वरसालू	वरसाल॒
२९१	उनालू	उनाल॒
२९१	भूरांणी	भूर – वांणी
२९२	छबोलियो	छावोलियो
२९३	उड़	ईड़
२९३	अ ड़	ड़
२९३	ऊॅठण	ऊंठड़
२९३	भैंसण	भैंसड़
२९४	माखर	भाखर
२९५	जथागती	जथासगतो
२९५	कैवीजै है	कैवै है ।
२९५	सैंसक्रत	संसक्रत
२९५	समाज	समास
२९५	विभांग्त	विभक्ति
२९५	बन – भाई	वैन – भाई
२९५	देसनिनालो	देसनिकालो
२९६	ऊदरला	ऊपरला
२९६	अखवाड़ो	अठवाड़ो
२९६	रा	रौ
२९७	न ारतन	नवरतन

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
२६७	ऊ रला	ऊपरला
२६७	र	रै
२६८	रो	रा
२६६	पूछतांछ	पूछताछ
२६६	निरथ	निरथक
३००	ासड़ै पाहड़ै	आहड़ै पाहड़ै
३००	र	रै
३०१	जठै कठ	जठै कठै
३०१	जावता जावता	जावतां जावतां
३०१	हुगिया	होगया
३०२	सग्या	संग्या
३०२	पदनिरधेस	पदनिरदेस
३०२	विसस्य	विसेस्य
३०३	अव्य	अव्यय
३०३	चइजै	चाइजै
३०३	संबंधधान	संबंधवान
३०४	पुरांण	पुरांणां
३०४	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
३०५	ओटी	मोटी
३०५	करत्रावाच्य	करत्रीवाच्य
३०७	वक्यांस	वाक्यांस
३०७	र	रै
३०८	दो	दोय
३०८	किसो	कयो
३०६	माथ	माथै

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
३१०	री	रौ
३१२	सग्या	संग्या
३१२	पठ	पाठ
३१२	तर	तरै
३१२	कस्ता	करता
३१३	वरम	करम
३१३	गणो	गाणो
३१३	म्ह	म्हैं
३१३	मारियायो	मारियो
३१४	अ कसम	अ ऽसमै
३१४	छोर	छोरो
३१४	भद्रा	भदरा
३१५	को	कोस
३१६	चइजै	चाइजै
३१६	णाधारण	साधारण
३१६	वे ई	ह्वे ई ।
३१७	विधेय	विधेयपूरक
३१७	विस्तार	विस्तारक
३१७	वे ई	ह्वे ई
३२०	उणा	उण
३२३	उ वाक्य	उपवाक्य
३२३	जका	जको
	सग्या	संग्या
३२३	किया	क्रिया
३२४	र	रै

पृष्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
३२५	रहवो	रहणो
३२५	ईस्वरदासजी	ईसरदास
३२५	माथ	माथै
३२५	मुलकिल	मुसकिल
३२६	ईस्वरदासजी	ईसरदासज
३२६	धणकर	धणकरो
३२७	र	रै
३२८	बोधन	बोधक
३२६	सीधरू	सिधारू
३२६	५	रै
,,	५	रै
३२६	उद्धहरण	उद्धरण

पृस्ठ संख्या	असुद्धि	सुद्धि
१४०	×	पढी हंती
[illegible]	×	जावैगा
१५५	×	स्तेती
१६६	×	(जातौ)
[illegible]	संदिग्ध	संभाव्य
२२३	×	आखर
२२६	×	पड़वाड़णो
२२७	×	फोड़वावणो
२२६	×	उठाणो
२२६	×	द्वितीय प्रेरणारथक
२५७	×	चोर पकड़ियौ जातौ हौ
१७४	×	अधिक
२७५	×	औ
२७५	ओप	×
२७७	×	वेईमांन, वेकारज बैजोड़, वेहद, वैसुरौ
२७७	×	विदरूप
२८०	×	सूं
२८०	×	धातु रै आगै आव प्रत्यय जोड़ण सूं खटणो सूं खटाव, वटणे सूं वटाव।